

هَذَا بَيَانٌ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ

(सूरह "आलि इमरान": 138)



कुरान के उपदेश

(सूरह "अल-अलक" से सूरह "अल-नास" तक
आखरी १९ सूरतों की मुख्तसर तफ़सीर)

डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी संभली
Dr. Mohammad Najeeb Qasmi Sambhali

هَذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ

(सूरह आले इमराम १३८)

कुरान के उपदेश

(सूरत अल-अलक़ से सूरत अल-नास तक
अंतिम १९ सूरतों की संक्षिप्त तफ़सीर - वर्णन)

डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी संभली

Dr. Mohammad Najeeb Qasmi Sambhali

www.najeebqasmi.com

© All rights reserved by the author.
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं।

पुस्तक का नाम: कुरान के उपदेश

(सूरत अल-अलक़ से सूरत अल-नास तक अंतिम १९ सूरतों की संक्षिप्त तफ़सीर)

पुस्तक के लेखक: डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी संभली

पहला हिंदी संस्करण: मार्च २०१८

संख्या: ५०००

Published by:
Discover Publishing Ltd, Dublin, Ireland
ISBN: 9780995788506

Printed at Nomani Printing Press, Lucknow, India
First Edition (5000 copies)

एक अहले खैर की मदद से पुस्तक का पहला संस्करण (५००० संख्या) फ्री बाँटने के लिए प्रकाशित किया जा रहा है। अल्लाह उनके इस खैर के काम को कुबूल फरमाकर उनके लिए सदक़ए जरियाह बनाये। आमीन

<http://www.najeebqasmi.com/>
[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)
[Najeeb Qasmi - YouTube](#)
[Whatsapp: 00966508237446](#)

Address for Gratis Distribution मुफ़्त मिलने का पता:
Dr. Muhammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, संभल, यूपी, भारत (२४४३०२)

विषय-सूची

क्र.	विषय	पेज नं
१	प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब कासमी संभली	८
२	मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल कसिम नोमानी - मोहतमिम (कुलपति) दारुल उलूम देवबंद	११
३	मुखबंध: हज़रत मौलाना मोहम्मद ज़करिय्या संभली - शैख-उल-हदीस नदवातुल उलैमा, लखनऊ	१३
४	मुखबंध: प्रोफेसर डाक्टर शफीक अहमद खां नदवी - पूर्व अध्यक्ष अरबी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली	१५
५	प्रारंभिक अध्याय	१८
६	❖ कुरान करीम क्या है?	१९
७	❖ वही ﷻ क्या है?	१९
८	❖ वही नाज़िल होने (उतरने) के कुछ तरीके (प्रकार)	२०
९	❖ कुरान करीम के नाज़िल होने का संक्षिप्त इतिहास	२१
१०	❖ कुरान करीम के थोड़-थोड़ा नाज़िल होने का मक़सद	२२
११	❖ कुरान करीम की हिफ़ज़त (सुरक्षा)	२४
१२	❖ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) की खिलाफ़त के काल में कुरान की हिफ़ज़त	२५
१३	❖ हज़रत उसमान गनी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की खिलाफ़त के काल में कुरान की हिफ़ज़त	२६
१४	❖ कुरान करीम में अहक़ाम (आदेशों) की तफ़सील (विवरण) ज़िक़्र नहीं है	२८
१५	❖ कुरान करीम से संबंधित जानकारी	३२
१६	❖ कुरान करीम पढ़ने के फ़ज़ाइल	३३

क्र.	विषय	पेज नं
१७	❖ कुरान करीम को समझ कर पढ़ना	३३
१८	❖ कुरान करीम के मज़ामीन (कुरान में क्या है?)	३५
१९	❖ कुरान करीम और हम	३७
२०	सूरह अल-अलक (इकरा) की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	३९
२१	सबसे पहली वही	४०
२२	सूरह अल-कद्र की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	४९
२३	कुरान करीम का शबे कद्र में नाज़िल होना	५०
२४	सूरह अलबय्यिना की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	५४
२५	मुशरिकीन-ए-मक्का और अहल-ए-किताब कौन थे?	५५
२६	सूरह अल-ज़लज़लाह की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	६४
२७	एक दिन ज़मीन अपने अन्दर के सभी इंसानों और खज़ानों को बाहर निकाल देगी	६५
२८	एक दिन इंसानों के अच्छे बुरे सभी कार्यों को ज़मीन बयान कर देगी	६७
२९	ज़लज़ले (भूकंप) क्यूँ आते हैं?	७०
३०	सूरह अल-आदियात की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	७३
३१	इन्सान अपने रब (अल्लाह) का बड़ा ना शुक्रा है	७४
३२	अल्लाह तआला का विभिन्न चीज़ों की कसम खाना	७६
३३	सूरह अल-कारिया की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	८२
३४	एक सूर पूरी काएनात (दुनिया) को खत्म कर देगा	८३
३५	क़यामत की होलनाकी (भयानकता)	८४
३६	हज़रत इसाफ़ील का सूर फूंकना	८७

क्र.	विषय	पेज नं
३७	सूरह अत्तकासुर की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	९३
३८	क्या मरने के बाद कोई दूसरी ज़िन्दगी है?	९४
३९	क्रयामत कब आएगी?	९५
४०	क्या कब्र में अज़ाब होता है?	९६
४१	क़ब्रिस्तान की ज़ियारत	९९
४२	औरतें क़ब्रिस्तान क्यों नहीं जा सकतीं?	९९
४३	क्या मुर्दे सुनते भी हैं?	१००
४४	सूरह अल-अस्र की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	१०४
४५	दुनिया के नूकसान से बचने और बड़ा लाभ प्राप्त करने का कुरानी कानून	१०५
४६	सूरह अलहुमज़ा की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	११३
४७	चुगली, दोष लगाना, ताना मारना और दूसरे का माल हड़पना जहन्नम में ले जाने वाले गुनाह (पाप) हैं	११४
४८	गीबत क्या है?	११५
४९	क्या माल का जमा करना गुनाह (पाप) है?	११६
५०	जहन्नम क्या है?	११८
५१	सूरतुल फ़ील की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	१२२
५२	ख़ाना काबा से संबंधित ग़लत नीयत रखने वाले का अन्ज़ाम वही होगा जो अब्रहा के साथ हुआ था	१२३
५३	असहाबुल फ़ील (हाथी वालों) का वाक़िया (कहानी)	१२३
५४	काबा शरीफ़ का निर्माण	१२९
५५	सूरह कुरैश की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	१३१
५६	अल्लाह की इबादत करने वालों के लिए अच्छी रोज़ी, अमन और सुकून की ज़िन्दगी का वादा	१३२

क्र.	विषय	पेज नं
५७	सूरह अलमाऊन की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	१३५
५८	अल्लाह के हुक्क और बन्दों के हुक्क की अदायगी की खास ताकीद	१३६
५९	काफ़िर, मुनाफ़िक, मुशरिक, फ़ासिक और मोमिन कौन?	१३८
६०	आखिरत में जज़ा (बदला) और सज़ा और जन्नत (स्वर्ग) या जहन्नम (नरक) में प्रवेश	१४०
६१	यतीमों का ख़याल सबसे ज़्यादा इस्लाम में रखा गया है	१४१
६२	नमाज़ पढ़ने में सुस्ती करने वालों को जहन्नम (नरक) में डाला जायेगा	१४३
६३	दिखावा अच्छे कार्यों की बर्बादी का कारण है	१४४
६४	सूरह अलकौसर की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	१४७
६५	कौसर जन्नत की एक नहर है, जिससे क़यामत के दिन उम्मतें मुहम्मदियह खूब पानी पिये गी	१४८
६६	हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र	१४९
६७	हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नस्ल	१५०
६८	होज़े कौसर क्या है?	१५२
६९	नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो	१५२
७०	सूरह अलकाफ़िरून की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	१५५
७१	सूरह अन्नस की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	१५९
७२	सूरह अन्नस में नबी-ए-अकरम को अल्लाह के ज़िक्र और इस्तिग़फ़ार करने की तालीम	१६०
७३	सूरहतुल्लहब (अलमसद) की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	१६५

क्र.	विषय	पेज नं
७४	नबी को तकालीफ़ देने वाले अबू लहब और उसकी पत्नी का बुरा अन्जाम	१६५
७५	सूरतुल इखलास की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	१७०
७६	सूरह इखलास में पूर्ण तौहीद और हर तरह के शिर्क से नफ़ी है	१७१
७७	सूरतुल इखलास के कुछ फ़ज़ाईल नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी	१७५
७८	सूरतुल इखलास एक तिहाई कुरान के बराबर	१७५
७९	सूरतुल इखलास की ज़ियादा तिलावत करने वाला अल्लाह का अज़ीज	१७६
८०	सूरतुल इखलास से सच्ची मोहब्बत करने वाला जन्नत में जायेगा	१७७
८१	सूरतुल इखलास की तिलावत दुनियावी आफ़ात (परेशानियों) से हिफ़ाज़त (सुरक्षा) का ज़रिया	१७८
८२	सूरह अल फ़लक़ और सूरह अन्नास की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)	१८०
८३	सूरह अल फ़लक़ और सूरह अन्नास के ज़रिए जादू और दूसरी आफ़ात (मुसीबतों) से हिफ़ाज़त (सुरक्षा)	१८१
८४	क्या शैतान कोई अलग मख़लूक है?	१८३
८५	क्या जादू बरहक़ (सत्य) है?	१८५
८६	क्या नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू हुआ था?	१८६
८७	क्या दोनों सूरतों से दुनियावी और उख़रवी आफ़ात (परेशानियों) से हिफ़ाज़त (सुरक्षा) मुमकिन है?	१८८

प्रस्तावना

मोहम्मद नजीब कासमी संभली

कुरान-ए-करीम अल्लाह तआला की किताब है, जो अल्लाह तआला ने कयामत तक आने वाले सभी जिन्नात और इंसानों के मार्गदर्शन के लिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पीढ़ी (खानदान) से ५७१ में मक्का मुकर्रमा में पैदा हुए अंतिम नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वही के ज़रिए उतारी। रमज़ान के महीने की एक बरकत वाली रात “लायलातुलक़द्र” में अल्लाह तआला ने “लौह-ए-महफूज़” (अति सुरक्षित स्थान) से आसमान-ए-दुनिया पर कुरान-ए-करीम उतारा और इसके बाद ज़रूरत के अनुसार थोड़ा थोड़ा हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरता रहा, और ६११ ई. से ६३४ ई. तक लगभग २३ वर्ष में कुरान-ए-करीम पूरा उतरा। अल्लाह की तरफ़ से नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह ज़िम्मेदारी सौंपी गई कि आप लोगों के सामने अपनी कीमती बातों और कार्यों से कुरान-ए-करीम के आदेश और मसाइल स्पष्ट तौर पर बयान करें। इसलिए नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के आदेश के अनुसार सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को कुरान-ए-करीम के अर्थ की शिक्षा ही नहीं देते थे, बल्कि उन्हें इसके शब्दों को भी याद कराते थे, तथा कुरान-ए-करीम की सुरक्षा के लिए कुरान-ए-करीम को लिखवाने की भी विशेष व्यवस्था करते थे। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वही उतरने के बाद वही के लेखकों को लिखा दिया करते थे।

यह मुकद्दस किताब हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने से लेकर रहती दुनिया तक मार्गदर्शन बनी रहेगी, क्योंकि अल्लाह तआला ने

इस किताब की सुरक्षा अपने ज़िम्मे लेकर इसको संक्षिप्त और संदर्भ बनाया है कि इमानियात (यकीन), इबादात, लेनदेन, समाजिक, आर्थिक और अर्थशास्त्र के नियम कुरान-ए-करीम में उल्लेख हैं। हाँ! इनका विवरण नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कीमती बातों और अमल (यानि हादीसों) में ही मौजूद हैं।

मगर बहुत अफ़सोस और चिंता की बात है कि हमारा संबंध इस किताब से रोज़ाना कम होता जा रहा है। यह किताब हमारी मस्जिदों और घरों में बंद होकर रह गई है, न तिलावत (पढ़ना) है, न सोच विचार है और न ही इसके अहकाम और मसाइल पर अमल। आज का मुस्लमान दुनिया की भाग दोड़ में इतना खो गया है कि कुरान-ए-करीम के अहकाम (आदेश) और मसाइल को समझना तो अलग इसकी तिलावत (पढ़ने) का भी समय नहीं है।

कुरान-ए-करीम की शिक्षाओं को आम करने के लिए नई टेक्नोलोजी से लाभ उठाकर हर जुमा को फ्री ऑनलाइन दर्स-ए-कुरान और दर्स-ए-हदीस की व्यवस्था की गयी, जिसमें २० मिनट ऑनलाइन पाठ के बाद १० मिनट का समय प्रश्न और उत्तर के लिए भी दिया गया। ऑनलाइन क्लासों की वीडियो को यूट्यूब पर अपलोड करके उनको सोशल मीडिया पर शेयर भी किया गया। इस तरह अल्लाह की कृपा और उसकी तौफ़ीक़ से विभिन्न देशों से हज़ारों लोगों ने इन पाठकों से लाभ उठाया, और यह सिलसिला बराबर जारी है।

दर्स-ए-कुरान के पहले चरण में कुरान-ए-करीम की उन अंतिम सूरतों (सूरह “अल अलक़” से सूरह “अल नास” तक) की संक्षिप्त तफ़सीर बयान की गई जिनको आम तौर पर मुस्लमान रोज़ाना पाँच समय की नमाज़ों में पढ़ते हैं।

सामान्य लाभ के लिए दुरुस-ए-कुरान और दुरुस-ए-हदीस को तीन भाषाओं (उर्दू, हिंदी और अंग्रेज़ी) में तौफ़ीक़-ए-इलाही और एक अहल-ए-खैर की सहायता से आम लोगों विशेषकर स्कूल में पढ़ने वाले छात्र और छात्राओं को फ्री बाँटने के लिए प्रकाशित कर रहे हैं, ताकि दीनी जानकारी देने के साथ बच्चों और बच्चियों की सही तरबियत (प्रशिक्षण) भी हो सके। सभी सबक हमारी वेबसाइट (www.najeebqasmi.com) और हमारी मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) पर भी अपलोड कर दिए गए हैं। किताबों की भाषाओं के विशेषज्ञों से संपादन भी कराया गया। हिंदी के अनुवाद में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि अनुवाद समान्य भाषा में हो, ताकि हर आम और खास के लिए फ़ायदा उठाना आसान हो। अंग्रेज़ी किताबों को वैश्विक स्तर पर पेश करने का प्रयास किया गया है ताकि दुनिया के पूर्व और पश्चिम में इस से लाभ उठाया जा सके।

अंत में अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि इन सेवाओं को स्वीकृति और लोकप्रियता से नवाज़ कर मुझे और इन छह किताबों के प्रकाशन में जिस व्यक्ति ने जिस तरह का भी सहयोग दिया सभी को बड़ा अज़्र (बदला) अता फ़रमाए। तथा हज़रत मौलाना मुफ़्ती **अबुल कासिम नौमानी** साहब, हज़रत मौलाना **मौहम्मद ज़करिय्या संभली** साहब और प्रोफ़ेसर डाक्टर **शफ़ीक़ अहमद खान नदवी** साहब का शुक्रगुज़ार (आभारी) हूँ कि उन्होंने अपनी व्यस्तगी के बावजूद मेरी इन किताबों को पढ़कर मुखबंद लिखा। शिक्षा विशेषज्ञ और मशहूर व्यापारी जनाब **डॉक्टर नदीम तरीन** साहब और जनाब डॉक्टर **शफ़ाअतुल्लाह खान** साहब की दुनिया और आख़रत की कामयाबी के लिए विशेषकर दुआ करता हूँ जिनके योगदान से तीन भाषाओं में छह किताबों के प्रकाशन का या प्रोजेक्ट (परियोजना) पूरा हुआ है।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाद), ३० जनवरी २०१८

मुखबंध

हज़रत मौलाना अबुल क़सिम नोमानी साहब

मोहतमिम (कुलपति) दारुल उलूम देवबंद

जनाब मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी संभली का संबंध पश्चिमी उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध शहर “संभल” से है, जहाँ कई उलैमा, अकाबिर, मशाइख (बड़े लोग), मुस्लिहीन (इस्लाह करने वाले यानि सुधारक) और लेखक पैदा हुए।

मौलाना दारुल उलूम देवबंद के फ़ाज़िल (विद्वान) और इल्मी रुचि रखने वाले आलिम-ए-दीन हैं। मौलाना सऊदी अरब की राजधानी “रियाज़” शहर में रहते हैं। अल्लाह तआला ने मौलाना को इल्मी और लेखनीय रुचि के साथ उम्मत के हक़ में सहानुभूति का दिल भी अता फ़रमाया है। मौलाना के इस्लाही (सुधारक) और दावती लेख सऊदी अरब, भारत और दूसरे अन्य देशों के विभिन्न अखबारों और पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

मौलाना कासमी ने सोशल मीडिया को दीनी शिक्षा और तबलीग़ के लिए बेहतरीन ज़रिए के तौर पर उपयोग करने का उदाहरण स्थापित किया। दीन-ए-इस्लाम (Deen-e-Islam) के नाम से मौलाना ने विभिन्न दीनी विषयों पर आधारित उर्दू, हिंदी और अंग्रेज़ी में एक मोबाइल ऐप तैयार की है जो बहुत लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी है।

तथा हज के बारे में मार्गदर्शन (गाइड) के लिए उर्दू, हिंदी और अंग्रेज़ी में एक स्थायी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) इस विषय पर सेवा में लगी हुई है। इसी के साथ मौलाना ने ऑनलाइन दुरुस-ए-कुरान (कुरान के पाठ) और दुरुस-ए-हदीस (हदीस के पाठ) की श्रृंखला शुरू किया हुआ है, जिससे विभिन्न देशों के लोग लाभ उठा रहे हैं, तथा सोशल मीडिया के ज़रिए यह दुरुस (पाठ) लोगों के पास बराबर पहुँचते रहते हैं।

यह बहुत खुशी की बात है कि इन दोनों दुरुस (पाठकों) का पहला मजमूआ (संग्रह) उर्दू, हिंदी और अंग्रेज़ी तीनों भाषाओं में बड़ी संख्या में प्रकाशित होने वाला है। बन्दे ने दोनों दुरुस (पाठकों) पर नज़र डाली और इनको उम्मत के लिए बहुत ही फ़ायदेमंद पाया। भाषा और अन्दाज़-ए-बयान आसान और आकर्षक है। अल्लाह तआला इस सिलसिले (श्रृंखला) को बाक़ी रखने और अधिक वुसअत (विस्तार) की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और उम्मत को फ़ायदा हासिल करने का मौक़ा अता फ़रमाए। आमीन

अबुल कासिम नौमानी

मोहतमिम दारुल उलूम देवबंद

२५/०४/१४३९ ही.

मुखबंध

हज़रत मौलाना मोहम्मद ज़करिय्या संभली साहब

शैख-उल-हदीस नदवातुल उलैमा, लखनऊ

अज़ीज़-ए-मोहतरम मौलाना मौहम्मद नजीब कासमी संभली का संबंध एक इल्मी और दीनी खानदान से है, इनके दादा हज़रत मौलाना मौहम्मद इस्माईल साहब संभली (र.ह.) की गिनती अपने ज़माने के उन बड़े उलैमा में होती थी जिन्होंने मदरसों में हदीस की शिक्षा देने के साथ साथ मदरसों के बाहर की विभिन्न प्रकार की दीनी सेवाओं में हर तरह की शिरकत की। इनके नाना मौलाना मुफ्ती मुशर्रफ़ हुसैन साहब संभली (र.ह.) हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी (र.ह.) के शागिर्द (विधार्थी) थे, और लंबे समय तक कई मदरसों में “सिहाह-ए-सित्ता” (हदीस की छह मशहूर किताबों) के उस्ताद (शिक्षक) रहे थे। खुद मौलाना मौहम्मद नजीब साहब भी दारुल उलूम देवबंद के फ़ाज़िल (विद्वान) हैं, और अल्लाह सुबहानहु व तआला ने इल्म के साथ साथ सलामती-ए-तबअ भी अता फरमाई। वह काफ़ी समय से इल्मी और दीनी विषयों पर लिखते रहते हैं, और आजकल की मीडिया और संचार में इनके लेख दुनिया के कोने कोने तक पहुँच रहे हैं।

अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल-व-करम (दया) से इन्होंने कुरान-ए-करीम के दूरुस प्रकाशित करने शुरू किए हैं, जिनमें कुरान मजीद की आखिरी (अंतिम) उन्नीस (१९) सूरतों का दर्स (पाठ) और इससे पहले कुरान मजीद के बारे में बुनियादी (प्राथमिक) जानकारी और लेख लिखे हैं।

मौलाना का इल्म (ज्ञान) गहरा और भाषा (ज़बान) सरल (सादा) और रवां है, इसलिए उम्मीद है कि यह दूरुस (पाठ) बहुत ही फ़ायदेमंद और उपयोगी (लाभदायक) होंगे, अल्लाह तआला इस मजमूआ (संग्रह) से लोगों को फ़ायदा पहुँचाए और खुद मौलाना के लिए आखिरत का खज़ाना बनाए। आमीन।

मौहम्मद ज़करिय्या संभली, लखनऊ

७ जुमादल अव्वल १४३९ हि. २५ जनवरी २०१८ ई.

मुखबंध

प्रोफ़ेसर डाक्टर शफीक़ अहमद ख़ान नदवी साहब
पूर्व अध्यक्ष अरबी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली

कुरान-ए-करीम अल्लाह का कलाम है, जिसे अल्लाह तआला ने दुनिया के रब होने की हैसियत (स्तिथि) से अपने रसूल रहमतुल लीलआलमीन (दुनिया के लिए रहमत) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़रिए पूरी दुनिया के लिए मार्गदर्शन और सुरक्षा का ज़रिया बनाया। और इसकी रोशनी में सीधे रास्ते (मार्ग) पर चलकर सभी समस्याओं और परेशानियों के समाधान का रास्ता दिखाया, जो सभी अल्लाह के बन्दों के दर्द का इलाज साबित (सिद्ध) हुआ। अब कुरान-ए-करीम ही कयामत आने तक के लिए नियमित रूप से मार्गदर्शन पत्र (गाइड) है, जिस से इंसान को उसकी क्षमता के अनुसार हिदायत मिलती है। यह हक़ीक़त (वास्तव) में वह समुद्र है जिस से उसके तैराकों और गोताखोरों को उनकी क्षमता और मेहनत के अनुसार ही फ़ायदा (लाभ) पहुँचता है।

कुरान ही इतिहास का सबसे बड़ा मोज़ज़ा (चमत्कार) है। साहित्यिक, इल्मी, चिकित्सिक और वैज्ञानिक चमत्कार, जिसके स्रोत सूखने वाले नहीं अगर ईमान और यक़ीन के साथ सोच विचार का सिलसिला ज़री रखा जाए और दिलों पर ताले न लगाए जाएँ। कुरान को कुरान इसीलिए कहा जाता है कि इसकी क़िराअत (पढ़ने) और बार बार तिलावत (पढ़ने) से सुस्ती महसूस नहीं होती, कानों में सुनने के स्वाद के रस घुलते हुए लगते हैं, दरया-ए-मआनी (अर्थों के समुद्र) महासागर की लहरें होती हैं, बलाग़त (वाग्मिता) के मोती प्राप्त होते

हैं। अल्लाह तआला के डर और आखिरत की चिंता पैदा होती है। अल्लाह के हुक्क (अधिकार) और इंसानों के हुक्क (अधिकार) के ऐहतिमाम (व्यवस्था) के साथ साथ पूरी इंसानियत और अल्लाह की मखलूक के लिए दया का जुनून उत्तेजित (बेदार) होता है, और दिलों का मैल कुचैल (गन्दगी) और जंग भी साफ़ होता है, जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है के कुरान की तिलावत (पढ़ने) से दिलों की जंग की सफाई होती है।

दुख की बात यह है कि आमतौर पर कुरान-ए-करीम को समझबूझ (सोच विचार) के बगैर पढ़ा जाता है। बारगाह-ए-रब (अल्लाह के दरबार) के सामने इबादतों में लोग क्या पढ़ते हैं? क्या कहते हैं? और क्या मांगते हैं? इसके अर्थ से अनजान हैं। किसी गैर मुस्लिम ने मुसलमानों को नमाज़ पढ़ते देखा तो पुछा, आप अपनी नमाज़ों में क्या कहते हैं? अपने रब की इबादत करते हैं तो क्या मांगते हैं? उत्तर मिला पढ़ने को तो हम यह पढ़ते हैं लेकिन इसका अर्थ मालूम नहीं। इमाम साहब से पुछा गया तो उन्होंने भी माफ़ी चाही। गैर मुस्लिम हैरान रह गया। उसने कहा: आप अपनी इबादतों में सूरतें पढ़ते हैं, दुआएँ करते हैं, मुनाजात करते हैं और कुछ मांगते हैं, और आपको इसका अर्थ मालूम नहीं? हैरत और अफ़सोस की बात है।

डाक्टर मौहम्मद नजीब कासमी भाग्यशाली हैं कि अल्लाह तआला ने इन्हें अपने कलाम को समझने की तौफ़ीक दी, फ़रमान-ए-रसूल सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के अनुसार कुरान-ए-करीम को सीखने और सिखाने वाला ही सबसे बेहतर होता है। १९० पेजों की इस किताब में उन्होंने कुरान-ए-पाक के बारे में संग्रह, परिचयात्मक (आरंभिक) और प्रारंभिक शब्दों के प्रस्तुती के बाद नमाज़ों में आमतौर पर पढ़ी जाने

वाली अंतिम १९ सूरतों के अर्थ को समझाया, जिनकी शुरुआत वही के उतरने की पहली सूरह “इकरा” (अलक़) से होती है। समझने के योग्य है यह बात कि सबको पैदा करने वाले और मालिक ने सबसे पहले क्या करने को कहा और किस तरह?

पुस्तक की ज़बान (भाषा) सादा, सरल (आसान) और स्पष्ट है। मजलिसों और मस्जिदों में थोड़ा थोड़ा करके सुनाने के योग्य है। यही समय की मांग है, इस किताब के हर हर पाठ (सबक़) से दिल और दिमाग में यह हकीक़त अपने आप उतर जाती है कि कुरान (अल्लाह का कलाम) ही दोनों जहाँ की कामयाबी का उत्तरदायी (गारंटर), नफ़्स की सफ़ाई का ज़रिया और दिल के लिए आराम प्राप्त करने की चाबी है। उम्मीद की जाती है कि यह पुस्तक आम (सार्वजनिक) स्वीकृति (कुबूलियत) प्राप्त करके लेखक के लिए इनाम और स़वाब का कारण बनेगी।

शफ़ीक़ अहमद ख़ान नदवी

पूर्व अध्यक्ष अरबी विभाग

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (नई दिल्ली)

८ जुमादल अव्वल १४३९ हि. २६ जनवरी २०१८ ई.

प्रारंभिक अध्यायः

- कुरान करीम क्या है?
- कुरान का नाज़िल होना
- कुरान करीम की सुरक्षा
- कुरान से संबंधित जानकारी
- कुरान करीम में क्या है?
- कुरान करीम और हम

कुरान करीम क्या है?

कुरान करीम अल्लाह तआला का वह पवित्र कलाम है जो इंसानों की हिदायत के लिए खालिके कायनात (संसार के बनाने वाले) ने अपने आखरी रसूल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फरमाया। अल्लाह तआला ने कुरान करीम की सुरक्षा खुद अपने ज़िम्मे ली जैसा कि अल्लाह तआला का फैसला कुरान करीम में मौजूद है (सूरह अलहिजर आयत ९) “यह ज़िक्र (यानी कुरान) हमने ही उतारा है और हम ही इसकी हिफाज़त करने वाले हैं”

कुरान करीम आखरी आसमानी किताब है जो क़यामत तक लोगों की रहनुमाई करती रहेगी। इसके विपरीत पहली आसमानी किताबों के, वह खास कौमों और खास ज़मानों के लिए थीं। इसी लिए अल्लाह तआला ने इन को क़यामत तक महफूज़ रखने की कोई ज़मानत नहीं दी थी लेकिन अल्लाह तआला ने कुरान करीम की सुरक्षा खुद अपने ज़िम्मे ली है।

वही وحی: कुरान करीम चूंकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वही के ज़रिया नाज़िल किया गया है, इस लिए सबसे पहले वही के बारे में जानें। वही वह कलाम है जो अल्लाह तआला हज़रत ज़िबर्ईल अलैहिस्सलाम के वास्ते या बिला वास्ते अपने नबियों पर नाज़िल (उतारता) फरमाता है, जिसके ज़रिया अल्लाह तआला इंसान को दुनियावी ज़िंदगी गुज़ारने का तरीका बतलाता है ताकि लोग उसके बतलाए हुए तरीके पर दुनियावी ज़िंदगी गुज़ार कर जहन्नम से बच कर हमेशा के लिए जन्नत में दाखिल हो जाएं। इंसान तीन ज़राए (सूत्रों) में से किसी एक ज़रिया (स्रोत) से ज्ञान प्राप्त करता है। एक इंसान के इन्द्रियां यानी आँख, कान, मुँह और

हाथ पांव, दूसरा ज़रिया अक़ल और तिसरा ज़रिया वही है। इंसान को बहुत सी बातें अपने हवास (Sence) के ज़रिया मालूम हो जाती हैं जबकि बहुत सी अक़ल के ज़रिया और जो बातें उन दोनों ज़राए से मालूम नहीं हो सकतीं उनका इल्म वही के ज़रिया अता किया जाता है। हवास और अक़ल के ज़रिया प्राप्त ज्ञान में गलती की संभावना होती है लेकिन वही के ज़रिया प्राप्त ज्ञान में गलती के इमकान बिल्कुल नहीं होते क्योंकि यह इल्म खालिके कायनात की जानिब से नबियों के ज़रिया से इंसानों को पहुंचता है। गरज़ (अर्थात्) ये कि वही इंसान के लिए वह उच्चतम ज़रिया इल्म है जो उसे उसकी जिंदगी से मुतअल्लिक उन सवालात का जवाब मुहैया करता है जो अक़ल और हवास (इन्द्रियां) के ज़रिया हल नहीं हो सकते। यानी सिर्फ अक़ल और मुशाहिदा (अवलोकन) इंसान की रहनुमाई के लिए काफी नहीं है बल्कि उसकी हिदायत के लिए वही-ए-इलाही एक नागुज़ीर (अपरिहार्य) जरूरत है। चूंकि वही अक़ल और मुशाहिदा से बढ़कर इल्म है लिहाज़ा जरूरी नहीं कि वही की हर बात अक़ल से समझी जा सके।

वही नाज़िल होने (उतरने) के कुछ तरीके (प्रकार)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर विभिन्न प्रकार से वही नाज़िल होती थी।

- 1) घंटी की सी आवाज़ सुनाई देती और आवाज़ ने जो कुछ कहा होता वह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को याद हो जाता। जब इस तरीका पर वही नाज़िल होती थी तो आप पर बहुत ज्यादा बोझ पड़ता था।
- 2) फरिशता किसी इंसानी शकल में आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के पास आता और अल्लाह तआला का पैगाम पहुंचा देता। ऐसे अवसर पर हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम मशहूर सहाबी हज़रत दहिया कल्बी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की सूरत में तशरीफ लाया करते थे (प्रकट हुआ करते थे)।

- 3) हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम अपनी असल सूरत में तशरीफ लाते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र में सिर्फ तीन बार ऐसा हुआ है। एक नुबुवत के बिल्कुल इब्तिदाई दौर (आरंभिक समय) में दूसरी बार खुद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम से उनकी असल सूरत में देखने की इच्छा ज़ाहिर फरमाई थी और तीसरी बार मेराज के मौक़ा पर।
- 4) बिला वास्ता अल्लाह तआला से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातचीत हुई। यह सिर्फ एक बार मेराज के समय हुआ। नमाज़ की फर्ज़ीयत (अनिवार्यता) इसी मौक़ा पर हुई।
- 5) हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने आए बेग़ैर आप के सीने में डाल देते थे।

कुरान करीम के नाज़िल होने का संक्षिप्त इतिहास:

माहे रमज़ान की एक बरकत वाली रात “लैलतुलक़दर” में अल्लाह तआला ने लौहे महफूज़ (अति सुरक्षित स्थान) से समा-ए-दुनिया (संसार से करीब आसमान) पर कुरान करीम नाज़िल फरमाया और उसके बाद आवश्यकता अनुसार थोड़ा-थोड़ा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होता रहा और तकरीबन २३ साल में कुरान करीम पूर्ण नाज़िल हुआ। कुरान करीम का नुज़ूल उस समय शुरू हुआ जब आप की उम्र चालीस साल थी। कुरान करीम की सबसे

पहली जो आयतें गारे (गुफा) हिरा में उतरीं वह सूरह अल-अलक़ की आरंभिक आयात हैं। “पढ़ो अपने उस परवरदिगार के नाम से जिस ने पैदा किया, जिसने इंसान को जमे हुए खून से पैदा किया, पढ़ो और तुम्हारा परवरदिगार सबसे ज्यादा करीम है”

इस पहली वही के नुज़ूल के बाद तीन साल तक वही का नुज़ूल बन्द रहा। तीन साल के बाद वही फरिशता जो गारे हिरा में आया था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और सूरह अलमुदस्सिर की आरंभिक कुछ आयात आप पर नाज़िल फरमाईं। “ऐ कपड़े में लिपटने वाले उठो और लोगों को खबरदार करो और अपने परवरदिगार की बड़ाई बयान करो और अपने कपड़ों को पाक रखो और गंदगी से किनारा कर लो”

इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात (अंतिम समय) तक वही का सिलसिला जारी रहा। कुरान करीम का सबसे छोटा भाग जो मुसतकिल नाज़िल हुआ वह (अन निसा आयत ९५) है, जो एक लम्बे आयत का टुकड़ा है। दूसरी तरफ पूरी सूरतुल इनाम एक ही बार में नाज़िल हुई है। गरज़ ये कि तकरीबन २३ साल के अंतराल में कुरान करीम पूरा नाज़िल हुआ।

कुरान करीम के थोड़ा-थोड़ा नाज़िल होने का मक़सद (उद्देश्य):

दूसरी आसमानी किताबों के बरखिलाफ़ कुरान करीम को एक दफा नाज़िल करने के बजाए थोड़ा-थोड़ा नाज़िल किया गया। इसका कारण खुद अल्लाह तआला ने कुरान करीम में मुशरेकीन मक्का के जवाब में इन शब्दों में बताया है।

“और यह काफिर लोग कहते हैं कि इन पर सारा कुरान एक ही दफा

में क्यों नाज़िल नहीं कर दिया गया? (ऐ पैगम्बर) हमने ऐसा इस लिए नहीं किया ताकि इसके जरिये तुम्हारा दिल मज़बूत रखें और हमने इसे ठहर ठहर कर पढ़वाया है और जब कभी यह लोग तुम्हारे पास कोई अनोखी बात लेकर आते हैं, हम तुम्हें (इसका) ठीक ठीक जवाब और ज्यादा वज़ाहत (विस्तार) के साथ अता कर देते हैं।”

(सूरतुल फुरक़ान आयत ३२, ३३)

इमाम राज़ी (रहमतुल्लाह अलैह) ने इस आयत की तफ़सीर में कुरान करीम के थोड़ा थोड़ा नाज़िल होने की जो हिकमतें बयान फरमाई हैं, उनका खुलासा यह है।

- 1) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मी थे (उन्होंने किसी से लिखना पढ़ना नहीं सीखा था), इस लिए अगर सारा कुरान एक बार नाज़िल हो गया होता तो इसका याद रखना दूभर हो जाता।
- 2) अगर पूरा कुरान एक दफा में नाज़िल हो जाता तो तमाम अहकामों (आदेशों) की पाबंदी फ़ौरन ज़रूरी हो जाती और यह उस फैसले के खिलाफ होता जो शरीअत मोहम्मदी में मतलूब है।
- 3) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी क़ौम की तरफ से हर रोज़ नई कठिनाइयां उठानी पड़ती थी, हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम का बार बार कुरान करीम लेकर आना इन कठिनाइयों और तकलीफों के मुक़ाबले को आसान बना देता था, और आप की शक्ति का कारण बनता था।
- 4) कुरान करीम का एक भाग लोगों के सवालात के जवाब और विभिन्न घटनाओं पर आधारित है, इस लिए इन आयतों का नुज़ूल इसी समय मुनासिब था जिस समय वह सवालात किए गए या वह वाक़यात पेश आए (घटनाएं हुईं)।

कुरान करीम की सुरक्षा:

जैसा कि ज़िक्र किया गया कि कुरान करीम एक ही दफा में नाज़िल नहीं हुआ बल्कि ज़रूरत और हालात के इतिबार से विभिन्न आयात नाज़िल होती रहीं। कुरान करीम की हिफाज़त के लिए सबसे पहले कुरान को ज़बानी याद करने पर ज़ोर दिया गया। इसलिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शब्दों को उसी समय दोहराने लगते थे ताकि वह अच्छी तरह याद हो जाएँ। इस पर अल्लाह तआला की जानिब से वही नाज़िल हुई कि उन्हें वही नाज़िल होने के समय जल्दी जल्दी शब्दों को दोहराने (पढ़ने) की ज़रूरत नहीं है बल्कि अल्लाह तआला खुद आप में ऐसा हाफ़ज़ा पैदा फरमा देगा कि एक बार वही नाज़िल होने के बाद आप उसे भूल नहीं सकेंगे। इस तरह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले हाफिज़े कुरान हैं। चुनांचे हर साल रमज़ान के महीने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम के साथ कुरान के नाज़िल होए हिस्सों का दौर फरमाया करते थे। जिस साल आप का इंतिकाल हुआ उस साल आपने दो बार कुरान करीम का दौर फरमाया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा-ए-कराम को कुरान की तालीम ही नहीं देते थे बल्कि उसके शब्दों को भी याद कराते थे। खुद सहाबा-ए-कराम को कुरान करीम याद करने का इतना शौक था कि हर व्यक्ति एक दूसरे से आगे बढ़ने की फिक्र में रहता था। चुनांचे हमेशा सहाबा-ए-कराम में एक अच्छी खासी जमाअत एसी रहती जो कुरान की आयात को याद कर लेती और रातों को नमाज़ में उसे दोहराती थी। गरज़ ये कि कुरान करीम की हिफाज़त के लिए सबसे पहले कुरान को याद करने पर ज़ोर दिया गया और उस समय

के लिहाज़ से यही तरीका ज्यादा महफूज़ और काबिले इतिमाद था। कुरान करीम की हिफाज़त के लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरान करीम को लिखवाने की भी विशेष व्यवस्था की, चुनांचे वही के नाज़िल होने के बाद आप वही लिखने वालों को लिखवा दिया करते थे। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मामूल यह था कि जब कुरान करीम का कोई भाग नाज़िल होता तो आप वही लिखने वालों को को यह हिदायत फरमाते थे कि इसे उस सूरात में उस आयत के बाद लिखा जाए। उस ज़माने में कागज़ नहीं थे इस लिए यह कुरानी आयात अधिकतर पत्थर की सिलों, चमड़े के पारचों, खजूर की शाखाओं, बांस के टुकड़ों, पेड़ के पत्तों और जानवर की हड्डियों पर लिखी जाती थीं। वही लिखने वालों में हज़रत जैद बिन साबित, खुलफाए राशिदीन, हज़रत ओबय बिन काब, हज़रत जुबैर बिन अव्वाम और हज़रत मआविया रज़ियल्लाहु अन्हुम के नाम खास तौर पर ज़िक्र किए जाते हैं।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अन्हु) की खिलाफत के काल में कुरान की हिफाज़त (सुरक्षा):

हज़रत अबू बकर सिद्दीक के काल में जब जंगे यमामा के दौरान हुप्फाज़े कुरान की एक बड़ी जमाअत शहीद हो गई तो हज़रत उमर फारूक (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक को कुरान करीम को एक जगह जमा करवाने का मशविरा दिया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक शुरू में इस काम के लिए तैयार नहीं थे लेकिन बाद में वह भी इस बड़े काम के लिए तैयार हो गए और वही लिखने वाले हज़रत जैद बिन साबित को इस अहम और बड़े काम का ज़िम्मेदार बनाया। इस तरह कुरान करीम को एक जगह जमा करने का अहम

काम शुरू हो गया।

हज़रत ज़ैद बिन साबित खुद कातिबे वही होने के साथ पूरे कुरान करीम के हाफिज़ थे। वह अपनी याददाशत से भी पूरा कुरान लिख सकते थे, उनके अलावा उस समय कुरान करीम के सैकड़ों हाफिज़ मौजूद थे मगर उन्होंने इहतियात के पेशेनज़र सिर्फ एक तरीके पर बस नहीं किया बल्कि उन तमाम ज़राये (स्रोत) से एक साथ काम लेकर उस समय तक कोई आयत कुरान में नहीं लिखी जब तक कि उसके मुतवातिर (जिसको बहुत ज़ियादा लोगों ने रिवायत किया) होने की लिखी हुई और ज़बानी शहादतें नहीं मिल गईं। इसके अलावा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरान की जो आयात अपनी निगरानी में लिखवाई थीं वह अनेक सहाबा-ए-कराम के पास महफूज़ थीं, हज़रत ज़ैद बिन साबित ने उन्हें जमा किया ताकि नया नुसखा उन्हीं से नक़ल किया जाए, इस तरह पहले खलीफा हज़रत अबू बकर सिद्दीक के अहदे खिलाफत (काल) में कुरान करीम एक जगह जमा कर दिया गया।

हज़रत उसमान गनी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की खिलाफत के काल में कुरान की हिफाज़त (सुरक्षा):

जब हज़रत उसमान खलीफा बने तो इस्लाम अरब से निकल कर दूर दराज़ गैर अरबी इलाकों तक फैल गया था। हर नए इलाके के लोग उन सहाबा और ताबेईन से कुरान सीखते जिनकी बदौलत उन्हें इस्लाम की नेमत प्राप्त हुई थी। सहाबा-ए-कराम ने कुरान करीम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से विभिन्न किरातों के मुताबिक सिखा था। इस लिए हर सहाबी ने अपने शागिर्द को इसी किरात के अनुसार कुरान पढ़ाया जिसके अनुसार खुद उन्होंने हुज़ूर

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पढ़ा था। इस तरह किरातों का यह इख्तिलाफ (अंतर) दूर दराज मुल्कों तक पहुंच गया। लोगों ने अपनी किरात को हक और दूसरी किरातों को गलत समझना शुरू कर दिया, हालांकि अल्लाह तआला ही की तरफ से इजाज़त है कि विभिन्न किरातों में कुरान को पढ़ा जाए। हज़रत उसमान गनी ने हज़रत हफसा के पास पैगाम भेजा कि उनके पास (हज़रत अबू बकर सिद्दीक के तैयार कराए हुए) जो सहीफे मौजूद हैं वह हमारे पास भेज दें। चुनांचे हज़रत जैद बिन साबित की सरपरस्ती में एक कमेटी का गठन करके उनको ज़िम्मेदारी दी गयी कि वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक के सहीफे से नक़ल करके कुरान करीम के चंद ऐसे नुसखे तैयार करें जिनमें सूरतों को भी तरतीब दिया गया हो। चुनांचे कुरान करीम के चंद नुसखे तैयार हुए और उनको विभिन्न जगहों पर भेज दिया गया ताकि उसी के मुताबिक नुसखे तैयार करके तकसीम कर दिए जाए। इस तरह उम्मत मुस्लिमा में इख्तिलाफ बाकी न रहा और पूरी उम्मत मुस्लिमा इसी नुसखे के मुताबिक कुरान करीम पढ़ने लगी। बाद में लोगों की आसानी के लिए कुरान करीम पर नुकते और हरकात (ज़बर, ज़ेर और पेश) भी लगाए गए। इसी तरह बच्चों को पढ़ाने की आसानी के लिए कुरान करीम को तीस पारों में तकसीम किया गया। नमाज़ में कुरान करीम की तिलावत की आसानी के लिए रुकु की तरतीब भी रखी गई।

अल्लाह तआला हमें इहतिमाम से कुरान करीम की तिलावत करने वाला बनाए, उसको समझ कर पढ़ने वाला बनाए, उसके अहकाम और मसाएल पर अमल करने वाला बनाए और उसके पैगाम को दूसरों तक पहुंचाने वाला बनाए। आमीन

कुरान करीम में अहकाम की तफसील ज़िक्र नहीं है:

कुरान करीम में आम तौर पर अहकाम (आदेश) का विवरण ज़िक्र नहीं है यहां तक कि इस्लाम के मूल स्तंभ: नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज के अहकाम भी कुरान करीम में तफसील के साथ ज़िक्र नहीं हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के हुकुम के मुताबिक अपनी कीमती बातों और अपने अमल से उन अहकाम की तफसील बयान की है। अल्लाह तआला इसी लिए नबी और रूसूल भेजता है ताकि वह अल्लाह तआला के अहकाम अपनी कीमती बातों और अपने अमल से लोगों के लिए बयान करें। मसलन अल्लाह तआला ने कुरान करीम में विभिन्न मक़ामात पर नमाज़ पढ़ने, रुकू करने और सजदा करने का हुकुम दिया है लेकिन नमाज़ की तफसील कुरान करीम में ज़िक्र नहीं है कि एक दिन में कितनी नमाज़ें अदा करनी हैं? क़याम या रुकू या सजदा कैसे किया जाएगा और कब किया जाएगा? और इसमें क्या पढ़ा जाएगा? एक समय में कितनी रकात अदा करनी हैं? इसी तरह कुरान करीम में ज़कात की अदाएंगी का तो हुकुम है लेकिन तफसीलात के बारे जिक्र नहीं हैं कि ज़कात की अदाएंगी रोज़ाना करनी है या साल भर में या पांच साल में या ज़िंदगी में एक बार? फिर यह ज़कात किस हिसाब से दी जाएगी? किस माल पर ज़कात अनिवार्य है और उसके लिए क्या क्या नियम हैं? गरज़ ये कि अगर हदीस को कुरान की पहली अहम और बुनियादी तफसीर मानने से इंकार करें तो कुरान करीम की वह सैकड़ों आयात जिनमें नमाज़ पढ़ने, रोज़ा रखने, ज़कात और हज की अदाएंगी का हुकुम है वह सब (अल्लाह की पनाह) बेमाना हो जाएंगी। इसी तरह कुरान करीम (सूरह अलमाइदा ३८) में हुकुम है कि चोरी

करने वाले आदमी और औरत के हाथ काट दिया जाए। अब सवाल पैदा होता है कि दोनों हाथ काटें या एक हाथ? और अगर एक हाथ काटें तो दहिना काटें या बाँया? फिर उसे काटे तो कहां से? बगल से या कोहनी से या कलाई से? या इनके बीच में किसी जगह से? फिर कितने माल की कीमत की चोरी पर हाथ काटें? इस मसअला की मुकम्मल वज़ाहत (पूर्ण विवरण) हदीस में ही मिलती है, मालूम हुआ कि कुरान करीम को हदीस के बेगैर नहीं समझा जा सकता।

इसी तरह कुरान करीम (सूरह अलजुमा) में इरशाद है कि जब जुमा की नमाज़ के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ दौड़ो और व्यापार छोड़ दो। सवाल यह है कि जुमा का दिन कौन-सा है? यह आज्ञान कब दी जाए? उसके शब्द क्या हों? जुमा की नमाज़ कब अदा की जाए? इस को कैसे पढ़ें? व्यापार की क्या क्या नियम हैं? इस मसअला की मुकम्मल वज़ाहत हदीसों में ही ज़िक्र हैं।

नुज़ूले कुरान की स्थिति का बयान, विभिन्न सूरतों और आयात के पढ़ने की खास फज़ीलत का ज़िक्र, आयात का शाने नुज़ूल, कुरान करीम में मज़कूर नबियों और उनकी उम्मतों के वाक़यात की तफसील, इसी तरह कुरान की हिफाज़त के मराहिल (चरणों) का बयान हदीसों में ही तो है इसलिए हदीस के बेगैर कुरान करीम को कैसे समझा जा सकता है?

एक स्पष्टीकरण: अल्लाह तआला ने हमें कुरान करीम में तदब्बुर और तफक्कुर (सोच विचार) करने का हुकुम दिया है मगर यह तदब्बुर और तफक्कुर पहले मुफस्सिर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातों और अमल की रौशनी में ही होना चाहिए क्योंकि अल्लाह तआला ही ने बहुत सी जगहों पर इरशाद फरमाया है कि ऐ नबी! यह किताब हमने आप पर नाज़िल फरमाई है ताकि आप

इस कलाम को खोल खोल कर लोगों के लिए बयान कर दें और हमारा यह ईमान है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी इस जिम्मेदारी को बखुबी अंजाम दिया। लेकिन कुछ हज़रात कुरान करीम की तफसीर में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक्वाल और इरशादात को कमज़ोर करार देकर अपनी राय थोपना शुरू कर देते हैं जो कि सरासर गलत है। यकीनन हमें कुरान करीम को समझ कर पढ़ना चाहिए क्योंकि यह किताब हमारी हिदायत और रहनुमाई के लिए अल्लाह तआला ने नाज़िल फरमाई है। और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरान करीम के अहकाम खोल खोल कर बयान फरमा दिए हैं लेकिन हमारे लिए जरूरी है कि जिन मसाएल में भी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक्वाल या आमाल से रहनुमाई मिल सकती है चाहे हदीस की सनद में थोड़ी कमज़ोरी भी हो। इन मसाएल में अपने इजतिहाद और कयास और अपने अक्ली घोड़े दौड़ाने के बजाए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक्वाल और आमाल के मुताबिक ही अमल करें। नए नए मसाएल के हल के लिए कुरान करीम में तदब्बुर और तफक्कुर (सोच विचार) और हदीस नबवी के ज़खीरा में गोता अंदोज़ी जरूर करें मगर कुरान और हदीस को एक तरफ रख कर नहीं बल्कि कुरान और हदीस की रौशनी ही में।

एक संदेह: कुछ हज़रात कुरान करीम की चंद आयात से गलत मफहूम लेकर यह बयान करने की कोशिश करते हैं कि कुरान करीम में हर मसअला का हल है और कुरान करीम को समझने के लिए हदीस की कोई खास जरूरत नहीं है। हालांकि हदीस भी कुरान करीम की तरह शरीअते इस्लामिया में दलील (तर्क) है, जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने कुरान करीम में बहुत सी जगहों पर पूर्ण विवरण के

साथ ज़िक्र किया है। तथा कुरान करीम में यह कहीं नहीं कहा है कि जो कुरान में हो बस उसी पर अमल करना लाजिम है बल्कि कुरान करीम में अल्लाह तआला ने सैकड़ों आयात में “अल्लाह और अल्लाह के रसूल की इताअत” का हुकुम दिया है, बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत को अपनी इताअत करार दिया है। अगर कुरान करीम ही हमारे लिए काफी है तो फिर अल्लाह तआला ने कुरान करीम में जगह जगह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत का हुकुम क्यों दिया है?

दोसरा संदेह: कुछ हज़रात सनद हदीस की बुनियाद पर हुई हदीसों की किस्में या रावियों को सिकह (भरोसेमंद) करार देने में मुहद्देसीन और फुकहा के इख्तिलाफ (मतभेद) की वजह से हदीस को ही शक और शुबहा (संदेह) की निगाह से देखते हैं हालांकि उन्हें मालूम होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम को क़यामत तक आने वाले तमाम अरब और गैर अरब की रहनुमाई के लिए अपने आखरी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फरमाया और क़यामत तक उसकी हिफाज़त का वादा किया है। और इसी कुरान करीम में अल्लाह तआला ने बहुत सी जगहों पर इरशाद फरमाया है कि ऐ नबी! यह किताब हमने आप पर नाज़िल फरमाई है ताकि आप इस कलाम को खोल खोल कर लोगों के लिए बयान कर दें। तो जिस तरह अल्लाह तआला ने कुरान करीम के शब्दों की हिफाज़त की है, उसके मानी और मतलब जो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान फरमाए हैं वह भी क़यामत तक महफूज़ रहेंगे, इंशाअल्लाह। कुरान करीम के शब्दों के साथ उसके मानी और मतलब की हिफाज़त भी मतलूब है वरना नुज़ूले कुरान का उद्देश्य ही ख़तम हो जायेगा।

कुरान करीम से संबंधित जानकारी:

मनजिलें: कुरान करीम में ७ मंजिलें हैं। यह मंजिलें इसलिए निरधारित की गई हैं ताकि जो लोग एक सप्ताह में खत्म कुरान करीम करना चाहें तो वह रोज़ाना एक मंजिल तिलावत फरमाएँ।

पारे: कुरान करीम में ३० पारे हैं। जो हज़रात एक माह में कुरान करीम खत्म करना चाहें वह रोज़ाना एक पारा तिलावत फरमाएँ। बच्चों को कुरान करीम सिखने के लिए भी इससे सहूलत होती है।

सूरतें: कुरान करीम में ११४ सूरतें हैं। हर सूरत के शुरू में बिस्मिल्लाह लिखी हुई है, सिवाए सूरह तौबा के। सूरह अन नमल में बिस्मिल्लाह एक आयत का भाग भी है, इस तरह कुरान करीम में बिस्मिल्लाह की तादाद भी सूरतों की तरह ११४ ही है। इन तमाम सूरतों के नाम भी हैं जो बतौर अलामत रखे गए हैं बतौर उनवान (शीर्षक) नहीं। मसलन सूरतुलफील का मतलब यह नहीं कि वह सूरह जो हाथी के विषय पर नाज़िल हुई, बल्कि इसका मतलब सिर्फ यह है कि वह सूरह जिसमें हाथी का जिक्र आया है। इसी तरह सूरतुलबकर का मतलब वह सूरह जिसमें गाए का जिक्र आया है।

आयात: कुरान करीम में छः हज़ार से कुछ ज्यादा आयात हैं।

सजदा-ए-तिलावत: कुरान करीम में १४ आयात हैं, जिनकी तिलावत के समय और सुनने के समय सजदा करना वाजिब हो जाता है।

मक्की और मदनी आयात और सूरतें: मदिना हिजरत करने से पहले तकरीबन १३ साल तक कुरान करीम के नुज़ूल की आयात और सूरतों को मक्की और मदिना मुनव्वरा पहुंचने के बाद तकरीबन १० साल तक कुरान करीम के नुज़ूल की आयात और सूरतों को मदनी कहा जाता है।

कुरान करीम पढ़ने के फज़ाइल:

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया “कुरान का माहिर जिसको खूब याद हो, खूब पढ़ता हो उनका हशर फरिशतों के साथ क़यामत के दिन होगा।”

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया क़यामत के दिन साहिबे कुरान से कहा जाएगा कि कुरान पढ़ता जा और जन्नत के दरजों पर चढ़ता जा और ठहर ठहर कर पढ़ जैसा कि तो दुनिया में ठहर ठहर कर पढ़ता था। सो तेरा मक़ाम वही होगा जहां अखरी आयत पर पहुंचे। (मुस्लिम)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो व्यक्ति कुरान पढ़े और उसपर अमल करे उसके माता-पिता को क़यामत के दिन ताज पहनाया जाएगा, जिसकी रौशनी सूरज की रौशनी से भी ज्यादा होगी। अगर वह सूरज तुम्हारे घरों में हो तो क्या गुमान है तुम्हारा उस व्यक्ति के बारे में जो खुद इसपर अमल पैरा हो। (मुसनद अहमद, अबू दाउद)

कुरान करीम को समझ कर पढ़ना:

अल्लाह तआला ने हमें कुरान करीम में तदब्बुर और तफक्कुर (सोच विचार) करने का हूकूम दिया है मगर यह सोच विचार हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कीमती बातों और उनके अमल की रौशनी में ही होना चाहिए क्योंकि अल्लाह तआला ही ने इरशाद फरमाया “यह किताब हमने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ उतारी है ताकि लोगों की जानिब जो हूकूम नाज़िल फरमाया गया है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे खोल खोल कर बयान

कर दें, शायद गौर करें।” (सूरह अन नहल ४४)

“यह किताब हमने आप पर इस लिए उतारी है ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके लिए हर उस चीज़ को वाजेह कर दें जिसमें वह इखतिलाफ कर रहे हैं।” (सूरह अन नहल ६४)

अल्लाह तआला ने इन दोनों आयात में स्पष्ट तौर पर बयान फरमा दिया है कि कुरान करीम के पहले मुफस्सिर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और अल्लाह तआला की तरफ से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह जिम्मेदारी दी गई है कि आप उम्मत मुस्लिमा के सामने कुरान करीम के अहकाम और मसाइल खोल खोल कर बयान करें और हमारा ईमान है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बातों और कार्यों के जरिया कुरान करीम के अहकाम और मसाइल बयान करने की जिम्मेदारी सुन्दरता पूर्वक पूरी की। सहाबा और ताबेईन और तबेताबईन के द्वारा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शब्दों और कार्यों यानी हदीसे नबवी से कुरान करीम की पहली अहम बुनियादी तफसीर (वर्णन) विश्वसनीय ज़राये (स्रोतों) से उम्मत मुस्लिमा को पहुंची है, इसलिए कुरान हदीस के बेगैर नहीं समझा जा सकता है।

कुरान करीम के मज़ामीन (विषय):

उलमा-ए-कराम ने कुरान करीम के मज़ामीन की विभिन्न किस्में जिक्र की हैं, उन मज़ामीन की बुनियादी तकसीम इस तरह है।

(१) अकाएद (मान्यता)

(२) अहकाम (आदेश)

(३) किस्से

कुरान करीम में आम तौर पर सिर्फ उसूल जिक्र किए गए हैं, इसलिए अकाएद और अहकाम की तफसील हदीसों में ही मिलती है यानी कुरान करीम के मज़ामीन को हम हदीसों के बेगैर नहीं समझ सकते हैं।

(१) अकाएद (मान्यता)

तौहीद, रिसालत, आखिरत आदि के मज़ामीन इसी के संदर्भ में आते हैं। अकाएद पर कुरान करीम ने बहुत ज्यादा ज़ोर दिया है और इन बुनियादी अकाएद को विभिन्न शब्दों से बार बार जिक्र फरमाया है। इन के अलावा फरिश्तों पर इमान लाना, आसमानी किताबों पर इमान लाना, तकदीर पर इमान लाना, जज़ा और सज़ा, जन्नत और दोज़ख (नरक), अज़ाबे कब्र, क़यामत की तफसीलात और विभिन्न अकीदों पर कुरान करीम में रौशनी डाली गई है।

(२) अहकाम (आदेश)

इसके अंतर्गत निम्नलिखित अहकाम और उनसे मुतअल्लिक मसाइल आते हैं:

इबादती अहकाम (आदेश): नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज आदि के अहकाम और मसाइल। कुरान करीम में सबसे ज्यादा ताकीद नमाज़ पढ़ने के मुतअल्लिक आयी है। कुरान करीम में नमाज़ की अदाएगी के आदेश के साथ आम तौर पर ज़कात का भी आदेश आया है।

सामाजिक आदेश: मसलन हुक्कूल इबाद (लोगों के अधिकार) की तफसीलात (विवरण)।

आर्थिक अहकाम (आदेश): खरीद और फरोख्त (व्यापार), हलाल और हराम और माल कमाने और खर्च करने के मसाइल।

नैतिक और समाजी अहकाम (आदेश): व्यक्तिगत और सामुदायिक जिन्दगी से सम्बंधित अहकाम और मसाइल।

सियासी अहकाम (आदेश): सरकार और प्रजा के अधिकार से सम्बंधित अहकाम और मसाइल।

अदालती अहकाम (आदेश): सज़ा और दंड के अहकाम और मसाइल।

(३) किस्से

पिछले अम्बिय-ए-कराम और उनकी उम्मतों के वाक्यात (घटनाएं) की तफसीलात (विवरण)।

कुरान करीम और हम:

यह मुकद्दस किताब हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माना से लेकर रहती दुनिया तक मशअले राह (मार्गदर्शक) बनी रहेगी क्योंकि अल्लाह तआला की यह किताब ऐसी है कि ईमानियात, इबादात, मामलात, समाजीयात, और आर्थिक के कानून कुरान करीम में ज़िक्र हैं। हाँ! इन की तफसीलात हदीसों में मौजूद हैं।

मगर बड़े अफसोस की बात है कि हमरा सम्बन्ध इस किताब से प्रतिदिन कम होता जा रहा है। यह किताब हमारी मस्जिदों और घरों में गिलाफों में कैद हो कर रह गई हैं, ना तिलावत है ना तदब्बुर (सोच विचार) है और ना ही उसके अहकाम पर अमल। आज का मुस्लिमामन दुनिया की दौड़ में इस तरह गुम हो गया है कि कुरान करीम के अहकाम और मसाइल को समझना तो दूर की बात है उसकी तिलावत के लिए भी समय नहीं है। अल्लामा इकबाल ने अपने दौर के मुस्लिमानों के हाल पर रोना रोते हुए असलाफ (पूर्वजों) से उस समय के मुस्लिमान की तुलना इन शब्दों में किया था:

वह ज़माने में मुअज्ज थे मुस्लिमा हो कर
और हम खवार हुए तारिके कुरान होकर

आज हम अपने बच्चों की दुनियावी तालिम के बारे में सोचते हैं, उन्हें दुनियावी तालीम देने पर अपनी मेहनत और तवज्जह लगाते हैं, और हमारी नज़र सिर्फ और सिर्फ दुनियावी आराम पर होती है और उस अनन्त (अमर) दुनिया के लिए कोई खास कोशिश नहीं करते मगर सिवाए चंद लोगों के। इसलिए हमें चाहिए कि हम अपना और अपने बच्चों का तअल्लुक कुरान और हदीस से जोड़ें, उसकी तिलावत

का इहतिमाम करें, उलमा की सरपरस्ती (संरक्षकता) में कुरान और हदीस के अहकाम समझ कर उन पर अमल करें और इस बात की कोशिश करें कि हमारे साथ हमारे बच्चे, घर वाले, पड़ोसी, दोस्त और रिश्तेदार भी हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हुए तरीका पर जिंदगी गुजारने वाले बन जाएं।

आज दुनियावी तालीम को इस कदर प्राथमिकता दी जा रही है कि लड़कों और लड़कियों को कुरान करीम नाज़िरह (देख कर पढ़ना) की भी तालीम नहीं दी जा रही है क्योंकि उनको स्कूल जाना है, होमवर्क करना है, प्रोजेक्ट तैयार करना है, इमतिहानात की तैयारी करनी है वगैरह वगैरह यानी दुनियावी जिंदगी की तालीम के लिए हर तरह की जान, माल और समय की कुर्बानी देना आसान है लेकिन अल्लाह तआला के कलाम को सीखने में हमें कठिनाई महसूस होती है। ज़रा सोचें कि कुरान करीम अल्लाह तआला का कलाम है जो उसने हमारी रहनुमाई (मार्गदर्शन) के लिए नाज़िल फरमाया और उसके पढ़ने पर अल्लाह तआला ने बड़ा सवाब रखा है।

अल्लाह तआला हम सबको हिदायत अता फरमाए और कुरान करीम को समझने वाला और कुरान और हदीस के अहकाम पर अमल करने वाला बनाए, आमीन।

सूरह अल-अलक़ (इकरा)

سورة العلق

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ (١) خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ (٢)
إِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ (٣) الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ (٤) عَلَّمَ الْإِنْسَانَ
مَا لَمْ يَعْلَمْ (٥) كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنَافٍ (٦) أُنْزِلَ فِيهِ
الْقُرْآنُ الْعَرَبِيُّ (٧) إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ (٨) أَرَأَيْتَ الَّذِي
يَنْهَىٰ (٩) عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ (١٠) أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَىٰ
الْهُدَىٰ (١١) أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ (١٢) أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ
وَتَوَلَّىٰ (١٣) أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ (١٤) كَلَّا لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ
لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ (١٥) نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ (١٦) فليَدْعُ
نَادِيَهُ (١٧) سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ (١٨) كَلَّا لَا تَطِعُهُ وَاسْجُدْ
وَاقْتَرِبْ ﴿١٩﴾

सूरह 'अल-अलक़' (इक़रा) की संक्षिप्त तफ़सीर

सूरह अलक़ का अनुवाद: “पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने सबकुछ पैदा किया। उसने इंसान को जमे हुए खून (रक्त) से पैदा किया है। पढ़ो, और तुम्हारा रब सबसे ज़्यादा दयालु (कृपालु) है, जिसने क़लम से शिक्षा दी, इंसान को उन बातों की शिक्षा दी जिनको वह जनता भी नहीं था। सच्चाई यह है कि इंसान खुली बगावत (विद्रोह) कर रहा है, क्योंकि उसने अपने आप को बेनियाज़ (निःस्वार्थी) समझ लिया है। सच्ची बात तो यह है कि तुम्हें अपने रब ही की तरफ़ लोटकर जाना है। भला तुमने उस व्यक्ति को भी देखा जो एक बन्दे को मना करता है जब वह नमाज़ पढ़ता है? भला बताओ कि अगर वह (नमाज़ पढ़ने वाला) हिदायत (सीधे रास्ते) पर हो, या तक्रवे (नेक कार्य) का हुक्म (आदेश) देता हो, (तो क्या उसे रोकना गुमराही नहीं?)। भला बताओ कि अगर वह (रोकने वाला) हक़ (सच बात) को झूठलाता हो और मुंह मोड़ता हो। क्या उसे यह मालूम नहीं है कि अल्लाह देख रहा है? होशियार! (सावधान!) अगर वह न रुका, तो हम (उसे) पेशानी (माथे) के बाल पकड़ कर घसीटेंगे, उस पेशानी (माथे) के बाल जो झूठी है, गुनाहगार (पापी) है, अब वह बुला ले अपने मजलिस (सभा) वालों को! हम दोज़ख़ (नरक) के फ़रिश्तों को बुला लेंगे। बिल्कुल नहीं! उसकी बात न मानो और सजदा करो और क़रीब हो जाओ।

सबसे पहली वही इस सूरह की पहली पाँच आयते हैं, जो हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर रमज़ान के महीने में “ग़ार-ए-हि़रा” में उस समय उतरी थीं जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की उम्र-ए-मुबारक ४० वर्ष की थी। छठी आयत से सूरह के आखिर तक जो आयात हैं वह “गार-ए-हिरा” की घटना के फाफ़ी बाद उतरी थीं और उनकी घटना यह है कि “अबु जहल” हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सख़्त (कठोर) दुश्मन था। एक दिन हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम “हरम” में नमाज़ पढ़ रहे थे तो उसने आपको नमाज़ पढ़ने से मना किया और यह भी कहा कि अगर आपने नमाज़ पढ़ी तो मैं (मआज़ल्लाह) आपकी गर्दन को पैर से कुचल दूँगा, इस मौक़े (अवसर) पर यह आयात उतरी थीं जिनमें उसको बहुत सख़्त (कठोर) लहजे (अंदाज़) में जवाब दिया गया कि वह अपनी हरकत से रुक जाए, वरना (अन्यथा) उसकी पेशानी (माथे) के बालों को पकड़कर घसीट दिया जाएगा।

हदीस की कताबों में आई हुई अहदीस की रोशनी में जमहूर उलमा की सहमति है कि सबसे पहली वही सूरह “अलक़” की पहली पाँच आयात (यानी “इक़रा” से “मा लम यअलम” तक) उतरी थीं, इसके बाद लगभग ढाई साल (वर्ष) तक वही का सिलसिला टूट गया था, वही की देरी और रुकने की वजह से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत परेशानी हुई थी, फिर उसके बाद सूरह “अलमुद्दस्सिर” की पहली कुछ आयतें उतरी थीं। कोई पूरी एक सूरह जो सबसे पहले उतरी है वह सूरह “अल-फातिहा” है, इस वजह से सूरह “अलमुद्दस्सिर” की पहली कुछ आयात या सूरह “अल-फातिहा” को कुछ उलमा ने पहली वही कह दिया है, लेकिन सही (हकीकी) बात यह है कि सूरह “अलक़” की पहली पाँच आयात ही सबसे पहली वही है। हदीस की कताबों में पहली वही के उतरने की घटना इस तरह बयान की गई है जिसके ज़रिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नुबुव्वत और रिसालत से नवाज़ा गया। सबसे पहले आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम को सच्चे ख्वाब (सपने) आने लगे थे, यानी जैसा आप ख्वाब (सपने) में देखते वैसी ही घटना पैश आती थी, उसके बाद नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का मुकर्रमा के प्रसिद्ध (मशहूर) पहाड़ “जबल-ए-नूर” की ऊँचाई पर स्थित “गार-ए-हिरा” में अल्लाह की इबादत करने लगे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ दिनों का खाना साथ ले जाते और “गार-ए-हिरा” में अकेले अल्लाह की इबादत करते, तोशा (खाने पीने का सामान) समाप्त होने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ लाते और फिर कुछ दिनों के लिए खाना साथ ले जाते। एक दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम “गार-ए-हिरा” में अल्लाह की इबादत में लगे हुए थे कि अचानक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और आप से कहा: “इकरा” यानी पढ़िए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: “मैं पढ़ने वाला नहीं हूँ”, हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बाँहों में लेकर दबाया और छोड़ दिया, फिर वही बात कही: “इकरा”, हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर वही जवाब दिया, हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दोबारा बाँहों में लेकर दबाया, फिर छोड़ दिया और फिर कहा: “इकरा”, हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर वही जवाब दिया, मैं पढ़ने वाला नहीं हूँ, तीसरी बार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बाँहों में लेकर दबाया और छोड़कर सूरह “अलक़” की पहली पाँच आयात पढ़ीं, इसके बाद हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम चले गए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस स्थिति में घर तशरीफ़ लाए कि आपका दिल कांप रहा था,

हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आकर फ़रमाया: मुझ पर कपडा डाल दो, मुझ पर कपडा डाल दो। हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कपड़े डाले, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर उतरने वाली अल्लाह तआला की वही की वजह से जो हालत (परिस्थिति) हो गई थी, जब समाप्त हो गई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरी घटना हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को सुनाई, हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा (जो पढ़ी लिखी और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उम्र में पन्द्रह साल बड़ी थीं) ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी और फिर अपने चचेरे भाई “वरका इब्न-ए-नौफल” के पास ले गईं जो बुतपरस्ती से तौबा करके ईसाई हो गए थे, क्योंकि उस समय सच्चा दीन (धर्म) था। उस समय के बड़े धार्मिक निर्देशक (मार्गदर्शक) “वरका इब्न-ए-नौफल” ने जब पूरी घटना सुनी तो कहा कि यह वाही फ़रिश्ता है जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर उतरा था और कहा कि काश मैं आपकी नुबुव्वत के ज़माने में शक्तिशाली होता और काश कि मैं उस समय ज़िंदा रहता जब आप की क़ौम (बिरादरी) आपको वतन से निकाल देगी। हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आश्चर्य से पुछा कि क्या मेरी क़ौम मुझे निकाल देगी? “वरका इब्न-ए-नौफल” ने कहा कि नी:संदेह (यकीनन) निकाल देगी, क्योंकि जब भी कोई व्यक्ति “दीन-ए-हक़” को लेकर आया है जो आप लाए हैं तो उसकी क़ौम ने उसको सताया है और अगर मैंने वह ज़माना पाया तो मैं आपकी भरपूर मदद (सहायता) करूँगा। “वरका इब्न-ए-नौफल” इस घटना के कुछ दिन बाद ही इंतिकाल कर गए (मर गए)।

“इकरा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी खलक़:” “पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने सबकुछ पैदा किया, अल्लाह तआला ने कुरान-ए-करीम की

पहली वही की शुरुआत “इक्रा” के शब्द से फ़रमा कर क़यामत तक आने वाले इंसानों को इल्म (पढ़ाई) के ज़ेवर से सजने का पैग़ाम दिया और “बिस्मि रब्बिकल्ज़ी ख़लक़” और इसके बाद वाली आयात से उस इल्म (शिक्षा) के बारे में वर्णन भी फ़रमा दिया कि वास्तविक ज्ञान वह है जिसके ज़रिए इंसान अपने हकीकी (वास्तविक) ख़ालिक़ (पैदा करने वाले), मालिक और राज़िक़ को पहचाने, जिसने एक नापाक (अशुद्ध) बूँद से इंसान को एक ख़ूबसूरत (सुंदर) शक़ल (रूप) में पैदा फ़रमाया। बहरहाल पहली वही से अल्लाह तआला ने इंसान को यह शिक्षा दी कि इल्म (ज्ञान) सबसे पहला और बुनियादी उद्देश्य (मक़सद) मौला-ए-हकीकी को मानकर रब चाही ज़िंदगी गुज़ारना है, अल्लाह तआला ने जिस जगह (स्थान) पर भी क़ुरान में इल्म (ज्ञान) का उल्लेख किया है वहाँ पर अपनी ज़ात या नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत का उल्लेख किया है। जैसे “नून वल क़लमि वमा यसतुरून” (सूरह अलक़लम) में अल्लाह तआला ने क़लम की क़सम खाकर लिखने पढ़ने की विशेष अहमियत (महत्व) को रहती दुनिया तक स्पष्ट कर दिया है। “वल क़लमि” से तक़दीर (भविष्य) का क़लम है, और “वमा यसतुरून” से वह फ़ैसलें (निर्णय) मुराद हैं जो फ़रिश्ते लिखते हैं, मालूम हुआ कि हकीकी (वास्तविक) इल्म (ज्ञान) वह है जो तक़दीर (भविष्य) की शिक्षा देता हो और स्पष्ट है कि क़ुरान और हदीस और इन दोनों से लिया हुए विज्ञान में ही तक़दीर (भविष्य) पर ईमान लाने की शिक्षा मिलती है।

सूरह “अज्जुमर” आयत: (९) में अल्लाह तआला फ़रमाता है: “कुल हल यसतविल्लाज़ीना याअलमूना वल्लज़ीना ला याअलमून” क्या अहल-ए-इल्म और न जानने वाले बराबर हो सकते हैं? ज़िक़ की हुई आयत की शुरुआत में और इससे पहली आयत में अल्लाह तआला ने

फ़रमाया कि क्या काफ़िर व्यक्ति उस मोमिन के बराबर हो सकता है जो रात में इबादत करता है और आखिरत की ज़िन्दगी को सामने रखकर यह दुनियावी ज़िन्दगी गुज़ारता है। इसके बाद आने वाली आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “कुल या इबादियल्लज़ीना आमनुत्तकू रब्बकुम” ऐ मेरे ईमान वाले बन्दो! अपने रब से डरो,” मालूम हुआ कि जानने वाले की न जानने वाले पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) उस समय होगी जब कि जानने वाला अल्लाह को मानकर ज़िन्दगी गुज़ारने वाला बने। अल्लाह तआला का फ़रमान है: “यरफ़इल्लाहुल्लज़ीन आमनू मिन्कुम वल्लज़ीना ऊतुल इल्मा दरजात” (सूरह “अलमुजादला”: ११), “तुम में से जो लोग ईमान लाए हैं और जिन को इल्म दिया गया है अल्लाह उनके दर्जों को ऊँचा करेगा”। मालूम हुआ कि इल्म (ज्ञान) उसी स्थिति में इज्ज़त (सम्मान) का कारण है जब कि जानने वाला ईमान की महान दौलत से मालामाल हो। अल्लाह तआला अपने हबीब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संबोधित करते हुए फ़रमाता है: “वला तजअल बिलकुरआनि मिन कब्लि अयुक्ज़ा इलैका वहयुह, व कुर्रब्बि ज़िदनी इल्मा”। (सूरह ताहा: ११४), ऐ नबी! जब कुरान वही के ज़रिए उतर रहा हो तो उसकी पूरा होने से पहले जल्दी न किया करो और यह दुआ करते रहा करो कि “ऐ मेरे रब! मेरे इल्म (ज्ञान) में तरक्की (उन्नति) अता फ़रमा”। इस आयत से जहाँ यह मालूम हुआ कि इल्म (ज्ञान) ऐसा समुन्द्र है जिसका कोई किनारा नहीं, और इंसान को हर समय इल्म (ज्ञान) में तरक्की (उन्नति) की कोशिश (प्रयास) और दुआ करते रहना चाहिए, चाहे वह इल्म (ज्ञान) की बुलंदियों पर पहुँच जाए, वहीं यह मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ कि कुरान और हदीस और इन दोनों से लिया हुआ इल्म (ज्ञान) ही हकीकी (वास्तविक) इल्म है।

“खलकल इन्साना मिन अलकः” अल्लाह तआला ने मखलूक (जीवों) के जन्म को ज़िक्र करने के बाद इंसान की पैदाइश (जन्म) को स्थायी रूप से ज़िक्र किया है, क्योंकि इंसान को अशरफुल मखलूकात (महान) बनाया है और वह पूरी काएनात का सारांश (अर्थ) भी है, इसीलिए तमाम अंबिया-ए-किराम इंसान ही होते हैं और स्पष्ट तौर पर पूरी काएनात अल्लाह के हुक्म (आदेश) से इंसानों के ही अधीन (अंतर्गत) है। इंसान की पैदाइश कई दौर से गुजरती है, इसकी शुरुआत मिट्टी से हुई, फिर इंसान के शुक्राणु (वीर्य) यानी अशुद्ध बूंद से पैदा होता है जो बाद में “अलक” यानी जमा हुआ खून (रक्त) बन जाता है, फिर गोश्त और हड्डियाँ आदि पैदा की जाती हैं। “अलक” यानी जमा हुआ खून (रक्त) इंसान की पैदाइश की एक बीच की परिस्थिति है, जो यहाँ ज़िक्र की गई है, इंसान की पैदाइश के विभिन्न चरणों के बारे में अल्लाह तआला दूसरे स्थान पर इरशाद फ़रमाता है: ऐ लोगो! अगर तुम्हें दोबारा जिंदा होने के बारे में कुछ शक (संदेह) है तो (ज़रा सोचो कि) हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुतफ़े (शुक्राणु, वीर्य) से, फिर एक जमे हुए खून (रक्त) से, फिर एक गोश्त (मांस) के लोथड़े (टुकड़े) से जो (कभी) पूरा नहीं बनता, ताकि हम तुम्हारे लिए (तुम्हारी) हकीकत (असलियत) खोलकर बता दें, और हम (तुम्हें) माताओं के पेट में जब तक चाहते हैं, एक निर्धारित समय तक ठहराए रखते हैं, फिर तुम्हें एक बच्चे के आकार में बाहर लाते हैं, फिर (तुम्हें पालते हैं), ताकि तुम अपनी भरपूर उम्र तक पहुँच जाओ और तुम में से कुछ वह हैं जो पहले ही दुनिया से उठा लिए जाते हैं और तुम ही में कुछ वह होते हैं जिनको बहुत ज़्यादा बुढ़ापे तक लोटा दिया जाता है। (सूरह हज़: ५)

“अल्लज़ी अल्लमा बिलक़लम”: इंसान की पैदाइश के तुरंत बाद शिक्षा का ज़िक्र किया गया, क्योंकि शिक्षा ही के ज़रिए इंसान दूसरे जीव जन्तु से चुनिंदा (विशिष्ट) होता है। शिक्षा के दोनों महत्वपूर्ण ज़राए (सूत्रों) (ज़बानी शिक्षा और क़लमी शिक्षा) को इस आयत में ज़िक्र फ़रमा कर अल्लाह तआला ने मानवता को यह पैग़ाम (संदेश) दिया कि शिक्षा के लिए सभी जाइज़ (वैध) तरीकों को इस्तेमाल करना चाहिए। “अल्लमल इन्साना मा लम याअलम” इंसान जब अपनी माँ के पेट से पैदा होता है तो वह इस स्थिति में होता है कि कुछ भी नहीं जानता, फिर वह अल्लाह की मखलूक़ात से फ़ायदा उठाकर ही इल्म (शिक्षा) प्राप्त करता है, यानी इल्म (ज्ञान) उसका अपना निजी (स्वयं) नहीं है, बल्कि अल्लाह तआला का दिया हुआ है।

कल्ला इन्नल इन्साना लयतगा, अरआ हुसतगना”: यह आयत हालांकि अबु जहल के बारे में उतरी है, लेकिन इस विद्रोही (सर्कश) का नाम ज़िक्र के बजाए अल्लाह तआला ने आम इंसानों की एक कमज़ोरी को बयान किया है कि जबतक वह दूसरों का ज़रूरतमंद रहता है तो सीधा चलता है और जब उसको कुछ दौलत (धन) या पद मिल जाता है तो बगावत (विद्रोह) करने लगता है, लोगो पर जुल्म (अन्याय) करने लगता है और अपने आप को बेनियाज़ (निःस्वार्थी) समझने लगता है।

“इन्ना इला रब्बिकरुजआ:” यानी इन्सान को मालूम होना चाहिए कि आखिरकार (अंत में) उसको अपने रब (अल्लाह) की तरफ़ ही लौटकर जाना है, तो फिर क्यों अपनी अकड़ दिखाता है।

अराअयतल्लज़ी यनहा:” जब अल्लाह तआला ने नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ पढ़ने का हुक्म (आदेश) दिया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ना शुरू की तो

“अबु जहल” ने आपको नमाज़ पढ़ने से मना किया और धमकी दी कि अगर उसके बाद नमाज़ पढ़ेंगे और सजदा करेंगे तो मआज़ल्लाह आपकी गर्दन को पैर से कुचल देगा। इसके जवाब में यह आयात उतरा। हदीसों में आता है कि अगर वह अपनी इस नापाक (गंदी) गतिविधि (प्रक्रिया) से न रुकता तो फ़रिश्ते उसके चीथड़े उड़ा देते। शुरुआती वही यानी पाँच आयात के बाद ही इस घटना का उल्लेख करके अल्लाह तआला ने सबको यह शिक्षा दी कि अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने के बाद सबसे महत्वपूर्ण और पहला कर्तव्य नमाज़ है। तथा हदीसों में आता है कि क़यामत के दिन सबसे पहले नमाज़ ही का हिसाब होगा, तो “वसजुद वक्र तरिब” कहकर अल्लाह तआला ने क़यामत तक के लिए ऐलान कर दिया कि दुनिया में अल्लाह तआला से सबसे ज़्यादा नज़दीकी (निकटता) सजदे की हालत (स्तिथि) में होती है।

अल्लाह तआला हमें नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों की ठंडक यानी नमाज़ का अहतिमाम (पाबन्दी) करने वाला बनाए. आमीन।

सूरह अलक़द्र

سورة القدر

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ (١) وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ
الْقَدْرِ (٢) لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ (٣) تَنَزَّلُ
الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ (٤) سَلَامٌ
هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ (٥)

सूरह 'अलक़द्र' की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)

कुरान करीम का शबे क़द्र में नाज़िल होना

सूरह अलक़द्र का अनुवाद: बेशक हमने कुरान पाक को शबे क़द्र में उतारा है (यानी कुरान करीम को लौहे महफूज़ से आसमाने दुनिया पर इस रात में उतारा है।) आपको कुछ मालूम है कि शबे क़द्र कैसी बड़ी चीज़ है, (यानी इस रात की बड़ाई और फज़ीलत का आपको इल्म भी है, कितनी खूबियां और किस क़द्र फज़ाइल इसमें हैं। इसके बाद कुछ फज़ाइल (गुण) का ज़िक्र फरमाते हैं,) शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है (यानी हज़ार महीनों तक इबादत करने का जितना सवाब है उससे ज़्यादा शबे क़द्र की इबादत का है और कितना ज़्यादा है? यह अल्लाह ही को मालूम है।) इस रात में फरिशते और हज़रत ज़िब्रइल अलैहिस्सलाम उतरते हैं। अपने परवरदिगार के हुकुम से हर अच्छे मामले को लेकर ज़मीन की तरफ उतरते हैं। खैर और बरकत फजर के समय तक रहती है।

रमज़ान की रातों में एक रात शबे क़द्र कहलाती है जो बहुत ही खैर और बरकत वाली रात है और जिसमें इबादत करने को कुरान करीम (सूरह क़द्र) में हज़ार महीनों से अफज़ल बतलाया गया है। हज़ार महीनों के ८३ साल और ४ महीने होते हैं, गोया इस रात की इबादत पूरी ज़िन्दगी की इबादत से ज़्यादा बेहतर है और हज़ार महीना से कितना ज़्यादा है? यह सिर्फ अल्लाह ही को मालूम है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात से मालूम होता है कि यह रात रमज़ान के आखिरी अशरा (दस दिन) में होती

हैं, इसलिए इस आखिरी अशरे (दस दिन) का एक लम्हा भी बरबाद न होने दें। पांचों नमाजों को जमाअत से पढ़ने की व्यवस्था करें, दिन में रोज़ा रखें, रात का बड़ा भाग इबादत में गुजारें, तरावीह और तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने का एहतेमाम करें, अल्लाह तआला का ज़िक्र करें, अपने और उम्मत मुस्लिमा के लिए दुआएं करें और कुरान करीम की तिलावत ज़्यादा से ज़्यादा करें।

सूरह अलक की इब्तिदाई चंद आयात “पढ़ो अपने उस परवरदिगार के नाम” से कुरान करीम के नुज़ूल का प्रारंभ हुआ। इस सूरह में बयान किया कि यह कुरान करीम रमज़ान की एक बाबरकत रात में उतरा है जैसा कि **सूरह दुखान की आयत ३** “हमने एक मुबारक रात में कुरान करीम को उतारा है” और **सूरह बकरह की आयत १८५** “रमज़ान के महीना में कुरान करीम नाज़िल हुआ (उतरा) है” में यह मज़मून स्पष्ट रूप से ज़िक्र है।

शबे क़दर के दो मानी हैं और दोनों ही यहां मुराद हैं। एक यह कि वह रात है जिसमें तकदीरों के फैसले किए जाते हैं जैसा कि **सूरह दुखान आयत ४** में है “इसी रात में हर हिकमत वाले काम का फैसला किया जाता है” दूसरे मानी यह है कि बड़ी महान और शरफ रखने वाली रात है।

इस रात में कुरान करीम के नाज़िल होने का मतलब लौहे महफूज़ (अति सुरक्षित स्थान) से आसमाने दुनिया पर उतरना है या इस रात में पूरा कुरान करीम वही लेकर आने वाले फरिशतों के हवाला किया

जाना मुराद है या यह मतलब है कि कुरान करीम के नुज़ूल की शुरुआत इस रात में हुई और फिर वाक्यात और हालात के मुताबिक़ थोड़ा थोड़ा करके २३ साल के अरसे (अवधि) में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ।

शबे क़दर की फज़ीलत और अहमियत के मुतअल्लिक़ कई हदीसें हदीसों की किताबों में मौजूद हैं, यहां संक्षेप की वजह से चंद हदीसें ज़िक़र कर रहा हूं, अल्लाह तआला हम सबको अमल करने वाला बनाए, आमीन।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो व्यक्ति शबे क़दर में ईमान के साथ और सवाब की नियत से (इबादत के लिए) खड़ा हो, उसके पिछले तमाम गुनाह माफ हो जाते हैं। (बुखारी और मुस्लिम)

खड़े होने का मतलब नमाज़ पढ़ना, कुरान की तिलावत और ज़िक़र आदि में व्यस्त होना है। सवाब की उम्मीद रखने का मतलब यह है कि शोहरत और दिखावे के लिए नहीं बल्कि खालिस अल्लाह की रज़ा प्राप्त करने के लिए अमल करना है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम्हारे ऊपर एक महीना आया है जिसमें एक रात है जो हजार महीनों से अफज़ल है। जो व्यक्ति इस रात से महरूम रह गया गोया सारे ही खैर से महरूम रह गया और उसकी भलाई से महरूम (वांछित) नहीं रहता मगर वह व्यक्ति जो हकीकतन महरूम ही है। (इब्ने माजा)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया शबे क़दर को रमज़ान के अखीर अशरे की ताक़ (विषम) रातों में तलाश किया करो। (बुखारी) (मज़क़ूरा हदीस के मुताबिक़ शबे क़दर की तलाश २१वीं, २३वीं, २५वीं, २७वीं और २९वीं रातों में करनी चाहिए)।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि या रसूलल्लाह! अगर मुझे शबे क़दर का पता चल जाये तो क्या दुआ मांगू हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ये दुआ पढ़ो (اللَّهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي) ऐ अल्लाह बेशक तू माफ करने वाला है और माफ करने को पसंद करता है तो मुझे भी माफ़ फरमादे। (इब्ने माजा)

शबे क़दर की दो विशेष पहचान:

शबे क़दर की दो अहम अलामतें हदीसों की किताबों में ज़िक्र हैं, एक यह कि रात न बहुत ज़्यादा गर्म और न बहुत ज़्यादा ठंडी होती है, और दूसरी अलामत यह है कि शबे क़दर के बाद सुबह को सूरज के निकलने के समय सूरज की किरनें नहीं होती हैं।

नोट: चाँद के निकलने की जगह विभिन्न होने के सबब विभिन्न देशों और शहरों में शबे क़दर विभिन्न दिनों में हो तो इसमें कोई इशकाल (संदेह) नहीं, क्योंकि हर जगह के एतेबार से जो रात शबे क़दर करार पाएगी उस जगह उसी रात में शबे क़दर की बरकात प्राप्त होगी, इंशाअल्लाह।

सूरह अलबय्यिना

سورة البينة

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنْفَكِّينَ حَتَّى
تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ (١) رَسُولٌ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُّطَهَّرَةً (٢) فِيهَا
كُتِبَ قِيمَةٌ (٣) وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَةُ (٤) وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ
حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقِيَمَةِ (٥) إِنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ
فِيهَا أُولَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ (٦) إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ (٧) جَزَاؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ
عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ (٨)

सूरह 'अलबय्यिना' की संक्षिप्त तफ़सीर (वर्णन)

सूरह अलबय्यिना का अनुवाद: अहल-ए-किताब और मुशरिकीन में से जो लोग काफ़िर थे, वह उस समय तक बाज़ (रुकने) आने नहीं थे जबतक कि उनके पास रोशन दलील (तर्क) न आती, यानी एक अल्लाह का रसूल जो पाक (पवित्र) सहीफ़े पढ़कर सुनाए, जिन में सीधी सच्ची तहरीरें (लेख) लिखी हों। और जो अहल-ए-किताब थे उन्होंने अलग रास्ता उसी के बाद अपनाया जब उनके पास रोशन दलील (तर्क) आ चुकी थी और उन्हें इसके अलावा कोई और हुक्म (आदेश) नहीं दिया गया था कि वह अल्लाह की इबादत इस तरह करें कि बन्दगी (उपासना) सन्तुष्ट होकर केवल उसी के लिए खालिस (शुद्ध) रखें, नमाज़ पढ़ें और ज़कात अदा करें, और यही सीधी सच्ची उम्मत का दीन है। यकीन जानो कि अहल-ए-किताब और मुशरिकीन में से जिन्होंने कुफ़्र (इंकार) को अपना लिया है, वह जहन्नम (नरक) की आग में जाएंगे जहाँ वह हमेशा रहेंगे। यह लोग पूरी मखलूक में सबसे बुरे हैं। जो लोग ईमान लाए हैं और उन्होंने नेक (अच्छे) काम किये हैं, वह बेशक सारी मखलूक में सबसे बेहतर हैं। उनके रब के पास उनका ईनाम वह सदाबहार जन्नतें (स्वर्ग) हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वहाँ वह हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे खुश होगा और वह उससे खुश होंगे। यह सब कुछ उसके लिए है जो अपने रब का डर दिल में रखता हो।

मुशरिकीन-ए-मक्का और अहल-ए-किताब कौन थे:

हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने (समय) में दो बड़ी जमातें (दल) थीं जिनका ज़िक्र कुरान-ए-करीम में बार बार किया

गया है, मुशरिकीन -ए-मक्का और अहल-ए-किताब। मुशरिकीन-ए-मक्का अल्लाह तआला को खालिक-ए-काएनात (दुनिया को पैदा करने वाला) मानने के बावजूद अल्लाह के साथ दूसरी ज़ातों (वर्गों) को शरीक मानते थे, इसीलिए उन्होंने अपने देवताओं के नाम पर लगभग ३६० ब्रूत (मूर्ति) बनाकर बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) में रख दिए थे जिनकी वह इबादत (प्राथना) किया करते थे, हालांकि वह बैतुल्लाह का ऐहताराम (सम्मान) भी किया करते थे, उसको अल्लाह का घर माना करते थे, उसका तवाफ़ (चक्कर लगाना) किया करते थे, अपने तरीके के अनुसार हज किया करते थे और मक्का के तीर्थयात्रियों की सेवा भी किया करते थे। मुशरिकीन-ए-मक्का हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी बनाए जाने तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शख़्सियत (व्यक्तित्व) से बहुत प्रभावित थे, लेकिन ४० वर्ष की उम्र में जब हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी बनाया गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाप दादा के धर्म को छोड़ने और इस्लाम धर्म को अपनाने की दावत दी तो उनकी बड़ी संख्या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विरोधी हो गई, यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हकीकी (वास्तविक) चचाओं में से केवल दो ही इस्लाम ला सके। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम इन्हीं मुशरिकीन-ए-मक्का के जुलम-व-सितम (उत्पीड़न) के कारण मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा हिजरत (प्रवास / स्थानांतरण) कर गए थे, इसके अलावा ८ वर्ष तक मुशरिकीन-ए-मक्का अपने तरीके के अनुसार बैतुल्लाह का तवाफ़ (चक्कर लगाना) किया करते रहे, हज की अदाएगी करते रहे

और मूर्तियों की पूजा करते रहे, ८ हिजरी में जब किसी खून खराबे के बगैर मक्का मुकर्रमा विजय हुआ तो आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने बौतुल्लाह को बुतों (मूर्तियों) से पाक और साफ किया, ८ हिजरी तक मक्का मुकर्रमा के कुछ लोग इस्लाम ला चुके थे, और अच्छी खासी (ठीक ठाक) संख्या मक्का विजय होने के समय नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के अच्छे बर्ताव को देखकर ईमान ले आई, इस तरह मक्का मुकर्रमा तौहीद का सेंटर (केंद्र) बन गया। ९ हिजरी में जब हज फ़र्ज़ हुआ तो उस वर्ष आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम हज के लिए नहीं गए, परंतु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहू अन्हु की देख रेख में मुसलमानों ने हज की अदाएगी की। १० हिजरी में लगभग एक लाख चोबीस हज़ार सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहू अन्हुम) के साथ आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने हज किया जिसको “हज्जतुल विदा” के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इस हज की अदाएगी के तीन महीने बाद आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम इन्तिकाल फ़रमा गए।

क़ुरान-ए-करीम में अहल-ए-किताब का ज़िक्र (उल्लेख) बहुत ज़्यादा आया है, शरियत-ए-इस्लामिया में आखिरी (अंतिम) नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के साथ हज़रत आदम, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिमुस्सलाम जैसे दूसरे नबियों को भी मानना ज़रूरी है, यानी यह सभी चुने हुए रसूल हैं, लेकिन उनकी शरियत हज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के नबी बनाए जाने के बाद रद्द (निरस्त) हो चुकी है, यानी अब क़यामत तक शरीयत-ए-मुहम्मदिया का पालन किए बगैर सफलता संभव नहीं है। अहले-ए-किताब में से यहूदी

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की औलाद में हुए सभी नबियों (जैसे हज़रत यूसुफ़, हज़रत मूसा, हज़रत हारून, हज़रत दाऊद, हज़रत सुलेमान, हज़रत दान्याल, हज़रत उज़ैर, हज़रत याहया और हज़रत ज़करिया अलैहिमुस्सलाम) को मानते हैं, लेकिन हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी नहीं मानते हैं। अभी तक “तौरैत” को ही अपना धार्मिक ग्रन्थ मानते हैं जो कई हज़ार वर्ष पहले हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर उतरी थी, परंतु वह अभी तक अंतिम नबी के इंतज़ार (प्रतीक्षा) में हैं। दुनिया में इनकी केवल डेढ़ करोड़ की आबादी (जनसंख्या) है जो आम तौर पर इज़राइल और अमेरिका में रहती है। इस समय यहूदी दुनिया में अर्थशास्त्र पर काफ़ी प्रभावशाली हैं। अहल-ए-किताब में ईसाई भी हैं, वह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक सभी नबियों को मानते हैं, लेकिन हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी और रसूल मानने के लिए तैयार नहीं हैं, लगभग दो हज़ार वर्ष पहले हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर उतरी हुई किताब “इंजील” को ही आज तक अपना धार्मिक ग्रन्थ मानते हैं। दोनों आसमानी किताबों (ग्रन्थों) के कई कॉपी (लेख, प्रतिलिपि) इस समय दुनिया में मौजूद हैं, परंतु इन कॉपियों (लेखों) में बहुत ज़्यादा अंतर हैं, यहाँ तक कि इन दोनों किताबों की कोई एक आयत भी ऐसी मौजूद नहीं है जिसके बारे में कॉपियों (लेखों) में अंतर न हो, इसका मुख्य कारण यह है कि यह दोनों किताबें असली शकल में अब दुनिया में मौजूद नहीं हैं। यहूदी और ईसाई की अन्य जनजातियों ने अपने तौर पर विभिन्न बदलाव कर रखे हैं। पश्चिमी लोग तौरैत और इंजील के संग्रहण और इनके

कॉपियों (लेखों) में पाए जाने वाले बहुत ज़्यादा अंतर पर अनदेखेपन से काम लेते हैं, लेकिन कुरान और हदीस पर ऐतराज़ (आपत्ति) करते रहते हैं, हालांकि कुरान और हदीस की सुरक्षा के लिए जो इन्तिज़ामात (व्यवस्था) किए गए हैं उनका तौरैत और इंजील की सुरक्षा के लिए किए गए इन्तिज़ामात (व्यवस्था) से कोई तुलना भी नहीं की जा सकती, फिर भी मुसलमानों का यह अक़ीदा (विश्वास) है कि तौरैत और इंजील आसमानी किताबें (ग्रन्थ) हैं, हालांकि वह इस समय दुनिया में विकृत की हुई ही मौजूद है, जबकि कुरान-ए-करीम की सुरक्षा अल्लाह तआला ने खुद अपने ज़िम्मे रखी है, इसलिए क़यामत तक इसमें कोई बदलाव नहीं हो सकता। कुरान-ए-करीम ही दुनिया में ऐसी किताब है जिसको ज़ुबानी (बिना देखे) याद करने वाले लाखों लोग दुनिया में हर जगह हर समय मौजूद रहते हैं और दुनिया में सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली किताब भी कुरान-ए-करीम ही है।

दुनिया में इस समय सबसे ज़्यादा ईसाई धर्म को मानने वाले हैं जिनकी संख्या दो अरब से ज़्यादा है, दूसरे नंबर पर मुस्लमान हैं, जिनकी संख्या दो अरब से कुछ कम है, एक अनुमान के अनुसार पचास वर्ष बाद मुसलमानों की संख्या सबसे ज़्यादा हो जाएगी। बहरहाल आज दुनिया की ज़्यादातर आबादी (जनसंख्या) का यह ईमान है कि दुनिया में अंबिया-ए-किराम लोगों के मार्गदर्शन के लिए नेतृत्व करते हैं, दुनिया एक दिन समाप्त हो जाएगी और क़यामत में हर इंसान को अपने किये हुए कार्यों का बदला (ईनाम) या सज़ा मिलेगी और अल्लाह तआला ही इस काएनात को पैदा करने वाला है। बुद्धि की मांग भी यही है कि अल्लाह तआला ने जब इन्सान के

अंतर्गत पूरी कायनात कर दी है तो इसके पैदा करने का कोई विशेष उद्देश्य जरूर होना चाहिए, वरना जानवर और इंसान में फ़र्क क्यों? सूरह “अलबय्यिना” को तरतीब (क्रम) के अनुसार सूरह “अल-अलक़” और सूरह “अल-क़दर” के बाद ज़िक्र किया गया है। सूरह “अल-अलक़” से उत्प्रेरणा की शुरुआत हुई, सूरह “अल-क़दर” में कुरान-ए-करीम के नाज़िल (उतरने) होने के समय को ज़िक्र किया गया और सूरह “अलबय्यिना” में बयान किया गया कि यह कुरान-ए-करीम हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरा है। यह ऐसा विशाल कलाम है जिसकी इंसानी कलाम से कोई तुलना नहीं की जा सकती और जिसकी तरह बल्कि इसकी एक सूरह या इसकी एक आयत की तरह पूरी अरब क़ौम मिलकर भी आजतक एक आयत पेश नहीं कर सकी, इसका एक ऐसे व्यक्ति पर उतरना जिसने किसी से पढ़ना लिखना नहीं न सीखा हो, खुद उसके नबी होने की स्पष्ट दलील (तर्क) है।

तौरैत और इंजील में भी हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रसूल और नबी होने का उल्लेख (ज़िक्र) मौजूद है, लेकिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक सभी अंबिया-ए-किराम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बेटे (पुत्र) हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम के घराने से हुए सिवाय हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कि वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के खानदान से हुए। अंतिम नबी हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम के घराने (खानदान) से पैदा नहीं हुए तो केवल इसी ज़िद्द की वजह से यहूदी और ईसाई ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी मानने से इंकार कर दिया।

इस सूरह के शुरू में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है कि अहल-ए-किताब और मुशरिकीन उस समय तक रुकने वाले नहीं थे जबतक कि उनके पास रोशन दलील (तर्क) न आती, यानी एक अल्लाह का रसूल जो अल्लाह की किताब को पढ़कर सुनाए, लेकिन अहल-ए-किताब और मुशरिकीन ने उनके पास रोशन दलील यानी कुरान-ए-करीम आने के बावजूद हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी और रसूल मानने से इंकार कर दिया। इसके बाद अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि कुरान-ए-करीम में बुनियादी नियम (अहकाम) वही हैं जो पहली किताबों (ग्रन्थों) में मौजूद थे, जैसे केवल अल्लाह की इबादत (पूजा) की जाए, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराया जाए, नमाज़ की विशेष व्यवस्था की जाए और ज़कात की अदाएगी की जाए, लेकिन अहल-ए-किताब ने सिर्फ़ जलन (ईर्ष्या) की बुनियाद पर हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह का रसूल मानने से इंकार कर दिया।

इस आयत से मालूम हुआ कि नमाज़ और ज़कात की अदाएगी का हुक्म (आदेश) दूसरी उम्मतों को भी दिया गया था, तथा कुरान-ए-करीम में नमाज़ और ज़कात का हुक्म (आदेश) बार बार आया है, उलमा-ए-किराम ने फ़रमाया है कि नमाज़ तमाम शारीरिक इबादतों में और ज़कात तमाम माली इबादतों में सबसे ज़्यादा अहमियत (महत्व) रखती है, सारे नबियों के सरदार हज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी का काफ़ी भाग नमाज़ की अदाएगी में गुज़रा। अल्लाह तआला ने कुरान-ए-करीम (सूरह अलमुज़म्मिल) में ज़िक्र फ़रमाया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आधी रात या इससे कुछ कम या इससे कुछ ज़्यादा भाग इबादत किया करते थे।

नमाज़-ए-तहज्जुद में लंबे क़याम (खड़े होना), लंबे रुकू और लंबे सजदे की वजह से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दम-ए-मुबारक (पैरों) पर वरम (सूजन) आ जाता था, इसके अलावा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाँचों नमाज़ों के अहतिमाम (व्यवस्था) के साथ नमाज़-ए-वितर (वित्र), नमाज़-ए-इशराक़, नमाज़-ए-चाश्त, नमाज़-ए-अव्वाबीन, तहि़य्यतुल मस्जिद, तहि़य्यतुल वुजू और दूसरी नमाज़ें भी पढ़ा करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरी ज़िंदगी कभी भी “साहिब-ए-निसाब” नहीं हुए जिसके कारण आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ज़कात तो वाजिब नहीं हुई परंतु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जो भी माल या सामान आता जबतक आप उसे सदक़ा न कर देते आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नींद नहीं आती थी।

छटी और सातवीं आयत में अल्लाह तआला ने मरने के बाद सफलता और असफलता का स्तर उल्लेख फ़रमाया है कि अल्लाह को न मानने वाले या अल्लाह की ज़ात और गुणों में दूसरों को शरीक करने वाले हमेशा के लिए जहन्नम (नरक) में जाएंगे जहाँ सख्त अज़ाब होगा, क्योंकि वह अल्लाह तआला के नाफरमान (अवज्ञाकारी) बंदे हैं जो पूरी काएनात में सबसे ज़्यादा बुरे हैं। अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाकर नेक कार्य करने वाले जन्नत (स्वर्ग) में दाख़िल किए जाएंगे जहाँ अल्लाह तआला ने विश्राम और सजावट की ऐसी ऐसी चीज़ें तैयार (उपलब्ध) कर रखी हैं कि हमारी बुद्धि (समझ) उनके बारे में सोच भी नहीं सकती, नेक लोग ही सबसे ज़्यादा अच्छी मखलूक हैं।

आखिरी आयत में जन्नत वालों की सबसे बड़ी प्रतिभा (उपहार) का उल्लेख है, और वह अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) है। हज़रत अबुसईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला जन्नतियों से खिताब फ़रमाएँगे (कहेंगे): “ऐ जन्नतियो! जिसपर जन्नति लोग जवाब (उत्तर) देंगे: ऐ हमारे रब! हम हाज़िर हैं और आपके हुक्म पर अमल करने के लिए तैयार हैं और हर भलाई आप ही के कब्ज़े में है। फिर अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएँगे: तुम सब राज़ी और खुश हो। जन्नति जवाब देंगे, अब भी राज़ी ना होने की क्या मतलब है? जबकि आप ने हमें सबकुछ अता फ़रमा दिया जो किसी मखलूक को नहीं मिला। अल्लाह तआला फ़रमाएँगे कि क्या मैं तुमको इससे भी अफ़ज़ल और बेहतर उपहार दे दूँ? फिर फ़रमाएँगे कि मैंने अपनी रज़ा (सहमति / प्रसन्नता) तुम्हारे ऊपर उतार दी, अब मैं तुमसे कभी नाराज़ नहीं हूँगा”। (बुखारी: बाब सिफ़तुल जन्नति वन्नारी)

इस आयत में भी यह ज़िक्र किया गया है कि जिस तरह अल्लाह तआला अपने बन्दों से राज़ी होगा, इसी तरह तमाम जन्नति भी अल्लाह तआला से राज़ी और खुश होंगे।

“ज़ालिका लिमन ख़शिया रब्बह” से अल्लाह तआला हमेशा हमेशा की ज़िंदगी में सफलता प्राप्त करने का फ़ॉर्मूला (विधि) ज़िक्र फ़रमा दिया और वह अल्लाह का डर है, यानी ज़िन्दगी में हमेशा अल्लाह से डरते रहना चाहिए और उसके अहकाम का पालन करते रहना चाहिए।

सूरह अल ज़लज़लाह

سورة الزلزلة

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا (١) وَأُخْرِجَتِ الْأَرْضُ
أَثْقَالَهَا (٢) وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا (٣) يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ
أَخْبَارَهَا (٤) بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا (٥) يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ
أَسْتَاتًا لِّيُرَوْا أَعْمَالُهُمْ (٦) فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا
يَرَهُ (٧) وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ (٨)

सूरह 'अल ज़लज़लाह' की संक्षिप्त तफ़सीर

क्या एक दिन ज़मीन अपने अन्दर के सभी इंसानों और खज़ानों को बाहर निकाल देगी?

सूरह अज़िज़लज़ाल का अनुवाद: जब ज़मीन (पृथ्वी) अपने भूकम्प (भूचाल) से हिला (झंझोड़) दी जाएगी, और ज़मीन अपने बोझ बाहर निकाल देगी और इंसान कहेगा कि इसको क्या हो गया है? उस दिन ज़मीन अपनी सारी (सभी) ख़बरें बता देगी, क्योंकि तुम्हारे रब ने उसे यही हुक्म (आदेश) दिया होगा। उस दिन लोग विभिन्न टोलियों में वापस होंगे, ताकि उनके कार्य उन्हें दिखा दिए जाएँगे, जिसने ज़रा (कण) बराबर (थोड़ा सी) कोई अच्छाई की होगी वह उसे देखेगा, और जिसने ज़रा बराबर (थोड़ा सी) कोई बुराई की होगी, वह उसे देखेगा।

शब्दों की तहकीक़ (अनुसंधान): “إِذَا” इज़ा का अर्थ “जब” है, लेकिन जब इस तरह “इज़ा” से किसी चीज़ का बयान किया जाता है तो किसी घटना की याद दिलाना मक़सद (उद्देश्य) होता है, यानी उस समय को याद रखो, उस दिन से सावधान रहो जबकि ऐसा ऐसा होगा। “ज़ुज़्ज़िलत” “ज़िल्ज़ाल” से है, यानी “हिला देना”। “अलअरज़ु” का अर्थ ज़मीन (पृथ्वी) है, यानी उस उस वक़्त (समय) को याद करो जब ज़मीन (पृथ्वी) हिला दी जाएगी। “ज़िल्ज़ालहा” से मालूम हुआ कि यह आम ज़लज़ला (भूकम्प) नहीं बल्कि अपनी प्रकृति (स्वरूप) का अनोखा ज़लज़ला (भूकम्प) होगा, जिसके बाद दुनिया का पूरा निज़ाम (प्रणाली) ही उलट पलट (बर्बाद) हो जाएगा, और इसके बाद सभी लोग दोबारा जिंदा किए जाएँगे।

कुरान और हदीस की रोशनी में उम्मत-ए-मुस्लिमा की सहमति है कि दो बार “सूर” फूँका जाएगा, पहली बार “सूर” फूँकने के बाद पूरी दुनिया खत्म (नष्ट) हो जाएगी और दूसरी बार “सूर” फूँकने के बाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर क़यामत तक आने वाले सभी मुर्दे जिंदा होकर ज़मीन से उठेंगे। दूसरी आयत से मालूम होता है कि इस सूरह में दूसरी बार “सूर” फूँकने के वक़्त (समय) आने वाला दर्दनाक ज़लज़ला (भूकंप) मुराद है।

“असकाल” “सिक़ल” की जमा (बहुवचन) है, जिसका अर्थ “भार” (वज़न) और “बोझ” है, इससे मुराद मुर्दे हैं जो ज़मीन में दफ़न हैं। जिन मुर्दों को दफ़न करने के बजाए जला दिया जाता है वह भी मानो ज़मीन ही दफ़न किये जाते हैं, क्योंकि उनकी जली हुई राख और हड्डी आदि सब ज़मीन ही का हिस्सा (अंग) बन जाती हैं, इसी तरह वह लोग जो “सुनामी” के कारण मर जाते हैं, क्योंकि हकीकत (वास्तव) में समुद्र (सागर) भी ज़मीन ही का एक हिस्सा (भाग) है। “सिक़ल” से वह खज़ाने भी मुराद हैं जो ज़मीन में मौजूद हैं, यानी दूसरी बार “सूर” फूँकने के बाद ज़मीन तमाम इंसानों और खज़ानों को बाहर निकाल देगी। मिसाइल और परमाणु बम के दौर में इसको समझना बहुत आसान हो गया है, क्योंकि वर्तमान समय में इंसान की बनाई हुई नई टेक्नोलोजी के ज़रिए कमरे में बैठकर हज़ारों किलोमीटर की दूरी पर बम गिराकर किसी भी क्षेत्र को तुरंत ही (उसी समय) बर्बाद (तबाह) किया जा सकता है।

“व क़ालल इन्सानु मा लहा”: उस दर्दनाक स्थिति में इंसान पर जो असर पड़ेगा, उसको अल्लाह तआला बयान फ़रमाता है: इंसान

घबराकर कह उठेगा कि अरे, इस ज़मीन को क्या हो गया है कि यह तो टिकने का नाम ही नहीं ले रही।

इंसानों के अच्छे बुरे सभी कार्यों को धरती बयान कर देगी

“यवमइज़िन्न तुहदिसु अखबारहा, बिअन्ना रब्बका अवहालहा”: उस दिन ज़मीन अपनी पूरी खबरें बता देगी, क्योंकि तुम्हारे रब ने उसे यही हुक्म (आदेश) दिया होगा, यानी आल्लाह तआला जो ज़मीन और आसमान का पैदा करने वाला है, उसके हुक्म (आदेश) से सभी इंसानों के अच्छे बुरे सभी कार्यों को ज़मीन बयान कर देगी। जैसा कि हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “जिस दिन ज़मीन अपनी तमाम (पूरी) खबरें बता देगी। तथा नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो कि ज़मीन की खबरें क्या होंगी? सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने अर्ज़ (कहा) किया: अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानता है। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: ज़मीन की खबरें यह होगी कि वह हर मर्द और औरत पर गवाही देगी कि उसने ज़मीन पर क्या क्या काम किया है और वह बताएगी कि उस व्यक्ति ने उस समय में यह-यह काम किया है। (तिरमिज़ी) यानी जिस तरह बैंक से पूरा ब्यौरा (विवरण) मालूम किया जा सकता है कि खाते में कितना पैसा कहाँ कहाँ जमा किया गया और किस तारीख में किस ATM मशीन से कितना पैसा निकाला गया। आजकल WhatsApp के ज़रिए यह पता लगाया जा सकता है फ़लाना (वह) व्यक्ति कहाँ कहाँ जाता है और उसने कौन सा पल कहाँ गुज़ारा (बिताया)। सरकार की जाँच टीम के मांगने पर किसी भी व्यक्ति की गतिविधि की पूरी जानकारी सोशल मीडिया के

मालिकों से प्राप्त की जा सकती है। इंसान समझता है कि उसने इन्टरनेट या WhatsApp से पूरी जानकारी मिटा दी हैं, परंतु उसे मालूम होना चाहिए कि उसका लिखा हुआ या बोला हुआ एक एक शब्द और किसी भी व्यक्ति को शेयर (भेजा हुआ) किया हुआ एक एक फ़ोटो इंसान की तैयार की हुई टेक्नोलोजी में सुरक्षित है, जो किसी भी वक़्त (समय) सामने लाया जा सकता है। आजकल CCTV कैमरे से बहुत सी जानकारी सुरक्षित हो जाती है। इसी तरह ज़मीन अल्लाह के हुक्म (आदेश) से इंसान की पूरी ज़िंदगी के एक एक पल का रिकॉर्ड सेकेंडों में निकाल देगी और इंसान उसको देखकर हक्का-बक्का (भौंचक्का) रह जाएगा और कहेगा कि आज इस ज़मीन को क्या हो गया है।

“यवमइजिं यसदुरुन नासु अशतातल लियुरव अअमालहुमः” इसके दो अर्थ हो सकते हैं, एक याह कि हर एक अकेला अपनी व्यक्तिगत (अलग अलग) स्थिति में होगा, इसका समर्थन कुरान-ए-करीम से भी होता है, अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: “अकेला हमारे पास आएगा”, (सूरह मरयम: ८०) इनमें से हर एक क़यामत के दिन अल्लाह तआला के दरबार में अकेला हाज़िर (उपस्थित) होगा”, (सूरह मरयम: ९५)। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है, कि वह सभी लोग जो हज़ार वर्ष के बीच जगह जगह मरे थे, ज़मीन के कोने कोने से झुंड के झुंड (दल के दल) चले आ रहे होंगे, जैसा कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: “जिस दिन सूर फूँका जाएगा तो तुम फ़ौज के फ़ौज आओगे”, (सूरह नबा: १८)। बहरहाल जिस तरह दुनिया में लोग Power Point Presentation के ज़रिए अपनी या अपनी कंपनी की उपलब्धि (प्रदर्शन) पेश करते हैं, इसी तरह बल्कि इस से लाखों गुना

ज़्यादा प्रमाणिक जानकारी के साथ हर व्यक्ति को उसके किये हुए सभी कार्य दिखाए जाएंगे।

फ़र्मयं यअमल मिसकाला ज़रतिन खयरयं यरह, वमयं यअमल मिसकाला ज़रतिन शरयं यरह:” यह आयत पहली आयत की तफ़सील (ब्यौरा) बयान कर रही है कि जिसने थोड़ी सी भी नेकी की होगी वह भी उसके सामने आएगी और जिसने थोड़ी सी भी बुराई की होगी वह भी उसके सामने आएगी। यहाँ यह बात याद रखनी है कि हर मोमिन और काफ़िर की छोटी बड़ी नेकी या बुराई उसके सामने आएगी तो ज़रूर, लेकिन उस नियम के अनुसार आएगी जो अल्लाह तआला ने कुरान-ए-करीम में दूसरी जगहों पर ज़िक्र फ़रमाई है, यानी एक मोमिन यह देखेगा कि उससे नेकियों के साथ वह वह गलतियाँ भी हुई हैं लेकिन अल्लाह तआला ने उसकी इन इन नेकियों को इनका कफ़ारा बना दिया है, इसी तरह एक काफ़िर यह देखेगा कि उसने बुराइयों के साथ कुछ नेक काम भी किये हैं, लेकिन वह नेक काम उसके उन बुरे कार्यों और विश्वास (विचारों) के कारण नष्ट कर दिए गए या उनका दुनिया में ही कोई बदला दे दिया गया था, क्योंकि आखिरत की कामयाबी (सफलता) के लिए सबसे बुनियादी शर्त अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना है। सांसारिक जीवन के अच्छे बुरे कार्य देखने के बाद हर व्यक्ति अपना ठिकाना समझ जाएगा। इसी को अल्लाह तआला ने सूरह “अलकारिआत” में बयान फ़रमाया है: “जिस व्यक्ति के पलड़े भारी होंगे (यानी जिसने दुनिया में अच्छे कार्य किये होंगे) तो वह पसंदीदा जीवन में होगा (यानी जन्नत में होगा) और जिसके पलड़े हलके होंगे (यानी जिसने दुनिया में अपनी चाहत की पैरवी (पालन) की होगी) तो उसका ठिकाना एक

गहरा गड़ढा होगा, और तुम्हें क्या मालूम कि वह गहरा गड़ढा क्या चीज़ है? वह एक दहकती हुई आग है (जिसमें अल्लाह तआला के नाफ़रमानों (अपराधियों) और पापियों को डाला जाएगा)।

ज़लज़ले (भूकंप) क्यों आते हैं? भूकंप और सुनामी आने के कारणों पर लोगों ने बड़ी बड़ी किताबें लिखी हैं कि आखिर भूकंप क्यों आते हैं? लेकिन वास्तविक बात यह है जिसका इंकार नहीं किया जा सकता कि आज साइंस (विज्ञान) ने बहुत विकास किया है, कुछ लोग चाँद पर जीवन के आसार तलाश करने में लगे हुए हैं, कुछ देश बड़े बड़े मिसाइल बनाकर एक दूसरे को तबाह करने की व्यवस्था कर रहे हैं, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सोशल मीडिया के ज़रिए पूरी दुनिया को एक गांव के बराबर बनाने की कोशिश की जा रही है, जिससे एक क्षेत्र की ख़बर मिनटों में पूरी दुनिया में देखी और पढ़ी जा सके, लेकिन आजतक भूकंप को रोकने या कम से कम उसको टालने या उसकी तबाही को कम करने की कोई भी व्यवस्था पूरी दुनिया के वैज्ञानिक मिलकर भी नहीं कर पाए हैं। भूकंप को रोकना तो बहुत दूर की बात है, उसके आने के वक़्त (समय) का ठीक अनुमान लगाना भी उनके लिए आजतक संभव नहीं हुआ। वैज्ञानिक दुनिया के अनोखे निज़ाम (प्रणाली) को देखकर यही कहने पर मजबूर हैं कि अभी तो वह इस दुनिया का बहुत थोड़ा हिस्सा ही समझ सके हैं। अब थोड़ा सोचें कि दुनिया का इतना बड़ा निज़ाम (प्रणाली) किसी बड़ी शक्ति के बग़ैर कैसे चल सकता है? बिल्कुल नहीं, बिल्कुल नहीं, इसलिए भूकंपों से सबक़ हासिल करें और इस पूरी काएनात के खालिक, मालिक और राज़िक़ की तरफ़ लोटते हुए उसकी मखलूक़ात

से निश्चित रूप से फ़ायदा उठाएँ, लेकिन उसके अहकाम (आदेशों) का पालन करते हुए, क्योंकि एक दिन ऐसा ज़रूर आएगा कि दुनिया के किसी बड़े देश के प्रमुख (प्रबंधक) होने के बावजूद, दुनिया में सबसे ज़्यादा धन रखने के बावजूद, दुनिया के बड़े से बड़ा वैज्ञानिक बनने के बावजूद और दुनिया में बहुत ज़्यादा लोकप्रियता प्राप्त करने के बावजूद हम भी सभी इंसानों की तरह एक दिन ज़मीन में दफ़न कर दिये जाएंगे, और लोग धीरे धीरे हमें भूल जाएंगे। पूर्ण रूप से आज साइंस (विज्ञान) विकास (उन्नति) करने के बावजूद भी यह समझने से असमर्थ है कि मौत का मज़ा न चखने की इच्छा रखने के बावजूद आखिर सभी इंसान मर ही क्यों जाते हैं और वह क्यों पैदा हुए हैं?

भूकंप के जो दुनियावी कारण ज़िक्र (चर्चा) किए जाते हैं, उनका हम इंकार नहीं करते, क्योंकि दुनिया को अल्लाह तआला ने कारणों का घर बनाया है, लेकिन हमारा यह ईमान और अक़ीदा (विश्वास) है कि जिस तरह पूरी दुनिया खुद बखुद (अपने आप) स्थापित नहीं हो गई, इसी तरह भूकंप अपने आप नहीं आते, असल में इसके पीछे अल्लाह का हुक्म (आदेश) होता है, इसिलए अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: “लोगों ने अपने हाथों से जो कमाई की, उसकी वजह से सूखे और गीलेपन (तर) में भ्रष्टाचार (दंगा) फैला, ताकि उन्होंने जो कार्य किये हैं अल्लाह उनमें से कुछ का मज़ा (स्वाद) उन्हें चखाए, शायद वह बाज़ आ जाएँ (रुक जाएँ)”। (सूरह रूम: ४१) यानी दुनिया में जो आम (सार्वजनिक) मुसीबतें लोगों पर आईं, जैसे अकाल, आफ़त (महामारी), भूकंप, तानाशाहों (अत्याचारियों) का शासन, उनका असल कारण यह था कि लोगों ने अल्लाह तआला के हुक्मों (आदेशों) का उल्लंघन

किया और इस तरह यह मुसीबतें अपने हाथों मोल लीं और उनका एक लक्ष्य यह था कि मुसीबतों से ग्रस्त (पीड़ित) होकर लोगों के दिल कुछ नरम पड़ें और वह अपने बुरे कार्यों से रुक जाएँ।

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से भूकंप के आने से कारण लिखे गए हैं, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं: लोगों में ज़िना (अनैतिक यौन संबंध) का आम होना, सूद (ब्याज) का आम होना, शराब का बहुत ज़्यादा पिया जाना, लोगों का गाने बजाने को अपना धंधा (व्यवसाय) बनाना, अच्छाईयों का हुकम (आदेश) और बुराईयों से लोगों को रोकने का काम बंद कर देना, लोगों का इन बुरे कार्यों को केवल करना ही नहीं बल्कि उन्हें जाइज़ (वैध) और वक़्त (समय) के ज़रूरत समझने लगना।

भूकंप आने पर हमें अल्लाह की तरफ़ लोटते हुए अपने गुनाहों से माफ़ी मांगनी चाहिए, बहुत ज़्यादा तौबा और इस्तिग़फ़ार (माफ़ी) करना चाहिए और बड़े गुनाह खासकर (विशेषकर) ऊपर वर्णित गुनाहों से बचने का अहतिमाम (व्यवस्था) करना चाहिए।

किसी जगह भूकंप आने से यह समझकर कि यह अल्लाह का अज़ाब है भूकंप से पीड़ित लोगों की मदद (सहायता) करना न छोड़ें, बल्कि उनकी मदद (सहायता) करना हमारी दीनी, इंसानी और नैतिक ज़िम्मेदारी है।

सूरह अलआदियात

سورة العاديات

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْعَادِيَاتِ ضَبْحًا (١) فَالْمُورِيَاتِ قَدْحًا (٢) فَالْمُغِيرَاتِ
ضُبْحًا (٣) فَأَثَرْنَ بِهِ نَقْعًا (٤) فَوَسَطْنَ بِهِ جَمْعًا (٥) إِنَّ
الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ (٦) وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ (٧) وَإِنَّهُ
لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ (٨) أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي
الْقُبُورِ (٩) وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ (١٠) إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ
يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ (١١)

सूरह 'अलआदियात' की संक्षिप्त तफ़सीर

इन्सान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है

सूरह अलआदियात का अनुवाद: क्रसम है उन घोड़ों की जो हाँफ़ हाँफ़ कर दोड़ते हैं, फिर जो (अपनी टापों से) चिंगारियाँ उड़ाते हैं, फिर सुबह के वक़्त (समय) यलगार (आक्रमण-चढ़ाई) करते हैं, फिर उस मौक़े पर गुबार (धूल) उड़ाते हैं, फिर उसी वक़्त (समय) किसी ज़मघट (भीड़) के बीच में जा घुसते हैं, कि इन्सान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है, और वह खुद इस बात का गवाह है, हकीक़त (सच्चाई) यह है कि वह माल की मुहब्बत में बहुत पक्का है, यानि वह दौलत (धन) का रसिया (स्वादलोलुप व्यक्ति) है। भला क्या वह समय उसे मालूम नहीं है जब क़ब्रों में जो कुछ है उसे बाहर बिखेर दिया जाएगा और सीनों में जो कुछ है उसे ज़ाहिर (सामने) कर दिया जाएगा। यक़ीनन (निश्चित रूप से) उनका रब उस दिन उन (की जो हालत होगी उस) से पूरी तरह बाख़बर है।

सबसे पहले इस सूरह का सारांश टिपण्णी पेश है: अल्लाह तआला ने इस सूरह में इन्सान को बताया है कि वह इस दुनिया में अल्लाह तआला की बेशुमार (अनगिनत) मखलूक़ात (जीव जन्तु) से फ़ायदा उठाता है और आम तौर पर पशुओं, पेड़ पौधों और जमादात (बेजान चीज़ें, पहाड़ आदि) सभी अल्लाह के हुक्म (आदेश) से इन्सान ही के नियंत्रण (काबू) में हैं, क्योंकि अल्लाह तआला ने इंसान ही को ज़मीन में अपना खलीफ़ा (प्रतिनिधि) निर्धारित किया है जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरह "अल-बक्रा" आयत ३० में उल्लेख किया है।

इस अवसर पर खास तौर पर जंगी घोड़ों की इंसानों की रक्षा के लिए कुर्बानियों (बलिदानों) का बयान किया गया है कि वह अपने स्वामी यानी इंसान की हुकमबरदारी (आज्ञाकारिता) और खिदमत (सेवा) के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा कर हर समय अपने दुनयावी (सांसारिक) स्वामी की रक्षा के लिए तैयार रहता है। पाँच आयत में कसम खाने के बाद अल्लाह तआला ने इंसान की नाशुक्री का बयान किया है कि वह अपने घोड़ों और अनगिनत अन्य चीज़ें जिनको अल्लाह तआला ने इंसान की सेवा के लिए उपलब्ध किया है, से सीख कर अपने असली मालिक की तरफ़ क्यों नहीं लौटता? इंसानों का भी तो ख़ालिक मालिक और राज़िक वही है, घोड़ों से सबक (उदाहरण) प्राप्त करके इंसान अपने असली मालिक के फ़रमांबरदारी (अनुपालन) के लिए उसके आदेशों के अनुसार दुनयावी (सांसारिक) ज़िन्दगी (जीवन) क्यों नहीं गुज़रता? अपनी मर्ज़ी से दुनिया के रात दिन क्यों गुज़ारना चाहता है?

आठवीं आयत में अल्लाह तआला ने इंसान के कंजूस होने पर उसकी निंदा की है कि अल्लाह तआला ही ने इंसान को धन, पद और औलाद दी है और यह पूरी काएनात भी अल्लाह तआला के हुकम (आदेश) से वुजूद (अस्तित्व) में आई है, लेकिन माल प्राप्त करने के बाद इंसान माल के बारे में अल्लाह तआला और लोगों के अधिकार पूरी तरह अदा नहीं करता बल्कि गिन गिन कर छुपा छुपा कर रखता है और लोगों पर जुल्म (अत्याचार) भी करता है, हालांकि एक दिन ऐसा ज़रूर आएगा कि माल और दौलत और पूरी जायदाद (संपत्ति) यहीं रह जाएगी और ख़ाली हाथ दुनिया को छोड़कर जाना पड़ेगा। कुदरत का कैसा अनोखा निज़ाम (प्रणाली) है कि हर सौ साल के बाद

दुनिया के ज़ाहिरी स्वामी ज़मीन के नीचे चले जाते हैं और दूसरे लोग ज़मीन के विभिन्न हिस्सों पर कब्ज़ा कर लेते हैं, हालांकि उन्हें भी ख़ाली हाथ इस दुनिया से चले जाना है। कुछ दिन परिवारजन मरने वाले अपने करीबी रिश्तेदारों को याद रखते हैं, फिर वह भी अपनी दुनियावी (सांसारिक) जीवन में ऐसे मस्त हो जाते हैं कि कभी कभी केवल उनका चर्चा किया करते हैं, हालांकि उन्हें भी अच्छी तरह मालूम है कि किसी भी पल मौत का फ़रिश्ता उनकी भी रूह (प्राण) निकालने के लिए आ सकता है, यानि उन्हें भी इस दुनिया से अपने बाप दादा की तरह ख़ाली हाथ जाना है।

आखिरी (अंतिम) तीन आयत में अल्लाह तआला ने बयान किया कि इंसान की कामयाबी (सफलता) यह नहीं है कि पूरी सलाहियतें (क्षमता) केवल इस सांसारिक जीवन को संवारने में लगा दे, बल्कि वास्तविक सफलता यह है कि इंसान आखिरत के जीवन को सामने रखकर यह दुनियावी (सांसारिक) मिटने वाला, अस्थायीजीवन बिताएं। इस बात का पूरा यकीन रख कर दुनियावी (सांसारिक) जीवन के कीमती पल गुज़ारें कि एक दिन ऐसा ज़रूर आएगा कि दुनिया के अस्तित्व से लेकर क़यामत तक आने वाले सभी इंसानों को हश्र (हशर) के मैदान में इकठ्ठा किया जाएगा और हर व्यक्ति का “नाम-ए-अअमाल” (कर्मों की चिट्ठी) पेश किया जाएगा। समझदार व्यक्ति वह है जो मरने से पहले मरने के बाद वाली हमेशा की जिन्दगी के लिए तैयारी करे।

अल्लाह तआला का विभिन्न चीज़ों की क़सम खाना:

कभी-कभी अल्लाह तआला कुरान-ए-करीम में अपनी मख़लूक़ात में से विभिन्न चीज़ों की क़सम खाकर ख़ास (विशेष) घटनाएँ (वारदात)

और अहकाम बयान करता है, ताकि इंसान क़सम के जबाब (उत्तर) में आने वाले किस्से (घटना) या हुक्म (आदेश) को ध्यान से सुनें और घटना से सबक़ (उदाहरण) प्राप्त करके अल्लाह तआला के हुक्म (आदेश) को ख़ास (विशेष) ध्यान और अहतिमाम (व्यवस्था) के साथ पालन करे, हालांकि किसी इंसान के लिए किसी मख़लूक की क़सम खाना जाएज़ (वैध) नहीं है, क्योंकि क़ुरान-ए-करीम के पहले मुफ़स्सिर जिनके क़ौल (बात) और अमल (कार्य) के बग़ैर अल्लाह के कलाम को समझना संभव नहीं है (हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया: “जो व्यक्ति क़सम खाना ही चाहे तो उसे चाहिए कि वह सिर्फ़ अल्लाह तआला के नाम की क़सम खाए, वरना (अन्यथा) चुप रहे”। (बुखारी और मुस्लिम) तथा नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “जिसने अल्लाह तआला के अलावा किसी चीज़ की क़सम खाई, मानो कि उसने कुफ़्र और शिर्क किया”। (तिरमिज़ी, अबू दाऊद) तो हमें जहाँ तक हो सके क़सम खाने से बचना चाहिए, अगर हमें क़सम खानी ही पड़े तो केवल अल्लाह तआला की क़सम खाएं।

अगर किसी व्यक्ति ने जाएज़ (वैध) काम करने या न करने की क़सम खा ली और फिर उस क़सम को पूरा न कर सका तो उसे क़सम का कफ़़ारा देना होगा, यानि दस ग़रीब लोगों को मध्यम वर्ग का खाना खिलाना, या दस ग़रीब लोगों को सतर (बदन का वह हिस्सा जिसका छिपाना फ़र्ज है) छिपाने के बराबर कपड़ा देना, या एक गुलाम आज़ाद कराना। अगर इन उल्लेखनीय (कथित) तीन कफ़़ारों में से किसी एक के अदा करने पर कुदरत (क्षमता) न हो तो क़सम तोड़ने वाले को तीन दिन लगातार रोज़े रखने होंगे।

शब्दों की तहकीक़ (अनुसंधान): “वाव” क़सम के लिए है, “आदियात” का अर्थ “दोड़ने वाला” है, लेकिन यहाँ यह घोड़े की सिफ़त (विशेषता) के तौर पर आया है, क्योंकि इसके बाद आने वाली चार सिफ़ात (विशेष गुण) घोड़े के अलावा किसी और चीज़ की नहीं होतीं। “ज़ब्ह” वह खास आवाज़ है जो घोड़े के दोड़ने के वक़्त (समय) नथुनों से निकलती है, जिसका अनुवाद “हांपना” किया गया है। “मूरियात” “ईरा” से बना है, जिसका अर्थ “आग निकालना” है जैसे चकमाक़ पत्थर रगड़ कर या माचिस को रगड़ कर निकली जाती है। “क़दह” का अर्थ “ठोकर लगाना और एक चीज़ को दूसरी चीज़ से टकराना है”। पथरीली ज़मीन पर जब घोड़ा तेज़ी से दोड़े, खासकर जबकि उसके पैर में लोहे की नाल भी हो तो टकराव से आग की चिंगारियाँ निकलती हैं। “मुगीरात” “इग़ारह” से बना है, जिसका अर्थ “हमला करना” है, सुबह के समय तख़सीस (विशेषता) आदत के तौर पर है, क्योंकि अरब के लोग बहादुरी को दिखाने के लिए रात के अँधेरे में छापा मारने को अच्छा नहीं समझते थे, इसलिए वह हमला सुबह होने के बाद किया करते थे। “असरना” “असार” से बना है, जिसका अर्थ “उड़ाना” और “उभरना” है, और “नक़अ” का अर्थ “गर्द और गुबार” है, मुराद यह है कि यह घोड़े मैदान में इतनी तेज़ दोड़ते हैं कि उनके खुरों से धूल उड़कर छा जाती है। “फ़वसतना बिही जमआ” यह दुश्मनों की कतारों में बेखोफ़ और ख़तर (निडर होकर) घुस जाते हैं, उन्हें अपनी जानों से ज़्यादा अपने मालिकों का मक़सद (लक्ष्य) प्यारा होता है, इसके लिए वह हर ख़तरा (संकट) से निडर होकर आगे बढ़ते हैं और यही उनका मक़सद (लक्ष्य) है। बहरहाल अल्लाह तआला बन्दों के हाल (परिस्थिति) पर दया फ़रमाकर घोड़ों के

विभिन्न खूबियों की कसम खाकर इरशाद फ़रमाता है, ताकि घोड़ों की तरह इंसान भी अल्लाह का शुक्रगुज़ार (आभारी) बंदा बनकर दोनों जहां (दुनिया) की सफलता प्राप्त करने वाला बन जाए। **“इन्नल इन्साना लिरब्बिही लकनूद”** यह वह असल बात है जिस पर गवाही के लिए घोड़ों की कुछ खूबियों की कसमें खाई गई हैं, यानी कुछ कसमें खाकर खालिक-ए-काएनात ने फ़रमाया: “इंसान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है। इस आयत में अल्लाह तआला ने इंसान को “कुनूद” कहा है, जिसका अर्थ नाशुक्रा है। हज़रत हसन बसरी रहिमहुल्लाहु ने फ़रमाया: “वह व्यक्ति जो दुखों को याद रखे और गुणों (उपहारों) को भूल जाए उसको “कुनूद” कहा जाता है। बहरहाल जो इंसान अपने घोड़ों की यह सारी जांबाज़ी (निडरता) देखता है और उनकी कुर्बानियों से फ़ायदा उठाता है, परंतु उसे सोचने की तौफ़ीक़ नहीं होती कि वह भी अपने रब का गुलाम है, उसको भी किसी ने पैदा किया है, क्योंकि वह और पूरी काएनात अपने आप कैसे स्थापित हो सकती है? तो उसकी यह ज़िम्मेदारी है कि वह भी उन्हीं घोड़ों की तरह अपने असली मौला और आक्रा (रब) की आज्ञाकारिता (कर्तव्य) के लिए हर समय तैयार रहे। मालूम हुआ कि इंसान नाशुक्रा (व्यर्थ-अनुपादेय) है, क्योंकि घोड़ा जानवर होकर भी अपने मालिक का हक़ पहचानता है, लेकिन इंसान मखलूक में सबसे महान होकर भी अपने असली रब का हक़ नहीं समझता। इस जगह पर घोड़ों का ज़िक्र केवल मिसाल (उदाहरण) के तौर पर किया गया है, अन्यथा (वरना) अल्लाह तआला ने अपनी बेशुमार (अनगिनत) मखलूकात इंसान के अधीन (तहत) कर दी हैं, इंसान के जीवन का कोई भी पल ऐसा नहीं गुज़रता है कि वह अल्लाह तआला के सेकड़ों दानों (उपहारों) से

फ़ायदा न उठा रहा हो, यहाँ तक कि जो साँस लेता है वह भी अल्लाह की कृपा और उसकी मखलूक़ात से फ़ायदा उठाए बग़ैर संभव नहीं है।

“व इन्नहू अला ज़ालिका लशहीद” अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है कि इंसान के नाशुक़्रा होने पर किसी दलील (तर्क) की ज़रूरत (आवश्यकता) नहीं है, उसका व्यवहार (बर्ताव) ही खुद गवाही देता है कि वह नाशुक़्रा है।

“व इन्नहू लिहुब्बिल खयरी लशदीद” इंसान के नाशुक़्रा होने के लिए उसके चरित्र (भूमिका) से ही एक दलील (तर्क) अल्लाह तआला पैश फ़रमा रहा है कि वह माल (धन) की बहुत ज़ियादा मुहब्बत का शिकार है। इंसान को अपने घोड़ों को देखना चाहिए कि वह जान की बाज़ी लगाकर जो कुछ प्राप्त करते हैं वह सब मालिक का हो जाता है, अपने लिए किसी चीज़ का सवाल नहीं करते, मालिक जो कुछ उनके आगे डाल देता है उस पर संतुष्ट हो जाते हैं, लेकिन इंसान की स्थिति यह है कि जो माल भी अल्लाह की कृपा (दया) से प्राप्त होता है उसको सिर्फ़ और सिर्फ़ अपना समझकर अपनी इच्छाओं (आशाओं) का पालन करना चाहता है और माल के बारे में अल्लाह तआला के हुक्क़ (अधिकारों) को अदा करना तो अलग दूसरे इंसानों के हुक्क़ (अधिकार) भी खा जाता है।

“अफ़ला यअलमु इज़ा बुअसिरा माफ़िल कुबूरि वहुस्सिला माफ़िस्सुदूर” इन आयात से लापरवाह इंसान को अल्लाह तआला चेतावनी दे रहा है कि वह उस दिन को भूल गया है जब मुर्दे कब्रों से जिंदा करके उठा लिए जाएँगे और दिलों में छुपी हुई बातें खुलकर सामने आ जाएँगी, हालांकि इंसान जानता है कि अल्लाह तआला सभी इंसानों के हालात

(परिस्थितियों) को खूब जानता है, इसलिए समझदारी यह है कि इंसान अल्लाह तआला की नाशुक्री से रुक जाए और माल की मुहब्बत में ऐसा न डूब जाए कि अच्छे बुरे की पहचान भी न करे, क्योंकि क़यामत के दिन हर व्यक्ति से सवाल किया जाएगा कि माल कहाँ से कमाया? यानी संसाधन हलाल (वैध) थे या हराम (अवैध)? तथा खर्च कहाँ किया? यानी अल्लाह तआला और लोगों के हक़ (अधिकार) अदा किये या नहीं?

“इन्ना रब्बहुम बिहिम यवमज़िल लखाबीर” कहकर अल्लाह तआला ने यह ऐलान कर दिया है कि हर इंसान की ज़िंदगी के एक एक पल को सुरक्षित किया जा रहा है। आज के कंप्यूटर के ज़माने में इसको समझना बहुत आसान हो गया है, क्योंकि जब इंसान के तैयार किये हुए प्रोग्रामों के ज़रिए लोगों की पूरी प्रक्रियाएँ (गतिविधियाँ) सुरक्षित हो जाती हैं तो फिर ख़ालिक-ए-काएनात के निज़ाम (प्रणाली) में ऐसा क्यूँ नहीं हो सकता?

सूरह अल-कारिया

سورة القارعة

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْقَارِعَةُ (١) مَا الْقَارِعَةُ (٢) وَمَا أَذْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ (٣) يَوْمَ
يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ (٤) وَتَكُونُ الْجِبَالُ
كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ (٥) فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ (٦) فَهُوَ
فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ (٧) وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ (٨) فَأُمُّهُ
هَاطِيَةٌ (٩) وَمَا أَذْرَاكَ مَا هِيَهْ (١٠) نَارٌ حَامِيَةٌ (١١)

सूरह 'अल-कारिया' की संक्षिप्त तफ़सीर

एक सूर पूरी कायनात को ख़त्म कर देगा

सूरह अल-कारिया का अनुवाद: याद करो वह वाक़ेया जो दिल दहलाकर रख देगा। क्या है वह दिल दहलाने वाला वाक़ेया? और तुम्हें क्या मालूम वह दिल दहलाने वाला वाक़ेया क्या है जिस दिन सारे लोग फैले हुए परवानों की तरह हो जायेंगे। और पहाड़ धुन्के हुए रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे। जिस व्यक्ति के पलड़े वज़नी होंगे (यानि जिसने दुनिया में अच्छे आमाल किये होंगे) तो वह मनपंसद ज़िन्दगी में होगा (यानि जन्नत में होगा)। और जिस के पलड़े हल्के होंगे (यानि जिसने दुनियावी ज़िन्दगी को अपनी इच्छा के अनुसार बिताया होगा) तो उसका ठिकाना एक गहरा गढ़ा होगा, और तुम्हें क्या मालूम कि वह गहरा गढ़ा क्या चीज़ है? वह एक दहकती हुई आग है (जिसमें अल्लाह के नाफ़रमानों और गुनाहगारों को डाला जायेगा)।

कुरआन और हदीस की रोशनी में पूरी उम्मत मुस्लिमा का सहमती है कि एक दिन हज़रत इसाफ़ील अलैहिस्सलाम के सूर से पूरी कायनात में ऐसा ज़लज़ला आयेगा कि दूध पिलाने वाली मायें अपने दूध पीते बच्चों को भूल जायेंगी और गर्भवती औरतों के हम्मल (गर्भ) गिर जायेंगे। चीख और पुकार और ज़लज़ला की शिद्दत बढ़ती जायेगी, जिससे तमाम इन्सान और जानवर मरना शुरू हो जायेंगे यहां तक कि कायनात में कोई भी ज़िन्दा बाकी ना बचेगा, जैसा कि **सूरह अर्रहमान (२६-२७)** में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: इस ज़मीन में जो कोई है वह ख़त्म होने वाला है। और सिर्फ़ तुम्हारे

परवरदिगार की जलाल वाली, फ़ज़ल और करम वाली ज़ात बाक़ी रह जायेगी।

अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में उस दिन का बार बार ज़िक्र फ़रमाया है, सिर्फ़ यउमुल क़यामह का शब्द ७० जगहों पर वारिद हुआ है। दूसरी मज़हबी किताबों में भी उस दिन का ज़िक्र मिलता है, यहाँ तक ईसाई और यहूदी भी उस दिन को सच मानते हैं। अक़ल का तकाज़ा भी यही है कि दुनिया के इस बड़े निज़ाम का आखिर कोई मुख्य मक़सद (उद्देश्य) ज़रूर होना चाहिए और इस अजीब और ग़रीब निज़ाम को चलाने वाली एक बहुत बड़ी ज़ात होनी चाहिए जिसकी शक्ति का हम अन्दाज़ा नहीं लगा सकते और इस दुनिया में किये गये अच्छे और बुरे आमाल का बदला या सज़ा भी मिलनी चाहिए।

क़यामत की होलनाकी (भयानकता):

अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में विभिन्न अन्दाज़ से इस दिन की होलनाकी को ज़िक्र किया है। कुछ आयात का अनुवाद पेश है: “जब सूरज लपेट दिया जायेगा... और जब सितारे टूट टूट कर गिरेंगे... और जब पहाड़ों को चलाया जायेगा... और जब समन्दरों में तूफ़ान आजायेगी... और जब आसमान का छिलका उतार दिया जायेगा... और जब दोज़ख़ (नरक) भड़कायी जायेगी... और जब जन्नत करीब कर दी जायेगी, तो उस समय हर व्यक्ति को अपना सारा किया धरा मालूम हो जायेगा।” (सूरह अत्तकवीर)

“जब आसमान चिर जायेंगे... और जब सितारे झड़ पड़ेंगे... और जब समन्दरों को उबाल दिया जायेगा... और जब क़ब्रें उखाड़ दी जायेंगी,

उस समय हर व्यक्ति को पता चल जायेगा कि उसने क्या आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा यानि क्या आमाँल किये।” (सूरह अलइन्फितार)

“जब आसमान फट जायेगा... जब ज़मीन को खींच दिया जायेगा (यानि ज़मीन को रबर की तरह खींच का मौजूदा साइज़ से बहुत बड़ा कर दिया जायेगा ताकि उसमें दुनिया के वजूद से लेकर क़यामत तक के सारे लोग समा सकें।) और उस के अन्दर जो कुछ है वह उसे बाहर फेंक देगी और ख़ाली हो जायेगी। ऐ इन्सान! तू अपने परवरदिगार के पास पहुंचने तक लगातार किसी मेहनत (अल्लाह की इताअत) में लगा रहेगा, यहां तक कि उससे जा मिलेगा।” (सूरह अलइन्शिक़ाक़)

“अल्लाह वह है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह तुम्हें ज़रूर क़यामत के दिन जमा करेगा जिसके आने में कोई शक नहीं है। और कौन है जो अल्लाह से ज़्यादा बात का सच्चा हो?” (सूरह अन्निसा)

“यक़ीन जानो फैसले का दिन एक निश्चित समय है। जिस दिन जब सूर फूँका जायेगा तो तुम सब फ़ौज दर फ़ौज चले आओगे। और जब आसमान खोल दिया जायेगा तो उसके दरवाज़े ही दरवाज़े बन जायेंगे। और जब पहाड़ों को चलाया जायेगा तो वह रेत की तरह हो जाएंगे। यक़ीन जानो जहन्नम घात लगाये बैठी है। वह पापियों का ठिकाना है। जिसमें वह मुद्दतों इस तरह तकलीफ़ों में रहेंगे कि वह उस में ना ठंडक का मज़ा चखेंगे और ना पीने के काबिल कोई चीज़ उनको दी जायेगी, सिवाय गर्म पानी, पीप और लहू के। यह उनका पूरा परा बदला होगा। वह अपने आमाँल के हिसाब का अक़ीदा नहीं रखते थे। और उन्होंने हमारी आयतों को बढ़ चढ़कर झुठलाया था

और हमने हर चीज़ को लिखकर महफूज़ कर रखा है। अब मज़ा चखो! इसलिए कि हम तुम्हारे लिए सज़ा के सिवा किसी चीज़ में बढ़ोतरी नहीं करेंगे।” (सूरह अन्नबअ)

“हम उन्हें क़यामत के दिन मुंह के बल इस तरह इकट्ठा करेंगे कि वह अंधे, गूंगे और बहरे होंगे। उनका ठिकाना जहन्नम होगा। जब कभी उसकी आग धीमी होने लगेगी, हम उसे और ज़्यादा भड़का देंगे। यह उनकी सज़ा है, क्योंकि उन्होंने हमारी आयतों का इन्कार किया था और यह कहा था कि क्या जब हम मरकर हड्डियाँ ही हड्डियाँ रह जायेंगे और चूरा चूरा हो जायेंगे तो क्या फिर भी हमें नये सिरे से ज़िन्दा करके उठाया जायेगा? भला क्या उन्हें इतनी सी बात ना सूझी कि वह अल्लाह जिसने सारे इन्सानों और ज़मीन को पैदा किया है वह इस पर कादिर है कि उन जैसे आदमी फिर से पैदा कर दे? और उसने उनके लिए एक ऐसा समय निर्धारित कर रखा है जिसके आने में ज़रा भी शक नहीं है।” (सूरह अलइसराअ)

क़यामत का दिन पचास हज़ार साल के बराबर होगा जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने कलाम में ज़िक्र फ़रमाया है। लेकिन क़यामत कब आयेगी? अल्लाह तआला के सिवा किसी को इसका इल्म नहीं है, जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में ज़िक्र फ़रमाया। इस समय सिर्फ़ एक आयत पेश है: “यह लोग आपसे क़यामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब आयेगी? आप फ़रमा दीजिए कि इसका इल्म सिर्फ़ मेरे रब के पास है। वही उसे अपने समय पर खोलकर दिखायेगा, कोई और नहीं। वह आसमानों और ज़मीन में बड़ी भारी चीज़ है। जब आयेगी तो तुम्हारे पास अचानक आ जायेगी।” (सूरह अलअअराफ़)

क़यामत के आने की तारीख़ ऐसा राज़ है जो ख़ालिके कायनात ने किसी फ़रिश्ते या नबी को भी नहीं बताया। हज़रत ज़िब्राईल अलैहिस्सलाम ने नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा तो उनको भी यही ज़वाब मिला कि जिससे पूछा जा रहा है वह पूछने वाले से ज़्यादा नहीं जानता। (मुस्लिम)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार शहादत (पहली) और बीच वाली उंगली को मिलाकर इरशाद फ़रमाया कि जिस तरह यह दोनों उंगलियां एक दूसरे से मिली हुई हैं, बस समझें कि मैं भी क़यामत के साथ इस तरह भेजा गया हूँ। (मुस्लिम)

यानि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और क़यामत के बीच का समय दुनिया के वजूद से लेकर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेअसत (नबी बनाये जाने) तक गुज़रे हुए ज़माने का मुक़ाबले में बहुत कम है।

हज़रत इसाफ़ील का सूर फूंकना:

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हज़रत इसाफ़ील अलैहिस्सलाम अपनी पैदाइश के समय से लेकर अब तक सूर अपने मुंह पर रखे हुए अल्लाह तआला के हुक्म के इंतज़ार में हैं जैसे ही हुक्म होगा वैसे ही वह सूर फूंक देंगे। (मुसनद अहमद) तथा नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जुमा सारे दिनों का सरदार है और जुमे के दिन ही क़यामत कायम होगी। (इब्ने माजा)

सूर दो बार फूँका जायेगा, पहले सूर के बाद उस समय में मौजूद सारी मखलूक मर जायेगी और दूसरे सूर के बाद ज़िन्दा हो जायेगी।

(सूरह अज़्जुमर ६८ और मुस्लिम)

दोनों सूर फूँकने की दर्मियानी मुद्दत अल्लाह तआला ही जानता है।

(मुस्लिम)

सूर की शकल किसी जानवर के सींग की तरह होगी जिसमें फूँक मारी जायेगी। (तिर्मिज़ी)

सूर की आवाज़ बहुत भयानक होगी कि जैसे जैसे लोग उसकी आवाज़ सुनते जायेंगे मरते जायेंगे। (मुस्लिम)

दूसरे सूर के बाद लोग क़बरों से उठकर गिरोह दर गिरोह अल्लाह तआला की अदालत में हाज़िर होना शुरू हो जायेंगे। (सूरह अन्नबअ)

लोग अपनी क़बरों से इस तेज़ी से उठेंगे जिस तेज़ी से टिड्डियाँ फ़िज़ा में बिखरती हैं। (सूरह अलक़मर)

हज़रत आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: लोग क़यामत के दिन नंगे पांवों, नंगे बदन और ख़तना के बग़ैर इकट्ठा किये जायेंगे। मैंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! क्या सब मर्द और औरतें एक दूसरे की तरफ़ नहीं देखेंगे। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: ऐ आयशा! वह दिन इतना सख़्त होगा कि किसी को एक दूसरे की तरफ़ देखने का होश भी ना होगा। (मुस्लिम)

क़यामत का दिन:

दुनिया के वुजूद से लेकर क़यामत तक सारे इन्सान मैदाने हश्र में जमा हो जायेंगे। (सूरह अलक़हफ़ ४७) लोगों के जमा होने की जगह

यानि मैदान हश्र सर ज़मीने शाम में होगा। (मुसनद अहमद) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: क़यामत के दिन सूरज मखलूक से सिर्फ़ मील भर फ़ासिले पर आ जायेगा और लोग अपने आमाल के मुताबिक़ पसीने में डूबे हुए होंगे, कोई टखनो तक, तो कोई घुटनों तक पसीने में डूबा हुआ होगा। लेकिन नेक लोगों के लिए हश्र का पचास हजार साल का लम्बा अर्सा एक घड़ी के बराबर महसूस होगा। (तबरानी, सहीह बिन हिब्बान) हश्र की गर्मी, पसीना और लम्बी अवधि से तंग आकर अल्लाह के नाफ़रमान लोग दुआ करेंगे कि या अल्लाह! हमें हश्र से छुटकारा दे चाहे उन्हें जहन्नम में डाल दिया जाये।

हौज़े कौसर क़यामत के मैदान में होगा। हौज़े कौसर पर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत जन्नत में दाख़िल होने से पहले पानी पीयेगी। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस हौज़ के बीच में तशरीफ़ फ़रमा होंगे। हौज़े कौसर का पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद, बर्फ़ से ज़्यादा ठंडा, शहद से ज़्यादा मीठा होगा। उसकी तह की मिट्टी मुश्क से ज़्यादा खुशबूदार होगी। जो इसका पानी पीयेगा उसे फिर कभी प्यास ना लगेगी।

क़यामत के दिन गर्मी अपने शबाब पर होगी और हर आदमी को बमुश्किल दो क़दम रखने के लिए जगह मिलेगी। मगर उस सख़्त परेशानी के समय भी सात किस्म के आदमी हैं जिनको अल्लाह तआला अपने (रहमत के) साये में जगह अता फ़रमायेगा और उस दिन उसके साये के सिवा कोई साया ना होगा। एक इन्साफ़ पसंद

बादशाह। दूसरा वह नौजवान जिसने अपनी जवानी अल्लाह की इबादत में लगाई। तीसरा अल्लाह का वह नेक बंदा जिसका दिल मस्जिद से अटका हुआ हो यानि समय पर नमाज़ अदा करता हो। चौथा वह व्यक्ति जो अल्लाह के लिए मोहब्बत करता हो और अल्लाह के लिए ही दुश्मनी करता हो। पांचवा व्यक्ति वह है जिसे खूबसूरत और अच्छे खानदान की लड़की बदकारी की दावत दे तो वह कहे कि मैं अल्लाह से डरता हूँ। छठा व्यक्ति वह है जो चुपके से लोगों की माली मदद करे और सातवां खुशनसीब व्यक्ति वह है जिसने तन्हाई में अल्लाह को याद किया हो और अल्लाह के खौफ से उसके आंसू बह गये हों। (बुखारी)

हदीसों में ज़िक्र है कि मैदाने हश्र में लम्बे समय तक भूखे प्यासे, शदीद गर्मी और बदबूदार पसीने में शराबोर लोग तंग आकर अंबियाए किराम की खिदमत में हाज़िर होंगे कि वह अल्लाह तआला से हिसाब किताब शुरू करने की सिफ़ारिश करें। तमाम अंबियाए किराम सिफ़ारिश करने से इंकार फ़रमा देंगे। आखिर में हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर होंगे, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिसाब किताब शुरू करने की अल्लाह तआला से सिफ़ारिश फ़रमायेंगे। इसी को शफ़ाअते कुबरा कहा जाता है। उसके बाद अल्लाह तआला की अदालत कायम होगी। इन्सान के हाथ, पांवों और दूसरी आज़ा खुद इन्सान के आमाल को बयान करेंगे जैसा कि अल्लाह तआला ने बहुत बार कुरआने करीम में ज़िक्र फ़रमाया है। कम्प्यूटर के ज़माने में इसको समझना बहुत आसान है। आज इन्सान की ज़िन्दगी के एक एक क्षण को सुरक्षित

किया जा सकता है तो खालिके कायनात सारे इन्सानों की ज़िन्दगी के अहवाल को क्यों महफूज नहीं कर सकता? चुनांचे पूरी ज़िन्दगी के हिसाब और किताब के साथ हर व्यक्ति से पांच खास सवाल किये जायेंगे। ज़िन्दगी कहां गुज़ारी? कहां लगाई? कहां से कमाया? यानि प्राप्त माल के असबाब हलाल थे या हराम। माल कहां खर्च किया? यानि माल से संबंधित अल्लाह और बंदों के (हुक्क) अधिकार अदा किये या नहीं। इल्म पर कितना अमल किया? (तिर्मिज़ी) अल्लाह तआला अपने करम से कुछ बंदों को बगैर हिसाब किताब के भी जन्नत में दाखिल फ़रमायेंगे।

जिस व्यक्ति का नामाए आमाल उसके बायें हाथ में दिया जायेगा, सो वह निहायत हसरत से कहेगा काश! मुझ को मेरा नामाए आमाल मिलता ही नहीं और मुझ को ख़बर ही ना होती कि मेरा हिसाब क्या है। काश! मेरी पहली मौत जो दुनिया में आयी थी फ़ैसला कुन होती और दोबारा ज़िन्दा ना होता जिस पर यह हिसाब और किताब हुआ। अफ़सोस! मेरा माल मेरे कुछ काम नहीं आया। मेरा सारा इक़तदार (जाह और मर्तबा) ख़त्म हो गया। ऐसे व्यक्ति के लिए फ़रिशतों को हुक्म होगा कि इस व्यक्ति को पकड़ो और उसके गले में तौक पहना दो, फिर दोज़ख में उसको दाखिल कर दो, फिर एक ऐसी जंजीर में जिसकी लम्बाई सत्तर गज़ है उसको जकड़ दो। यह व्यक्ति अल्लाह तआला पर जिस तरह ईमान लाना ज़रूरी था ईमान नहीं रखता था। और खुद तो किसी को क्या देता, दूसरों को भी ग़रीब आदमी को खिलाने की तरगीब (प्रोत्साहन) नहीं देता था। सो आज इस व्यक्ति का ना कोई दोस्त है और ना उसको खाने पीने की कोई चीज़ नसीब

हैं, केवल इस गंदे पानी के जिसमें जहन्नम वालों की पीप और पस पड़ी होगी, जिसको गुनाहगारों के सिवा कोई नहीं खाता पीता होगा।

(सूरह अल्हाक्का)

हर व्यक्ति को जहन्नम के ऊपर पुल सिरात से गुजरना होगा जो बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ है। कुछ मोमिन पलक झपकने के बक़्द्र उससे गुजर जायेंगे। कुछ बिजली की तरह गुजर जायेंगे। कुछ परिंदे की तेज़ी से, कुछ तेज़ रफ़्तार घोड़ों की तरह और कुछ ऊंटों की रफ़्तार से गुज़रेंगे। कुछ ख़ैर और आफ़ियत के साथ पुल पार करेंगे, कुछ जख्मी किये जायेंगे लेकिन पुल सिरात पार कर लेंगे। जबकि बहुत से लोग ठोकर खाकर जहन्नम में गिर जायेंगे। बाद में नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफ़ारिश पर ईमान वाले लोगों को आहिस्ता आहिस्ता जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाखिल कर दिया जायेगा। अल्लाह तआला हम सबको बग़ैर हिसाब किताब के जन्नतुल फिरदौस में उच्च मक़ाम अता फ़रमाये। आमीन!

सूरह अत्तकासुर

سورة التكاثر

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَلْهَآكُمُ التَّكَاثُرُ (١) حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ (٢) كَلَّا سَوْفَ
تَعْلَمُونَ (٣) ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ (٤) كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ
عِلْمَ الْيَقِينِ (٥) لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ (٦) ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ
الْيَقِينِ (٧) ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ (٨)

सूरह 'अत्तकासुर' की संक्षिप्त तफ़सीर

क्या मरने के बाद कोई दूसरी ज़िन्दगी है?

सूरह अत्तकासुर का अनुवाद: एक-दूसरे से बढ़-चढ़ कर (माल और दौलत) प्राप्त करने की हवस ने तुम्हें ग़फ़लत (लापरवाही) में डाल रखा है, यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तानों में पहुँच जाते हो। हरगिज़ ऐसा नहीं चाहिए, तुम्हें जल्द (शीघ्र) ही सब पता चल जायेगा। फिर (सुन लो कि) हरगिज़ ऐसा नहीं चाहिए, तुम्हें जल्द (शीघ्र) ही सब पता चल जायेगा। हरगिज़ नहीं, अगर तुम यकीनी इल्म (विश्वसनीय ज्ञान) के साथ ये बात जानते होते (तो तुम ऐसा न करते)। यकीन जानो (ये निश्चित है) कि तुम दोज़ख (नरक) को ज़रूर (अवश्य) देखोगे फिर यकीन जानो कि तुम उसको निश्चित रूप से देख लोगे। फिर उस दिन तुमसे उन नेमतों के बारे में पूछा जाएगा (कि उनका क्या हक़ अदा किया)।

8 आयात पर मुश्तमल सूरह अत्तकासुर के अहम मक़ासिद यह हैं कि हर व्यक्ति को चाहिए कि वह दुनियावी ज़िन्दगी और उसके वक़्ती (अस्थायी) आराम को अपना मंज़िले मक़सूद ना समझे, क्योकि इस दुनियावी फ़ानी ज़िन्दगी के बाद एक ऐसी ज़िन्दगी शुरू होने वाली है जहाँ कभी मौत वाक़े नहीं होगी, जहाँ की राहत और सुकून के बाद कभी कोई तकलीफ़ नहीं होगी। कुरआन और हदीस की रोशनी में हर मुसलमान का यह ईमान और अक़ीदा है कि एक दिन ऐसा ज़रूर आयेगा जब दुनिया का सारा निज़ाम ही दरहम बरहम हो जायेगा, आसमान फट जायेगा, सूरज लपेट दिया जायेगा, सितारे टूट-टूट कर गिर पड़ेंगे और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर दुनिया में आने वाले तमाम इन्सानों और जिनों को अल्लाह के दरबार में

ऐसी हालत में हाज़िर किया जायेगा कि हर नफ़्स को सिर्फ़ अपनी ज़ात की फ़िक्र होगी कि उसका नामाए आमाल किस हाथ में दिया जायेगा। उसके बाद उन्हें दुनियावी ज़िन्दगी के आमाल की जज़ा या सज़ा दी जायेगी। इस दिन को 'यौमुल क़यामह' कहा जाता है। कुरआन और हदीस में इस दिन की सख़्ती और हौलनाकी को बयान करते हुए फ़रमाया गया कि क़यामत का दिन पचास हज़ार साल के बराबर होगा। कुरआने करीम में तक़रीबन ७० जगहों पर 'यौमुल क़यामह' का शब्द आया है और 'अल्यौमुल आखिर' और 'दारुल आखिरह' जैसे शब्दों का ज़िक्र कुरआने करीम में बीसियों बार हुआ है। ना सिर्फ़ मुसलमानों बल्कि ईसाइयों और यहूदियों का भी अक़ीदा है कि एक दिन दुनिया और दुनिया की सारी नक़ल और हरकत ख़त्म हो जायेगी और इन्सान के दुनियावी आमाल के मुताबिक़ अल्लाह के हुक्म पर जन्नत या जहन्नम का फैसला सुनाया जायेगा। दूसरी क़ौमों भी किसी ना किसी शक़ल में क़यामत के दिन को मानती हैं। अक़ल का तकाज़ा भी यही है कि इस पूरी क़ायनात के वजूद का कोई अहम मक़सद ज़रूर होना चाहिए और अशरफ़ुल मख़लूक़ात को अपने किये हुए आमाल की जज़ा या सज़ा ज़रूर मिलनी चाहिए।

क़यामत कब आएगी?

सिर्फ़ अल्लाह तआला ही जानता है, अलबत्ता क़यामत तक आने वाले तमाम इन्सानों और ज़िनों के नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार शहादत और बीच वाली उंगली को मिलाकर इरशाद फ़रमाया कि जिस तरह यह दोनों उंगलियाँ एक दूसरे से मिली हुई हैं, बस समझें कि मैं भी क़यामत

के साथ इस तरह भेजा गया हूँ। (सहीह मुस्लिम) यानि हुजुरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कयामत के दर्मियान दुनिया के वजूद से लेकर हुजुरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेअसत (नबी बनाये जाने) तक गुजरे हुए ज़माने के मुकाबले में बहुत कम है और हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कयामत तक कोई नबी नहीं आयेगा। और इस उम्मत के लोगों की उमरें बहुत कम है, इसलिए हमें हर समय उस बड़े दिन की तैयारी करनी चाहिए। कयामत के वाक़े होने की तारीख़ का इल्म तो अल्लाह के पास है, हाँ जिस व्यक्ति की मौत वाक़े हो गयी उसके लिए एक तरह से कयामत वाक़े हो जाती है क्योंकि कुरआन और हदीस की रोशनी में हमारा यह ईमान और अक़ीदा है कि इन्सान की जज़ा या सज़ा कयामत तक स्थगित नहीं की जाती है बल्कि मौत के बाद से दुनिया में किये गये आमाल की जज़ा या सज़ा शुरू हो जाती है। चुनांचे कुरआन और हदीस की रोशनी में पूरी उम्मत मुस्लिमा का इत्तेफ़ाक़ है कि क़ब्र जन्नत के बागीचों में से एक बागीचा बनती है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़।

क्या क़ब्र में अज़ाब होता है?

कुरआने करीम में विभिन्न जगहों पर अज़ाबे क़ब्र का ज़िक्र आया है, यहाँ सिर्फ़ दो आयात पेश हैं: फिरऔन के लोगों को बहुत बुरे अज़ाब ने आ घेरा। आग़ है जिसके सामने उन्हें सुबह और शाम पेश किया जाता है और जिस दिन कयामत आ जायेगी (उस दिन हुक्म होगा कि) फिरऔन के लोगों को सख़्त तरीन अज़ाब में दाख़िल कर दो। (सूरह अलगाफ़िर ४५-४६) इन्सान के मरने के बाद और कयामत से

पहले इन्सान की रूह जिस आलम में रहती है उसे आलमे बरजख कहा जाता है। इस आयत में बताया गया कि फिरऔन और उसके साथियों को आलमे बरजख में जहन्नम के सामने पेश किया जाता है ताकि उन्हें पता चले कि उनका ठिकाना यह है।

इसी तरह फ़रमाने इलाही है: इनको हम दो बार सज़ा देंगे, फिर उनको ज़बरदस्त अज़ाब की तरफ धकेल दिया जायेगा। (सूरह अत्तउबा १०१) इस आयत में स्पष्ट रूप से ज़िक्र है कि ज़बरदस्त और बड़े अज़ाब यानि जहन्नम से पहले भी उन्हें सज़ा दी जायेगी।

क़ब्र के अज़ाब के मुताअल्लिक हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सैंकड़ों फ़रमान हदीसों की किताबों में मौजूद हैं। संक्षेप में सिर्फ़ तीन हदीसें पेश हैं:

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जब दो क़ब्रों पर से गुज़र हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: इन दोनो क़ब्र वालों पर अज़ाब हो रहा है और किसी बड़े गुनाह की वजह से अज़ाब नहीं हो रहा है। एक तो उनमें से चुगलखोरी करता था और दूसरा पेशाब से बचने में एहतियात नहीं करता था। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक हरी टहनी मंगाई और उसे चीर कर दो किया। हर एक की क़ब्र पर एक एक गाड़ दी और फ़रमाया जब तक यह टहनी न सूखे, उम्मीद है कि उनका अज़ाब हल्का हो जाये। (सहीह मुस्लिम)

सहीह मुस्लिम की एक लम्बी हदीस में ज़िक्र है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अगर यह ख़याल ना होता कि कि तुम दफ़न करना छोड़ दोगे तो मैं खुदा से दुआ करता कि वह तुम्हें क़ब्र का वह अज़ाब सुना दे जो मैं सुन रहा हूँ। उसके बाद

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबाए किराम की तरफ़ मुतवज्जेह (ध्यानपूर्वक) होकर फ़रमाया: क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह मांगो। (सहीह मुस्लिम)

नीज़ फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं: जब आदमी मर जाता है तो सुबह और शाम उसे उसका ठिकाना दिखाया जाता है। अगर अहले जन्नत से होता है तो जन्नत और अगर अहले जहन्नम से होता है तो भड़कती हुई आग उसे दिखाई जाती है और कहा जाता है कि यह वह तेरा ठिकाना है जहाँ क़यामत के दिन तुझे उठाकर पहुंचा दिया जायेगा। (सहीह मुस्लिम)

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद की रोशनी में उम्मत मुस्लिमा का इत्तेफ़ाक़ है कि क़ब्र में हर व्यक्ति से तीन सवाल किये जाते हैं: १) तुम्हारा रब कौन है? २) तुम्हारा मज़हब क्या है? ३) यह व्यक्ति कौन हैं जो तुम्हारे बीच रसूल बनाकर भेजे गये? तीनों सवाल के सही जवाब देने पर कामयाबी का फ़ैसला हो जाता है और क़यामत तक के लिए जन्नत की खिड़की खोल दी जाती है। सवालात के जवाब न देने पर उसे अज़ाब दिया जाता है और जहन्नम की खिड़की खोल दी जाती है।

क़ब्र का अज़ाब असल में रूह को होता है। सवालात भी हकीक़त में रूह ही से होते हैं, इसलिए अगर किसी व्यक्ति को दफ़न ना किया जाये तब भी तीनों सवालात होते हैं, अलबत्ता कुछ हदीसों से मालूम होता है कि रूह के साथ बदन को भी अज़ाब होता है। बेशुमार दुनियावी चीज़ें ना समझने के बावजूद हम उनको तसलीम करते हैं, इसी तरह आलमे बरजख़ में अज़ाब और आराम पर हमें मुकम्मल ईमान लाना चाहिए इसकी कैफ़ियत (स्थिति) हमें मालूम ना हो।

क़ब्रिस्तान की ज़ियारत:

हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कई बार क़ब्रिस्तान जाकर क़ब्रों की ज़ियारत करने की तरगीब दी है, चंद हदीसों पेश हैं:

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: क़ब्रिस्तान जाकर क़ब्रों की ज़ियारत किया करो, क्योंकि उसके ज़रिए आख़रत याद आती है। (इब्ने माजा)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मैंने तुम को क़ब्रों की ज़ियारत करने से मना किया था। (अब चूंकि तुम ईमान और अक़ीदे में मज़बूत हो गये हो, इसलिए) क़ब्रिस्तान जाया करो क्योंकि उसके ज़रिए दुनिया से दूरी और आख़रत की याद पैदा होती है। (तिर्मिज़ी)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर वालों के साथ अपनी माँ (हज़रत आमना) की क़ब्र पर गये। खुद भी रोये और दूसरों को भी रुलाया और इरशाद फ़रमाया कि मैंने अपने रब से अपनी माँ की क़ब्र की ज़ियारत (दर्शन) करने की इज़ाजत (आज़ा) तलब की तो मुझे इज़ाजत दे दी गई। तुम भी क़ब्रों की ज़ियारत करो, क्योंकि उसके ज़रिए तुम्हें मौत याद आयेगी। (मुस्लिम)

औरतें क़ब्रिस्तान क्यों नहीं जा सकतीं?

मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी और अबू दाऊद में हदीस है कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन औरतों पर लानत फ़रमायी है जो क़ब्रों की ज़ियारत के लिए जायें।

हदीस की मशहूर किताब (तिर्मिज़ी) के मुसन्निफ़ हज़रत इमाम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैइह ने तो बाब (अध्याय) का नाम ही रखा है कि औरतों को क़ब्र की ज़ियारत करना मकरूह है। इसलिए औरतों को मय्यत की तदफ़ीन के लिए जनाज़े के साथ चलने से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया। (सहीह बुख़ारी) चुनांचे १४०० साल से उम्मतु मुस्लिमा का यही अमल है कि मय्यत को क़ब्रिस्तान लेकर उसकी तदफ़ीन मर्द हज़रात ही करते हैं चाहे मय्यत मर्द हो या औरत। औरतें बहुत जल्दी किसी भी चीज़ से प्रभावित हो जाती हैं, इसलिए औरतें को क़ब्रों की ज़ियारत से मना किया गया, ताकि वह अपनी कमज़ोरी की वजह से शिर्क और बिदाआत जैसे बड़े गुनाहों में मुब्तला ना हो जायें, हालांकि यह बात मुसल्लम है कि क़ब्रों की ज़ियारत करने से आख़रत याद आती है।

क्या मुर्दे सुनते भी हैं?

अब सवाल यह पैदा होता है कि जब कोई व्यक्ति रिश्तेदारों की क़ब्र पर जाकर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात के मुताबिक़ उन्हें सलाम करता है तो क्या वह सुनते भी हैं या नहीं? इसके मुताअल्लिक़ पुराने ज़माने से इख़्तिलाफ़ है। कुछ हज़रात की राय है कि मुर्दे बिल्कुल सुनते ही नहीं हैं, वह सूरह अन्नमल की आयत ८० को दलील (तर्क) के तौर पर पेश करते हैं, जिसमें कहा गया है: तुम मुर्दों को अपनी बात नहीं सुना सकते और ना तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो जब वह पीठ फेरकर चल खड़े हों। हालांकि इस आयत के पृष्ठभूमि से मालूम होता है कि यहां कुफ़ारे मक्का से कहा गया है और अल्लाह तआला की वहदानियत

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत तसलीम ना करने पर ज़िन्दा होने के बावजूद मुर्दा कहा गया। दूसरे हज़रात की राय है कि किसी हद तक मुर्दे सुनते भी हैं, लेकिन जवाब नहीं दे सकते। दलील के तौर पर हदीस की किताबों में वारिद कुछ वाक़ेयात पेश किये जाते हैं जिनसे मालूम होता है कि मुर्दे सुनते भी हैं। मसलन सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम में है कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब बन्दा अपनी क़ब्र में दफ़न कर दिया जाता है तो वह वापस पलटने वाले अपने साथियों की जूतियों की आवाज़ सुनते हैं। इसी तरह सहीह मुस्लिम में है कि जंगे बदर के बाद नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बदर में मरने वालों को मुखातब करके इरशाद फ़रमाया: तुम्हारे साथ तुम्हारे रब ने जो वादा किया था, क्या तुमने उसे सच पा लिया? हज़रात उमर फ़ारूक रज़िअल्लाहु अन्हु ने कहा: या रसूल अल्लाह! क्या यह सुनते हैं? क्या यह जवाब देते हैं? हालांकि यह तो मर चुके हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं जो कुछ कह रहा हूँ, तुम उनसे ज़्यादा नहीं सुनते। हाँ यह तुम्हारी तरह जवाब नहीं दे सकते। इसी तरह एक हदीस है कि अगर कोई व्यक्ति अपने किसी भाई की क़ब्र के पास से गुज़रता है जिसको वह जानता था और सलाम करता है तो उसकी रूह लौटा दी जाती है यहाँ तक वह सलाम का जवाब देता है। इस हदीस की सनद में यक़ीनन कमज़ोरी है, लेकिन बड़े बड़े उलमा हत्ता कि अल्लमा इब्ने क़य़िम रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी मशहूर किताब अरूह में यह हदीस ज़िक्र की है।

सहीह मुस्लिम और हदीस की दूसरी किताबों में वारिद है कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नतुल बक्रीअ जाकर कब्रिस्तान में मदफून हज़रात को सलाम किया करते थे और पूरी उम्मत मुस्लिमा अपने आखिरी नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल और अफआल की रोशनी में मुत्तफ़िक् है कि हम जब भी कब्रिस्तान जायें तो उन्हें सलाम करें। सऊदी आलिमे दीन शेख मोहम्मद अलमुख्तार अशशनक़ीती ने अपनी किताब “अज़वाउल बयान ४२१/६” में लिखा है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का “अस्सलामु अलैइकुम” और “वइन्ना इंशाअल्लाहु बिकुम” जैसे (मुखातब) के अल्फ़ाज से खिताब करना इस बात की स्पष्ट दलील (तर्क) है कि कब्रिस्तान में मदफून हज़रात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सलाम को सुन रहे हैं, क्योंकि अगर वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सलाम को नहीं सुन रहे होते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उनको सलाम करने का क्या फ़ायदा। हाँ इस मसले में कुछ हज़रात ने किसी दलील के बग़ैर हद से तज़ावुज़ किया है, मसलन वह समझते हैं कि कब्र में मदफून व्यक्ति हमारे मसाइल को हल कर देगा जो यकीनन ग़लत है। इस तरह का अक़ीदा रखना शिर्क़ है। गर्ज़ कि अगर हम अपने किसी रिश्तेदार की कब्र पर जाकर सलाम करते हैं तो वह हमारे सलाम को ज़रूर सुनते हैं चाहे जवाब देते हैं या नहीं। अल्लामा इब्ने तैमियह रहमतुल्लाह अलैइह ने लिखा है कि इन दलाइल से मालूम हुआ कि मय्यत किसी हद तक ज़िन्दा व्यक्ति की बात को सुनते हैं। लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि वह हमेशा हर बात को सुनते रहें, लेकिन कुछ बातों को वह ज़रूर सुनते हैं। (मज़मूउल फ़तावा ३६६/५)

जिस तरह आलमे बरजख की ज़िन्दगी और उसमें अज़ाब या आराम और सुकून पर हमारा ईमान है इसी तरह हमारा यह ईमान है कि अल्लाह तआला ने नेक बंदों के लिए अपना मेहमान खाना जन्नत तैयार कर रखा है जहाँ आराम और आराइश का ऐसा सामान अल्लाह तआला ने मुहय्या कर रखा है कि कोई बन्दा उसको सोच भी नहीं सकता। दूसरी तरफ़ काफ़िरों और गुनाहगारों के लिए भड़कती हुई आग की शकल में जहन्नम है जहाँ पीप और बहता हुआ खून खाने के लिए पेश किया जायेगा। अल्लाह तआला जहन्नम से छुटकारा और बग़ैर हिसाब और किताब के जन्नतुल फिरदौस का फैसला फ़रमाये। आमीन!

सूरह अलअस्र

سورة العصر

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْعَصْرِ (١) إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ (٢) إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ (٣)

सूरह 'अलअस' की संक्षिप्त तफ़सीर

दुनिया के नुक़सान से बचने और बड़ा लाभ प्राप्त करने का कुरानी कानून

सूरह अलअस का अनुवाद: क़सम है ज़माने की कि हर इन्सान बड़े घाटे में है, मगर वह लोग जो ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये और आपस में ताकीद करते रहे सच्चे दीन की और आपस में ताकीद करते रहे धीरज और धैर्य (सब्र) की।

सूरह अलअस की खास फ़ज़ीलत:

यह कुरआने करीम की बहुत मुख़्तसर सी सूरत है, जिसमें चैदह शब्दों की सिर्फ़ तीन आयात हैं, लेकिन ऐसी जामे हैं कि बक़ौल हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैइह (१५०हिजरी-२०४हिजरी) कि अगर लोग इस सूरत को ग़ौर और फ़िक्र और तदब्बुर (सोच-विचार) के साथ पढ़ लें तो दीन और दुनिया की दुरुस्ती के लिए काफ़ी हो जाये। (इब्ने कसीर) हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सहाबए किराम में से दो व्यक्ति आपस में मिलते तो उस समय तक जुदा ना होते जब तक उनमें से एक दूसरे के सामने सूरह अलअस ना पढ़ ले। (तबरानी)

शब्दों की तहक़ीक़ (अनुसंधान):

“वलअस” इस सूरत में अल्लाह तआला ने अलअस की क़सम खायी है जिससे मुराद ज़माना है, क्योंकि इन्सान के तमाम हालात, उसकी परवरिश, आमाल और अखलाक सब ज़माने के रात-दिन में ही होंगे। जहां तक क़सम का ताल्लुक है, अल्लाह तआला के कलाम में क़सम के बग़ैर भी शक और शुबह की कोई गुंजाइश नहीं है, लेकिन अल्लाह

तआला बन्दों पर रहम फ़रमाकर किसी हुक्म की खास ताकीद और उसकी महत्व के कारण से क़सम खाकर कोई हुक्म बंदो को करता है, ताकि बंदे उस हुक्म की अहमियत को समझकर उस को करें और हुक्म (आदेश) मानने में कोई सुस्ती ना करें। अलबत्ता याद रखें कि इन्सानों के लिए अल्लाह तआला के नाम के अलावा किसी चीज़ की क़सम खाना जायज़ नहीं है जैसा कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की स्पष्ट तालीमात हदीसों की किताबों में मौजूद हैं, मसलन लोगों का कहना तेरे सर की क़सम या तेरी क़सम वगैरह इस तरह के शब्दों के साथ क़सम खाना जायज़ नहीं है। वैसे तो क़सम खाने से ही बचना चाहिए, क्योंकि क़सम खाकर कोई बात कहना अच्छा अमल नहीं है, लेकिन अगर किसी मौक़े पर क़सम खानी ही पड़े तो सिर्फ़ अल्लाह के नाम की क़सम खानी चाहिए।

“अलइन्सान” में अलिफ लाम जिन्स के लिए है यानि क़यामत तक आने वाला हर हर इन्सान इस हुक्म में दाखिल है चाहे मर्द हो या औरत, ग़रीब हो या मालदार, ताक़तवर हो या कमज़ोर, बूढ़ा हो या नौजवान और बादशाह हो या गुलाम।

“खुस्र” कुरआने करीम में इन्सान के नफ़्स या माल या अहल और अयाल या दुनिया और आखिरत के घाटे को विभिन्न जगहों पैर ज़िक्र किया गया है। इस आयात में इन्सान के घाटे से अल्लाह की मुराद क्या है? यह समझने की ज़रूरत है।

“इन्नल इन्साना लफ़ी खुस्र” जुमला इस्मियह (वाक्य) होने की वजह से इसमें ताकीद मौजूद है। अरबी ज़बान में शब्द “इन्ना” का इस्तेमाल ताकीद के लिए होता है। और अल्लाह तआला की क़सम खाकर इस बात को बयान करना किसी संदेह को बिल्कुल ही ख़त्म

कर देता है। नफ़ा में कमी या बिल्कुल नफ़ा ना होना नुक़सान कहलाता है, लेकिन अगर कुल धन (Capital) ही ख़त्म हो जाये तो उसे ख़सारा (नुक़सान) कहते हैं। इस आयत में सिर्फ़ जान या माल का ख़सारा मुराद नहीं बल्कि इन्सानी ख़सारा मुराद है जिसका कोई बदल संभव नहीं है। इसीलिए अल्लाह तआला ने क़सम खाकर बहुत ज़्यादा ताकीद के साथ यह बात बयान फ़रमायी है। इसी तरह अल्लाह तआला ने सूरह अत्तीन में चार चीज़ों (इन्जीर, ज़ैतून, तूरेसइना का पहाड़ और मक्का मुकर्रमा) की क़सम खाकर इरशाद फ़रमाया: हम ने इन्सान को सुन्दर आकार में ढाल कर पैदा किया है, फिर हम उसे पस्ती वालों में सबसे ज़्यादा निचली हालत में कर देते हैं, यानि जहन्नम में फेंक देते हैं, सिवाये उनके जो ईमान लाये और उन्होंने नेक अमल किये, तो उनको ऐसा अज़्र (परिणाम) मिलेगा जो कभी ख़त्म नहीं होगा। अर्थात अगर हमने शैतान और नफ़स की ख़्वाहिश के खिलाफ़ और अल्लाह के अहक़ाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश नहीं की तो नाकामी है। हमेशा हमेशा की कामयाबी पाने के लिए सोने से भी ज़्यादा कीमती चीज़ यानि समय का सही इस्तेमाल करना पड़ता है। हर सिकंड हमारी उम्र कम हो रही है और हम बराबर अपनी मौत के करीब होते जा रहे हैं, किसी भी समय मौत का फ़रिश्ता हमारी रूह क़ब्ज़ करने आ सकता है। हमारा जो लम्हा (समय) भी अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी में गुज़र रहा है वह हमें नुक़सान की तरफ़ ले जा रहा है।

दुनिया और आखिरत की कामयाबी प्राप्त करने के लिए चार आमाल:

इस मुख्तसर सूत्र में इन्सान और पूरी कायनात को पैदा करने वाले ने ज़माने की कसम खाकर इरशाद फ़रमाया कि हर इन्सान बड़े घाटे और नुकसान में है और घाटे से सिर्फ़ वही लोग बच सकते हैं जिनके अन्दर चार विशेषतायें मौजूद हों:

1) अल्लाह और रसूल पर ईमान लाना, इसी तरह नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम तालीमात पर ईमान लाना।

अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब यह है कि इस बात का दिल से यकीन करना और ज़बान से इक़रार करना कि अल्लाह ही पूरी कायनात को पैदा करने वाला है, उसी ने इन्सान, जिन, आसमान, ज़मीन, पहाड़, सूरज, चांद, सितारे, आग, पानी, हवा, जानवर, परिन्दे, दरिन्दे और पेड़ अपनी कुदरत से पैदा किये। वही सारे जहां का पालनहार है। उसका कोई शरीक नहीं, ना वह किसी की औलाद है और ना कोई उसकी औलाद। वह हमेशा से है, हमेशा रहेगा। खुशकी और समन्दर में जो कुछ है वह इससे वाक़िफ़ है। किसी पेड़ का कोई पत्ता नहीं गिरता जिसका उस इल्म ना हो और ज़मीन की अंधेरियों में कोई दाना या कोई ख़ुशक या तर चीज़ ऐसी नहीं है जो उसके पास एक खुली किताब में दर्ज ना हो। मुमकिन है कि हमारी अक़लें इस बात को समझने से कासिर (असमर्थ) हों मगर सैंकड़ों दुनियावी उमूर समझ में ना आने के बावजूद हम उनके आगे सर झुका देते हैं, मसलन हमारी अक़लें यह भी समझने से कासिर हैं कि इन्सान दुनिया में क्यों आता है और ना जाने की ख़्वाहिश के बावजूद सिर्फ़ ६०-७० साल की उम्र में क्यों चला जाता है? हाँ हमारी अक़लें यह ज़रूर तसलीम करती हैं कि सारी कायनात खुद बख़ुद पैदा

नहीं हो गयी, यकीनन इन सारी चीज़ों को पैदा करने वाली एक ज़ात है, वही अल्लाह है जिसको हम अपनी अक़लों से नहीं समझ सकते, अलबत्ता अल्लाह की मख़लूक़ात में ग़ौर और फ़िक्र करके अल्लाह की शक्ति और कुदरत को तसलीम (स्वीकार) किये बग़ैर नहीं रह सकते, चुनांचे आज भी दुनिया की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा अल्लाह की ज़ात को ज़रूर मानता है।

इन्सानों और जिनों की तखलीक़ का मक़सद अल्लाह तआला की इबादत करना है। हमारी दुनियावी ज़िन्दगी कैसे इबादत बने इसके लिए अल्लाह तआला अपने कुछ बंदों को चयन फ़रमाकर नबी और रसूल बनाते हैं। अल्लाह तआला फरिश्तों के ज़रिए नबी और रसूल के पास अपने अहकाम नाज़िल फ़रमाता है कि क्या काम करना है और क्या काम नहीं करना, क्या खाना है और क्या नहीं खाना। नबी और रसूल अपने क़ौल और अमल से लोगों की रहनुमाई करता है। नबियों का यह सिलसिला हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से शुरू होकर हज़रत इब्राहिम, हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जैसे जलीलुल क़द्र अंबियाए किराम से होता हुआ हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ख़त्म हो गया, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत किसी क़बीला या जगह या समय के साथ ख़ास नहीं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलमी रिसालत से नवाज़ा गया। अल्लाह के रसूल पर ईमान लाने का मतलब यही है। इसी तरह कुरआन और हदीस की रोशनी में हमारा यह ईमान है कि इस दुनियावी ज़िन्दगी के ख़त्म होने के बाद उख़रवी ज़िन्दगी शुरू होती है जहां की कामयाबी का दारो मदार (निर्भरता) दुनियावी ज़िन्दगी में नेक आमाँल करने पर है जैसा कि

इसी सूरत में आगे बयान है। कामयाब लोग जन्नत में जायेंगे जहां अल्लाह तआला ने राहत और सुकून के ऐसे इन्तज़ामात कर रखे हैं कि हम सोच भी नहीं सकते और नाकाम लोग जहन्नम की दहकाई हुई आग में डाले जायेंगे जहां की आग की गर्मी दुनियावी आग से ६९ गुना ज़्यादा है।

२) नेक आमाल (काम) करना। इन्सान की कामयाबी के लिए दूसरी बुनियादी शर्त नेक अमल है। नेक अमल के लिए यह बुनियादी शर्तें हैं:

(क) अमल खालिस अल्लाह की रज़ामंदी के लिए किया जाये।

(ख) तमाम नबियों के सरदार हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात के मुताबिक़ किया जाये, चाहे अमल का ताल्लुक़ इबादात से हो या लेनदेन से या समाज से या अखलाक़ से।

३) हक़ की नसीहत करना। यानि ईमान लाने और नेक अमल करने वाले लोग एक दूसरे को दीने इस्लाम की नसीहत करते रहें। अल्लाह तआला नेक बंदों की विशेषताएं बयान करते हुए फ़रमाता है: मोमिन मर्द और मोमिन औरतें आपस में एक दूसरे के मददगार हैं। अच्छी बातों का हुक्म करते हैं और बुराइयों से रोकते हैं, नमाज़ कायम करते हैं, ज़कात अदा करते हैं, अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करते हैं। **(सूरह अत्तउबा ७१)** इस आयत में अल्लाह तआला ने मोमनीन की सिफ़ात में अम्र बिलमारूफ़ और नही अनिल मुनकर की ज़िम्मेदारी को नमाज़ और रोज़ा बल्कि अल्लाह और उसके रसूल की इताअत से भी पहले ज़िक्र किया जिससे यकीनन उस काम की अहमियत और ताकीद मालूम होती है। दीने इस्लाम की दावत देना खुद एक नेक अमल है, मगर उम्मत मुहम्मदिया का मक़सद लोगों

को अच्छाइयों की तरफ बुलाना है। कुरान की आयात और हदीसों इस हकीकत पर शाहिद हैं, चुनांचे फ़रमाने इलाही हैं: (मुसलमानो!) तुम वह बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के फ़ायदे के लिए वजूद में लायी गयी है। तुम अच्छाइयों का हुक्म करते हो, बुराईयों से रोकते हो और अल्लाह तआला पर ईमान रखते हो। (सूरह आले इमरान ११०) मुफ़स्सरीन का इत्तेफ़ाक़ (एकता) है कि इस उम्मत का बेहतरीन और ख़ैर उम्मत होना उसके दाई होने और अम्र बिलमार्फ़ और नही अनिल मुनकर की ज़िम्मेदारी अन्जाम देने की वजह से है, इसीलिए इस ज़िम्मेदारी को अल्लाह तआला ने अलग से ज़िक्र फ़रमाया।

४) सब्र की तलक़ीन करना (समझाते रहना)। यानि एक दूसरे को सब्र की तलक़ीन करते रहें। अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम “कुरआने करीम” में जगह जगह सब्र करने की तालीम दी। मसलन: ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से मदद हासिल करो। बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है और जो लोग अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हों उनको मुर्दा ना कहो। दरअसल वह ज़िन्दा हैं, मगर तुम को (उनकी ज़िन्दगी का) एहसास नहीं होता और देखो हम तुम्हें आजमायेंगे ज़रूर (कभी) डर से और (कभी) भूख से और (कभी) माल और जान और फलों में कमी करके और जो लोग (ऐसे हालात में) सब्र से काम लें उनको खुशखबरी सुना दो। (सूरह अलबक्रा १५३-१५५) इसी तरह फ़रमाने इलाही हैं: ऐ ईमान वालो! सब्र करो और दुश्मन के मुकाबले में डटे रहो। (सूरह आले इमरान २००) क़यामत तक आने वाले इन्सानों और जिनों के आखिरी नबी हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपने क़ौल और अमल से सब्र करने की तरगीब दी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद

फरमाया: बिला शुबह सब्र वही है जो तकलीफ के आगाज़ में किया जाये। (सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम)

गर्ज दीन और दुनिया के खसारे से बचने और बड़ा लाभ प्राप्त करने का यह कुरआनी नुस्खा चार भागों पर आधारित है जिनमें पहले दो भाग (ईमान और नेक आमाल) अपनी ज़ात की इस्लाह से संबंधित हैं और दूसरे दो भाग दूसरों की हिदायत और इस्लाह से संबंधित हैं। यानि हम अपनी ज़ात से भी अल्लाह तआला के अहकाम नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा के अनुसार बजा लायें और साथ में यह कोशिश करें कि हमारी औलाद, हमारे रिश्तेदार, हमारे पड़ोसी, हमारी कम्पनी में काम करने वाले हज़रात, हमारे शहर में रहने वाले लोग और सारी इन्सानियत अल्लाह की मर्ज़ी के अनुसार इस दुनियावी ज़िन्दगी को गुज़ारने वाली बने, ताकि हम सब बड़े नुक़सान से बचकर हमेशा हमेशा की कामयाबी प्राप्त करने वाले बन जायें। हर व्यक्ति अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा ले कि उसके अन्दर यह चार औसाफ़ (गुण) मौजूद हैं या नहीं। कुरआने करीम के इस स्पष्ट एलान से मालूम हुआ कि अगर यह चार औसाफ़ या उनमें से कोई एक वस्फ़ (गुण) भी हमारे अन्दर मौजूद नहीं है तो हम दुनिया आख़रत में नाकामी और बड़े नुक़सान की तरफ़ जा रहे हैं। इसलिए अभी समय है, मौत कब आ जाये किसी को नहीं मालूम, हम सब यह पक्का इरादा करें कि दुनिया और आख़िरत की कामयाबी प्राप्त करने और बड़े नुक़सान से बचने के लिए यह चारों (गुण) अपनी ज़िन्दगी में आज बल्कि अभी से लाने की कोशिश करेंगे।

सूरह अलहुमज़ा

سورة الهمزة

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ (١) الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ (٢)
يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ (٣) كَلَّا لَيُنْبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ (٤)
وَمَا أَذْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ (٥) نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ (٦) الَّتِي
تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ (٧) إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّوَصَّدَةٌ (٨) فِي عَمَدٍ
مُمَدَّدَةٍ (٩)

सूरह 'अलहुमज़ा' की संक्षिप्त तफ़सीर

चुगली, दोष लगाना, ताना मारना और दूसरे का माल हड़पना जहन्नम में ले जाने वाले गुनाह (पाप) हैं

सूरह अलहुमज़ा का अनुवाद: बड़ी खराबी है उस व्यक्ति की जो पीठ पीछे दूसरों पर ऐब लगाने वाला, (और) मुँह पर ताने देने का आदी हो, जिसने माल इकट्ठा किया हो और उसे गिनता रहता हो। वह समझता है कि उसका माल उसे हमेशा ज़िन्दा रखेगा। हरगिज़ नहीं! उस को तो ऐसी जगह में फेंका जायेगा जो चूरा चूरा करने वाली है और तुम्हें क्या मालूम वह चूरा चूरा करने वाली चीज़ है? अल्लाह की सुलगाई हुई आग जो दिलों तक जा चढ़ेगी। यकीन जानो वह उन पर बंद कर दी जायेगी जबकि वह (आग के) लम्बे चौड़े सुतूनों में (घिरे हुए) होंगे।

शब्दों की तहकीक़ (अनुसंधान): **وَيْلٌ** **वैलुन** का मतलब बर्बादी, बड़ी खराबी और अज़ाब के हैं, और जहन्नम की वादी का नाम भी वैल है। यानि जो हज़रात तीन गुनाहों (गीबत, ताना देना और नाहक़ माल जमा करना) में व्यस्त हैं उन्हें जहन्नम की वैल नामी वादी में डाला जायेगा। सूरह अलमाऊन में ज़िक्र है कि नमाज़ों में कोताही करने वालों को भी जहन्नम की इसी वादी में डाला जायेगा। अल्लाह तआला हम सबकी हिफ़ाजत फ़रमाये। **هُمَزْهُمَزْ** **हुमज़ह और लुमज़ह:** मुबालगे (अतिशयोक्ति) के शब्द हैं, हमज़ुन के मअना इशारा बाज़ी करने के और लम्ज़ुन के मअना ऐब लगाने या ताना देने के हैं। किसी व्यक्ति का मज़ाक उड़ाना, किसी का ऐब निकालना, किसी की पीठ पीछे बुराई करना यानि गीबत, इसी तरह किसी को ताने देना,

किसी को ज़लील करना और बुरा भला कहना यह सारी शक्तें इस आयत के अंतर्गत आती हैं और यह सब बड़े गुनाह हैं जिनसे बचना हर व्यक्ति के लिए ज़रूरी है। इन गुनाहों को करने वाले व्यक्तियों को जहन्नम में सख्त अज़ाब दिया जायेगा अगर मौत से पहले हकीकी तौबा नहीं की। गर्ज़ कि अल्लाह के बन्दों में बदतर लोग वह हैं जो चुगलखोरी करते हैं और दोस्तों और रिश्तेदारों के बीच झगड़ा कराते हैं, शरीफों की पगड़ियाँ उछालते हैं और बेगुनाहों के ऐब तलाश करते रहते हैं। अल्लाह तआला **सूरह अल हुजुरात आयत ११** में इरशाद फ़रमाता है कि ना मर्द दूसरे मर्दों का मज़ाक उड़ाये, हो सकता है कि वह जिनका मज़ाक उड़ा रहे हैं खुद उनसे बेहतर हों और ना औरतें दूसरी औरतों का मज़ाक उड़ाये, हो सकता है कि वह जिन का मज़ाक उड़ा रही हैं खुद उनसे बेहतर हों और तुम एक दूसरे को ताना न दिया करो और ना एक दूसरे को बुरे शब्दों से पुकारो। ईमान लाने के बाद गुनाह करना बहुत बुरी बात है। और जो लोग इन बातों से बाज़ ना आयें तो वह ज़ालिम लोग हैं।

गीबत क्या है? इस आयत में हमें गीबत करने से मना किया गया है। सबसे पहले इरशादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रोशनी में समझें कि गीबत क्या चीज़ है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबाए किराम से फ़रमाया: क्या तुम्हें मालूम है कि गीबत क्या है? सहाबाए किराम ने जवाब दिया: अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा बेहतर जानते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अपने भाई की उस चीज़ का ज़िक्र करना जिसे वह नापसंद करता हो। कहा गया अगर वह चीज़ें उसके अन्दर मौजूद हों तो? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर वह चीज़

उसके अन्दर हो तो तुम ने गीबत की और अगर ना हो तो वह बोहतान (दोष) होगा। (मुस्लिम) हुजुरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस इरशाद से मालूम हुआ कि गीबत का मतलब यह है कि दूसरे लोगों के सामने किसी की बुराइयों और कोताहियों का ज़िक्र किया जाये जिसे वह बुरा समझे और अगर उसकी तरफ़ ऐसी बातें जोड़ दी जायें जो उसके अन्दर मौजूद ही नहीं हैं तो वह बोहतान है। किसी मुसलमान भाई की किसी के सामने बुराई बयान करना यानि गीबत करना ऐसा ही जैसे मुर्दार भाई का गोश्त खाना। भला कौन ऐसा होगा जो अपने मुर्दार भाई का गोश्त खाना पसंद करेगा। अल्लाह तआला ने गीबत से बचने का हुक्म दिया है और उससे नफ़रत दिलायी है, इरशादे बारी हैं: तुम में से कोई किसी की गीबत ना करे, क्या तुम में से कोई भी अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना पसंद करता है? तुम को उससे घिन आयेगी। (सूरह अलहुजुरात १२)

मेअराज के सफ़र के दौरान हुजुरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जन्नत और दोज़ख के हालात के साथ विभिन्न गुनाहगारों के हालात भी दिखाये गये जिनमें से एक गुनाहगार के हालात पेश करता हूँ ताकि इस गुनाह (गीबत) से हम खुद भी बचें और दूसरों को भी बचने की तरगीब दें। हज़रत अनस रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस रात मुझे मेअराज कराई गयी, मैं ऐसे लोगों पर गुज़रा जिनके नाखून तांबे के थे और वह अपने चेहरों और सीनों को छील रहे थे। मैंने जिब्राइल (अलैहिस्सलाम) से पता किया कि यह कौन लोग हैं? उन्होंने जवाब दिया कि वह लोग हैं जो लोगों के

गोشت खाते हैं (यानि उनकी गीबत करते हैं) और उनकी बेआबरूई करने में पड़े रहते हैं। (अबू दाऊद)

किया माल का जमा करना गुनाह है?

अल्लज़ी जमआ मालऊँ वअददह: जो ना हक तरीके से माल प्राप्त करके गिन गिन कर रखता हो। कुरान की दूसरी आयात और हदीसों से मालूम होता है कि मुतलकन माल का जमा करना गुनाह नहीं है, बल्कि माल अल्लाह तआला की नेमतों में से एक बड़ी नेमत है जिसके ज़रिए इन्सान अल्लाह तआला के हुक्म से अपनी दुनिवायी ज़रूरतों को पूरा करने की कोशिश करता है, लेकिन शरीअते इस्लामिया ने हर व्यक्ति को मुकल्लफ़ बनाया है कि वह सिर्फ़ जायज़ और हलाल तरीके से ही माल कमाये, क्योंकि क़यामत के दिन हर व्यक्ति को माल के सम्बंधित अल्लाह तआला को जवाब देना होगा कि कहां से कमाया यानि वसाइल (स्रोत) क्या थे और कहां खर्च किया यानि माल से मुताअल्लिक हुक्कुल इबाद (अधिकार) या हुक्कुअल्लाह में कोई कोताही तो नहीं की। अर्थात् धन प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना और भविष्य की ज़रूरियात को पूरा करने में लिए माल जमा करना गलत नहीं है अगर माल को जायज़ ज़रूरतों से प्राप्त किया जा रहा है और हुक्क की अदायगी मुकम्मल की जा रही है।

यहसबु अन्ना मालहु अखलदह: माल की मोहब्बत में वह इस तरह लग गया कि वह आख़रत को भूल गया और उसके आमाल से ऐसा महसूस होता है कि वह यह समझ रहा है कि मैं हमेशा ज़िन्दा रहूंगा, हालांकि हर चीज़ खत्म होने वाली है, सिवाए अल्लाह की ज़ात

के। हुक्मत अल्लाह ही की है और उसी की तरफ़ हम सबको लौट कर जाना है। इन्सान जहाँ भी होगा एक ना एक दिन मौत उसे जा पकड़ेगी, चाहे वह मज़बूत किलों में ही क्यों ना रह रहा हो। हर व्यक्ति का मरना निश्चित है, लेकिन मौत का समय और जगह सिवाए अल्लाह की ज़ात के किसी व्यक्ति को मालूम नहीं। चुनांचे कुछ बचपन में, तो कुछ जवानी में और कुछ अधेड़ उम्र में, जबकि बाक़ी बुढ़ापे में मर जाते हैं। कुछ स्वस्थ तंदरुस्त नौजवान सवारी पर सवार होते हैं लेकिन उन्हें नहीं मालूम कि वह मौत की सवारी पर सवार हो चुके हैं। इसलिए हमें तौबा करके नेक आमाल की तरफ़ बढ़ना चाहिए। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: पांच चीज़ों से पहले पांच चीज़ों से फ़ायदा उठाया जाये। बुढ़ापा आने से पहले जवानी से। मरने से पहले ज़िन्दगी से। काम आने से पहले ख़ाली समय से। ग़ुरबत से पहले माल से। बीमारी से पहले स्वास्थ्य से।

कल्ला लयुम्बज़न्ना फ़िल हुतमह: हरगिज़ नहीं! उसको तो ऐसी जगह में फेंका जायेगा जो चूरा चूरा करने वाली है। **अलहुतमह:** यह भी मुबालग़े (अतिशयोक्ति) का सीगा (शब्द) है, यानि चूरा चूरा कर देने वाली। **यह क्या चीज़ है?** यह सवाल उसकी होलनाकी (भयानकता) बयान करने के लिए है कि यह कोई मामूली चीज़ नहीं है, बल्कि इस पूरी कायनात के पैदा करने वाले की भड़कायी हुई आग है।

जहन्नम क्या है? अल्लाह तआला फ़रमाता है: ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को जहन्नम की आग से बचाओ जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं। (सूरह अत्तहरीम ६) इसी तरह

फ़रमाने इलाही हैं: ना तो उनका काम तमाम किया जायेगा कि वह मर ही जाये और ना उनसे जहन्नम का अज़ाब हलका किया जायेगा। (सूरह फ़ातिर ३६) यानि जहन्नम में ना मौत आयेगी और ना ही अज़ाब कम किया जायेगा। कुरआने करीम की विभिन्न आयात में ज़िक्र है कि जहन्नमियों की गिजा खौलता हुआ पानी, कांटों वाला खाना, गले में अटकने वाला खाना, ज़ख्मों के धोवन और पीप, पिघला हुआ तांबा इत्यादि हैं, यानि बहुत ज्यादा तकलीफ़दह चीज़ें ही जहन्नमियों को खाने और पीने के लिए दी जायेंगी। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: जब एक दफ़ा उनकी खाल जल चुकी होगी तो हम उसकी जगह दूसरी नयी खाल पैदा कर देंगे ताकि अज़ाब चखते ही रहें। (सूरह अन्निसा ५६) इसी तरह फ़रमाने इलाही हैं: दोज़खियों को मारने के लिए लोहे के गुर्ज (एक किस्म का हथियार) हैं, वह लोग जब भी जहन्नम की घुटन से निकलना चाहेंगे फिर उसी में धकेल दिये जायेंगे और उनसे कहा जायेगा कि जलने का अज़ाब चखते रहो। (सूरह अलहज २१-२२)

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जहन्नम को एक हज़ार साल तक धौंका गया तो उसकी आग लाल हो गयी। फिर एक हज़ार साल तक धौंका गया तो उसकी आग सफ़ेद हो गयी। फिर एक हज़ार साल तक धौंका गया तो उसकी आग काली हो गयी। चुनांचे जहन्नम अब काले अंधेरी वाली है। (तिर्मिज़ा, इब्ने माजा) हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जहन्नमियों में सबसे हलका अज़ाब उस व्यक्ति पर होगा जिसकी दोनो जूतियां और तसमे आग के होंगे, जिनकी वजह से हांडी की तरह उसका दिमाग़ खोलता होगा। वह समझेगा कि मुझे सबसे

ज़्यादा अज़ाब हो रहा है, हालांकि उसको सबसे कम अज़ाब होगा। (बुखारी और मुस्लिम) हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: तुम्हारी यह आग (जिसको तुम जलाते हो) दोज़ख (नरक) के अज़ाब का सत्तरवां भाग है। सहाबा ने अज़्र किया कि जलाने को तो यही बहुत है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हाँ, उसके बावजूद दुनिया की आग से जहन्नम की आग जलाने में ६९ दर्जा बढ़ी हुई है। (बुखारी और मुस्लिम) जहन्नम ऐसा विषय है कि इस विषय पर सैंकड़ों किताबें लिखी गयी हैं। मैंने सिर्फ़ चंद बातें कुरआन और हदीस की रोशनी में लिखी हैं। इन्तहाई तकलीफों की जगह जहन्नम से बचने का एक ही तरीका है कि अपनी दुनियावी ज़िन्दगी अल्लाह के अहकाम और नबी के तरीक़े के मुताबिक़ गुज़ारने की कोशिश करें, जैसा कि शायर मश्रिक अल्लामा इकबाल रहमुतल्लाह अलैइह ने कहा है:

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी
यह खाकी अपनी फ़ितरत में ना नूरी है ना नारी है

अल्लती तत्तालिउ अलल अफ़इदह: इन बताये गए गुनाहों के करने वालों को ऐसी आग में डाला जायेगा जो दिलों तक जा चढ़ेगी। वैसे तो आग की विशेषता यही है कि वह इन्सान के शरीर के अंग को जला देती है, लेकिन इस आग का खास मिज़ाज (स्वभाव) यह होगा कि वह पहले उन दिलों को पकड़ेगी जो माल की मोहब्बत में आख़रत को भूल गये थे। इन्सान के ज़रिए बनायी गई नई टेक्नालाजी की मदद से कुछ उपकरणों से विशेष काम लिये जाते हैं,

अल्लाह ने जहन्नम में एक ऐसी खास आग बनायी है जिसका सबसे पहला हमला उन दिलों पर होगा जिनमें लोगों के लिए इर्ष्या (जलन) और माल की ऐसी मोहब्बत जगह कर गयी थी कि वह अल्लाह और उसके रसूल की बात मानने से रूकावट बनी। कुछ मुफ़स्सरीन ने इस आयत की तफ़सीर इस तरह बयान फ़रमायी है कि दुनिया की आग जब इन्सान के बदन को लगती है तो दिल तक पहुंचने से पहले ही इन्सान की मौत वाक़े हो जाती है, लेकिन आख़रत में मौत तो आती नहीं तो वह दिल तक पहुंचेगी।

इन्नहा अलइहिम मूअसदतुन फ़ी अमदिम मुमद्दह: लम्बे लम्बे स्तम्भ का मतलब यह है कि आग के इतने बड़े बड़े शोले होंगे जैसे स्तम्भ होते हैं और जहन्नम वाले उसमें बंद होंगे। अल्लाह तआला हम सब के लिए जहन्नम से छुटकारे का फैसला फ़रमा।

इस सूरह में हमारे लिए सबक़ यह है कि दुसरे गुनाहों के साथ हमें तीन गुनाहों से हमेशा बचना चाहिए। हम्ज़ लम्ज़ और नाजायज़ वसाइल से माल जमा करना।

हम्ज़ और लम्ज़ के विभिन्न मायने हैं: ग़ीबत करना, ऐब जोई करना, ताना देना, बुरा भला कहना और किसी व्यक्ति की तौहीन करना वगैरह। चूँकि इन गुनाहों का ताल्लुक बज़ाहिर (स्पष्ट) हुक्कूल इबाद से है, इसलिए इन गुनाहों से बिल्कुल बचें, अपने किये हुए गुनाह पर शर्मिन्दा हों और आइन्दा ना करने का पक्का इरादा करके अल्लाह तआला से माफ़ी मांगें और उस व्यक्ति से पहली फ़ुर्सत में मामला साफ़ करें, इसी में दोनों जहां की ख़ैर, इज़्ज़त और कामयाबी छुपी है।

सूरतुल फ़ील

سورة الفيل

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ (١) أَلَمْ يَجْعَلْ
كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ (٢) وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ (٣)
تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِنْ سِجِّيلٍ (٤) فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ
مَا كُوِّلَ (٥)

सूरह 'अल फ़ील' की संक्षिप्त तफ़सीर

खाना काबा से संबंधित ग़लत नीयत रखने वाले का अन्जाम वही होगा जो अब्रहा के साथ हुआ था

सूरतुल फ़ील का अनुवाद: क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे परवरदिगार ने हाथी वालों के साथ कैसा मामला किया? क्या उसने उन लोगों की सारी चालें बेकार नहीं कर दी थीं? और उन पर झुण्ड के झुण्ड परिन्दे छोड़ दिये थे। जो उन पर पक्की मिट्टी के पत्थर फेंक रहे थे। चुनांचे उन्हें ऐसा कर डाला जैसे खाया हुआ भूसा।

शाने नुज़ूल: इस सूरह में असहाबुल फ़ील (हाथी वालों) का मुख्तसर वाक़िया बयान किया गया है कि उन्होंने मक्का मुकर्रमा में अल्लाह के घर को ढाने के लिए यमन से मक्का मुकर्रमा पर हमला करने की कोशिश की थी। अल्लाह तआला ने मक्का मुकर्रमा से तकरीबन १० किलोमीटर पहले अराफ़ात के मैदान के करीब उनकी फ़ौज पर अज़ाब नाज़िल करके उनके इरादों को ख़ाक में मिला दिया। कुरआने करीम में इस वाक़िए का ज़िक्र करके हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गयी कि अल्लाह तआला की कुदरत बहुत बड़ी है, इसलिए जो लोग दुश्मनी पर कमर बांधे हुए हैं आखिर में वह भी हाथी वालों की तरह मुंह की खायेंगे।

असहाबुल फ़ील (हाथी वालों) का वाक़िया (कहानी):

यमन पर हिमयर बादशाहों का कब्ज़ा था। यह लोग मुशरिक थे, उनका आखिरी बादशाह जूनवास था जिसने उस ज़माने के ईसाइयों

पर बहुत जुल्म किये थे। उसने एक लम्बी खन्दक खुदवाकर एक अल्लाह की इबादत करने वाले तकरीबन बीस हजार ईसाइयों को आग में जला दिया था जिसका जिक्र सूरतुल बुरुज (असहाबुल उखदूद) में है। किसी तरह यहां से बचकर दो ईसाइयों ने कैसर मुल्के शाम के दरबार में जाकर फरियाद की। कैसर मुल्के शाम ने हब्शा (जो यमन से करीब था) के ईसाई बादशाह से यमन पर हमला करने को कहा। इस तरह अरबात और अब्रहा दो कमान्डर की नेतृत्व में यमन पर हमला करके पूरी यमन को क्रौम हिमयर से आज़ाद कर दिया। फिर अरबात और अब्रहा दोनों कमांडरों में सत्ता को प्राप्त करने के लिए आपसी जंग हुई, अरबात जंग में मारा गया और इस तरह अब्रहा यमन का हाकिम मुकर्रर कर दिया गया। अब्रहा ने यमन पर कब्जा करने के बाद एक शानदार चर्च इस मक़सद से बनाया कि यमन के लोग मक्का मुकर्रमा जाने के बजाये इसी कनीसा में इबादत करें। अरब क़बाइल में ग़म और गुस्से की लहर दौड़ गयी, यहां तक कि किसी ने रात के समय कनीसा में गंदगी फैला दी और उसके एक हिस्से में आग लगा दी। अब्रहा को जब इसका पता चला तो उसने मुल्के हब्शा के बादशाह की आज्ञा से काबा को ढाने की तैयारी शुरू कर दी। चुनांचे हाथियों के साथ एक सेना लेकर वह मक्का मुकर्रमा की तरफ रवाना हो गया। अरब लोग बावजूद कि वह मुशरिक थे हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के बनाये हुए बैतुल्लाह से बहुत अक़ीदत रखते थे, चुनांचे उन्होंने अब्रहा के खिलाफ़ जंग लड़ी मगर अरब लोग मुकाबले में कामयाब ना हो सके और अब्रहा आगे बढ़ता गया। ताइफ के मशहूर क़बीला सकीफ़ ने उसके आगे हथियार डाल दिये। इस तरह वह मक्का मुकर्रमा से

चंद किलोमीटर के फ़ासले पर मैदाने अरफ़ात के करीब पहुंच गया जहां कुरैशे मक्का के ऊंट चर रहे थे। अब्रहा के लश्कर (सेना) ने उन ऊंटों पर कब्ज़ा कर लिया जिनमें दो सौ ऊंट हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के थे। अब्रहा ने एक प्रतिनिधि मक्का मुकर्रमा भेजा ताकि वह कुरैश के सरदारों के पास जाकर सूचना दे कि हम तुम से जंग करने नहीं आये हैं, हमारा मक़सद बैतुल्लाह को ढाना है। अगर तुम ने इसमें रुकावट नहीं डाली तो तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा। हज़रत अब्दुल मुत्तसलिब अब्रहा से मिलने के लिए पहुंचे और उससे अपने दो सौ ऊंटों का मुतालबा किया। अब्रहा को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कबीले का सरदार सिर्फ अपने ऊंटों की बात करता है, बैतुल्लाह के मुत्ताल्लिक कोई बात नहीं करता। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने जवाब दिया कि ऊंटों का मालिक तो मैं हूँ, मुझे उनकी फ़िक्र है और बैतुल्लाह का मैं मालिक नहीं हूँ बल्कि उसका मालिक एक बड़ी हस्ती है जो अपने घर की हिफ़ाज़त करना जानता है। अब्रहा ने कहा कि तुम्हारा अल्लाह उसको मेरे हाथ से ना बचा सकेगा। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने कहा कि फिर तुम्हें इख़्तियार है जो चाहो करो। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ऊंट लेकर वापिस आये तो उन्होंने कुरैश की एक जमाअत के साथ बैतुल्लाह का दरवाज़ा पकड़कर अल्लाह से ख़ूब दुआएं मांगी और फिर मक्का वालों को साथ लेकर इस यक़ीन के साथ पहाड़ों में चले गये कि यक़ीनन अब्रहा की सेना पर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल होगा। सुबह हुई तो अब्रहा की सेना ने बैतुल्लाह पर हमलावर होने का इरादा किया तो उस का महमूद नाम का हाथी बैठ गया और वह मक्का मुकर्रमा की तरफ चलने के लिए तैयार नहीं

हुआ, जबकि दूसरी तरफ वह चलने लगता था। इसी दौरान परिन्दों का एक गौल नज़र आया, जिनमें से हर एक के पास चने के बराबर तीन कंकरियां थीं, एक चोंच में और दो पंजों में, जो उन्होंने सेना के लोगों के ऊपर बरसानी शुरू कर दीं। इन कंकरियों ने वह काम किया जो बारूदी गोली भी नहीं कर सकती थी। जिस पर यह कंकरी लगती उसके पूरे जिस्म को छेदती हुई जमीन में धंस जाती थी। यह अज़ाब देखकर सारे हाथी भाग खड़े हुए। सेना के सिपाहियों में से कुछ वहीं हलाक हो गये और कुछ लोग जो भाग निकले, वह रास्ता में मरे, और अब्रहा के जिस्म में ऐसा ज़हर फैल गया कि उसका एक एक हिस्सा सड़ गल कर गिरने लगा, उसी हालत में उसे यमन लाया गया और वहां उसका सारा बदन बह बहकर खत्म हो गया। उसकी मौत सब के लिए इबरतनाक हुई। उसके दो हाथी बान मक्का मुकर्रमा में रह गये थे जो अपाहिज और अन्धे हो गये थे। सहाबाए किराम ने उनको देखा भी था।

हाथियों के साथ लाने का मक़सद:

उनका यह ख्याल था कि बैतुल्लाह के सुतूनों में लोहे की मज़बूत और लम्बी जंजीरें बांध कर उन जंजीरों को हाथियों के गले में बांधें और उनको हंका दें तो सारा बैतुल्लाह (मआज़ अल्लाह) गिर जायेगा। यह अल्लाह का निज़ाम है कि हाथियों का साथ लाना ही उनकी अपमानजनक हार का कारण बना।

असहाबे फील का वाक़िया कब पेश आया:

इस वाक़िए की तारीख और सन में इतिहासकारों का इख़्तिलाफ़ है, मोअतमद (विश्वसनीय) बात यह है कि यह वाक़िया हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश के साल पेश आया था।

शब्दों की तहकीक़ (अनुसंधान):

अलमतरा: अल्लाह तआला अपने नबी से फ़रमाता है कि क्या आप ने नहीं देखा? हालांकि यह वाक़िया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश से कुछ दिन पहले का है। इस तरह कहने का मतलब यह है कि वह घटना जो अनक़रीब ही घटी है, जिसकी सचाई पर कोई संदेह नहीं है और जिसके असरात अभी तक नज़र आते हैं।

तइरन अबाबील: से ऐसे परिन्दे मुराद हैं जो अजीब तरह के थे, जो इससे पहले कभी ना देखे गये और कबूतर से कुछ छोटे थे जैसा कि हदीसों में ज़िक्र है।

एक छोटा सा काले रंग का परिन्दा जो अन्धेरी जगहों पर रहता है जिसको उर्दू ज़बान में अबाबील कहते हैं, वह यहां मुराद नहीं है।

बिहिज़ार तिम्मिन सिज्जील: इन कंकरियों में कोई शक्ति नहीं थी, मामूली गारे और आग से बनी हुई थीं, लेकिन अल्लाह तआला ने वर्तमान में मौजूद बारूदी गोलियों से ज़्यादा काम लिया।

फ़जअलहुम कअसिफ़म माअकूल: अब्रहा की सेना जिस पर कंकरियों की मार पड़ी थी वह ऐसे हो गये जैसे जानवरों का खाया हुआ भूसा। खुद भूसा ही बिखरे तिनके होते हैं, फिर जबकि उसे किसी जानवर ने चबा भी लिया हो तो तिनके भी अपने हाल पर नहीं रहते और दुनिया में उसकी कोई कीमत भी नहीं होती। गर्ज़ कि अल्लाह तआला ने अपना उसूल और ज़ाबता कल क़यामत तक के इन्सानों और जिनों के लिए बयान कर दिया कि जो भी हमारे घर के बारे में ग़लत नीयत रखेगा उसका अंजाम वही होगा जो अब्रहा की सेना के साथ हुआ था।

असहाबे फ़ील (हाथी वालों) के इस वाक़िये की वजह से अरबों में अल्लाह के घर और उसकी निगरानी करने वाले क़बीला कु़रैश की अहमियत और अज़मत बढ़ गयी। चुनांचे वह उनसे कोई छेड़ छाड़ नहीं करते थे और इस तरह उनकी यात्रायें किसी भी ख़तरे से ख़ाली थीं। गर्ज़ कि क़बीला कु़रैश के लोग साल में दो सफ़र किया करते थे, इन ही सफ़रों का ज़िक्र अल्लाह तआला अगली सूरह में कर रहे हैं।

बैतुल्लाह (काबा शरीफ़):

बैतुल्लाह शरीफ़ अल्लाह तआला का घर है जिसका हज और तवाफ़ किया जाता है। इसको काबा भी कहते हैं। यह पहला घर है जो अल्लाह तआला ने इन्सानों के लिए ज़मीन पर बनाया जैसाकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: अल्लाह तआला का पहला घर जो लोगों के लिए स्थापित किया गया वही है जो मक्का मुकर्रमा में है जो तमाम दुनिया के लिए बरकत और हिदायत वाला है। (सूरह आले इमरान) बैतुल्लाह मस्जिद हराम के बीच में वाक़े है और क़यामत तक यही मुसलमानों का क़िबला है। चौबीस घंटों में सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ों के समय ख़ाना काबा का तवाफ़ रुकता है बाकी दिन रात में एक घड़ी के लिए भी बैतुल्लाह का तवाफ़ बंद नहीं होता। बैतुल्लाह की ऊंचाई १४ मीटर है जबकि चौड़ाई हर तरफ से लगभग १२ मीटर है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अल्लाह तआला की एक सौ बीस (१२०) रहमतें रोज़ाना इस घर (खाना काबा) पर नाज़िल होती हैं जिनमें से साठ तवाफ़ करने वालों पर, चालीस वहां नमाज़ पढ़ने वालों पर और बीस खाना काबा को

देखने वालों पर। हदीस में है कि बैतुल्लाह पर पहली नज़र पड़ने पर जो दुआ मांगी जाती है वह अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाता है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ बैतुल्लाह शरीफ़ को हर साल गुस्ल भी दिया जाता है।

बैतुल्लाह काबा शरीफ़ का निर्माण:

- 1) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से पूर्व सबसे पहले उसकी तामीर (निर्माण) फरिश्तों ने की।
- 2) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तामीर (निर्माण)।
- 3) हज़रत शीश अलैहिस्सलाम की तामीर (निर्माण)।
- 4) हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के साथ मिलकर फिर से निर्माण की जैसा कि कुरआने करीम में अल्लाह तआला ने इस वाक़िए का ज़िक्र किया है।
- 5) अमालिका की तामीर (निर्माण)।
- 6) ज़ुरहुम की तामीर (यह अरब के दो मशहूर कबीले हैं)।
- 7) कुसई की तामीर, जो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पांचवी पुश्त में दादा हैं।
- 8) कुरैश की तामीर (उस समय नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र ३५ साल थी और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने ही मुबारक हाथों से हज़रे असवद (काला पत्थर) को बैतुल्लाह की दीवार में लगाया था।
- 9) ६४ हिजरी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर हतीम के हिस्से को काबा में शामिल करके काबा की दोबारा तामीर (निर्माण) की और दरवाज़े को ज़मीन के करीब कर दिया, नीज़ दूसरा दरवाज़ा उसके

मुकाबिल दीवार में कायम कर दिया ताकि हर व्यक्ति आसानी से एक दरवाज़े से दाखिल हो और दूसरे दरवाज़े से निकल जाये। (हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख्वाहिश भी यही थी)।

१०) ७३ हिजरी में हज्जाज बिन युसुफ ने काबा को दोबारा पुराने तर्ज़ के अनुसार कर दिया (यानि हतीम की जानिब से दीवार पीछे को हटा दी और दरवाजा ऊंचा कर दिया, दूसरा दरवाजा बंद कर दिया)।

११) १०२१ हिजरी में सुल्तान अहमद तुर्की ने छत बदलवायी और दीवारों की मरम्मत की।

१२) १०३९ हिजरी में सुल्तान मुराद के ज़माने में सैलाब के पानी से बैतुल्लाह की कुछ दीवारें गिर गयी थीं तो सुल्तान मुराद ने उनकी तामीर करायी।

१३) १४१७ हिजरी में शाह फ़हद बिन अब्दुल अज़ीज ने बैतुल्लाह की कुछ तरमीम की।

सूरह कुरैश

سورة قريش

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا إِلَافَ قُرَيْشٍ (۴) إِلَّا فِيهِمْ رَحْلَةُ الشَّتَاءِ وَالصَّيْفِ (۲)
فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ (۳) الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِنْ جُوعٍ
وَأَمَنَهُمْ مِنْ خَوْفٍ (۵)

सूरह 'कुरैश' की संक्षिप्त तफ़सीर

अल्लाह की इबादत करने वालों के लिए कुशादा रोज़ी और अमन और सुकून की ज़िन्दगी का वादा

सूरह कुरैश का अनुवाद: चूँकि कुरैश के लोग आदी हैं, यानि वह सर्दी और गर्मी के मौसमों में (यमन और शाम के) सफर करने के आदी हैं, इसलिए उन्हें चाहिए कि वह इस घर के मालिक की इबादत करें जिसने भूख की हालत में उन्हें खाने को दिया और बदअमनी से उन्हें महफूज़ रखा।

अर्थ और मज़मून के एतबार से यह सूरह पहली सूरतुलफ़ील से संबंधित है, इसीलिए कुछ नुस्खों में दोनों सूरतों के बीच बिस्मिल्लाह लिखी नहीं है, लेकिन पुराने ज़माने से आज तक अधिकांश उलमा की राय में यह दोनों मुस्तक़िल अलग अलग सूरतें हैं। इससे पहले सूरतुलफ़ील में उन हाथी वालों का ज़िक्र किया गया जिन्होंने बैतुल्लाह को ढाने के लिए यमन से आकर मक्का मुकर्रमा पर हमलावर होने की कोशिश की थी, लेकिन अल्लाह तआला ने मक्का मुकर्रमा से सिर्फ १० किलोमीटर पहले हाथी वालों की सेना पर अज़ाब नाज़िल करके उनकी तबाही और बर्बादी को क़यामत तक आने वाले इन्सानों और जिनों के लिए इबरत बना दिया। और इस सूरह कुरैश में उस क़बीला का ज़िक्र किया जा रहा है जो बैतुल्लाह की खिदमत किया करता था। क़बीला कुरैश पर अल्लाह की दो अजीम नेमतों का ज़िक्र करके उनको बैतुल्लाह के घर के परवरदिगार (अल्लाह) की इबादत की दावत दी जा रही है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तशरीफ आवरी से पहले ज़मानाए जाहिलियत में अरबों में क़त्ल और ग़ारतगिरी (हत्या करने) का बाज़ार गर्म था। कोई व्यक्ति आसानी से सफ़र नहीं कर सकता था, क्योंकि कुछ लोगों का काम ही यही था कि वह राहगीरों को लूट लिया करते थे। लेकिन बैतुल्लाह की निगरानी करने वाले क़बीला कुरैश को सारे लोग इज़्ज़त की निगाह से देखते थे, जिसकी वजह से वह लुटेरों से सुरक्षित रहते थे। मक्का मुकर्रमा में बंजर ज़मीन की वजह से खेती वगैरह नहीं थी, इसलिए वह अपनी ज़रूरियात पूरी करने के लिए साल भर में दो सफ़र किया करते थे। सर्दियों में मुल्क यमन और गर्मियों में मुल्क शाम की तरफ।

अल्लाह तआला इस सूरह में क़बीला कुरैश के लोगों को याद दिला रहे हैं कि उनको अरबों में जो इज़्ज़त प्राप्त हुई है, जिसकी वजह से वह गर्मी और सर्दी में किसी खौफ़ के बगैर दो मुख्य सफ़र करते हैं, जिन सफ़रों पर उनका रोज़गार निर्भर है, यह सब कुछ उस अल्लाह के घर की बरकत है जो इन्सानों के लिए ज़मीन पर बसाया हुआ पहला घर है। इसलिए उन्हें चाहिए कि इस घर के मालिक यानि अल्लाह तआला की इबादत करें और उसके साथ इबादत में किसी को शरीक न ठहरायें, क्योंकि इसी अल्लाह के घर की वजह से उन्हें खाने को मिल रहा है और इसी की वजह से उन्हें अमन और अमान मिला हुआ है। गर्ज़ कि इस सूरह में उम्मतए मुस्लिमा को यह सबक़ दिया गया कि अल्लाह की इबादत करने वाले दो बड़ी नेमतों से सरफराज़ होते हैं, एक पर्याप्त रोज़ी और दूसरे अमन और सकून की जिन्दगी।

कुरैश कौन हैं?

कुरैश मक्का मुकर्रमा का एक मुख्य कबीला था। इन्सानों और जिनों के नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इसी कबीले की शाख बन्ू हाशिम से तअल्लुक है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तेरहवीं पुश्त में दादा नज़र बिन किनाना बिन ख़ुज़ैमा की औलाद को कुरैश कहा जाता है। तारीख़ तबरी के मुताबिक़ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की छठी पुश्त में दादा कुसई बिन किलाब वह पहले व्यक्ति हैं जिन्हें कुरैश कहा गया। बन्ू किनाना हरम की ख़िदमत की गर्ज से एक जगह जमा रहते थे इसलिए नज़र बिन किनाना की औलाद को कुरैश कहा जाता था। नज़र बिन किनाना कुरैश अकबर और कुसई बिन किलाब को कुरैश असगर कहा जाता है। इस सूरह में इशारा है कि अरब के तमाम कबाइल में कुरैश को प्राथमिकता हासिल है। चुनांचे हदीस में है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने इस्माइल अलैहिस्सलाम की औलाद में किनाना को और किनाना की औलाद में से कुरैश को और कुरैश में से बन्ू हाशिम को और बन्ू हाशिम में मुझे मुन्तख़ब (चुना) किया है।

सूरह अलमाऊन

سورة الماعون

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْدِّينِ (۱) فَذَلِكَ الَّذِي يَدْعُ
الْيَتِيمَ (۲) وَلَا يَحِضُّ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ (۳) فَوَيْلٌ
لِّلْمُصَلِّينَ (۴) الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ (۵) الَّذِينَ
هُمْ يُرَاءُونَ (۶) وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ (۷)

सूरह 'अलमाऊन' की संक्षिप्त तफ़सीर

सूरह अलमाऊन में अल्लाह के हुक्क और बन्दों के हुक्क की अदायगी की खास ताकीद

यतीम के साथ बदसलूकी मोहताज की मदद ना करना, रियाकारी और नमाज़ और ज़कात की अदायगी में कोताही मोमिन की शान नहीं

सूरहुल माऊन का अनुवाद: क्या तुम ने उसे देखा जो दीने इस्लाम या (क़यामत के दिन की) जज़ा और सज़ा को झुठलाता है? वही तो है जो यतीम को धक्के देता है। और मिस्कीन को खाना देने की तरगीब नहीं देता। फिर बड़ी ख़राबी (और वैल नामी जहन्नम की जगह) है उन हज़रात के लिए जो अपनी नमाज़ से ग़फलत बरतते हैं, यानि नमाज़ की पाबंदी नहीं करते। जो दिखावा करते हैं और दूसरो को ज़कात या मामूली चीज़ देने से भी इन्कार करते हैं।

शब्दों की तहक़ीक़ (अनुसंधान):

“अरअइता” क्या तुम ने देखा? के ज़रिए ख़िताब बज़ाहिर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है, मगर कुरआने करीम का अन्दाज़े बयान यह है कि ऐसी जगहों पर वह उमूमन हर व्यक्ति को मुखातब करता है। यानि जो बात ज़िक्र की जा रही है वह कल क़यामत तक आने वाले तमाम इन्सानों और जिनों के लिए है। “दीन” के मायने मज़हबे इस्लाम के हैं, लेकिन जो मज़मून इस सूरह में बयान हुआ है उसको सामने रख कर क़यामत के दिन, जज़ा और सज़ा के मायने ज़्यादा उचित हैं। अधिकांश मुफ़स्सरीन ने सहाबाए

किराम के अक़वाल (बातें) की रोशनी में दूसरे मायने (अर्थ) को ही पसंद किया है।

इस सूरह में कुफ़र और मुनाफ़िकीन के कुछ बुरे काम और उन पर जहन्नम की वईद (चेतावनी) ज़िक्र है। अगर यह काम क़यामत के दिन जज़ा और सज़ा पर ईमान लाने वाले मोमिन करें तो वह अगरचे बड़े गुनाह हैं, लेकिन इस सूरह में मज़कूर वईद (चेतावनी) उस पर नहीं है क्योंकि वह अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने के साथ क़यामत के दिन और उसकी जज़ा और सज़ा पर ईमान लाया हुआ है। मगर इसमें इशारा इस तरफ़ ज़रूर है कि यह बुरे काम मोमिन की शान से दूर हैं, यानि एक मोमिन को यह काम कभी नहीं करने चाहिए।

जिन बुरे काम का ज़िक्र इस सूरह में किया गया है, वह यह हैं: यतीम के साथ बदसुलूकी करना, कुदरत के बावजूद ग़रीब की सहायता ना करना और दूसरों को इसकी तरगीब ना देना, नमाज़ों की अदायगी में कोताही करना, रियाकारी करना और ज़कात अदा ना करना। यह सारे काम बड़े गुनाह होने के साथ अपनी ज़ात में भी बुरे हैं। क़यामत के दिन और उसकी जज़ा और सज़ा के इन्कार (यानि कुफ़र) के साथ यह काम करे तो उनकी सज़ा हमेशा के लिए जहन्नम है। अलबत्ता अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने वाला उनके आमाल की सज़ा भुगतने के बाद एक ना एक दिन जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर दिया जायेगा। हाँ अगर किसी मोमिन ने मौत से पहले इन कामों से सच्ची तौबा कर ली तो फिर इंशाअल्लाह इन कामों की वजह से जहन्नम में नहीं जायेगा। अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ना लाना या अल्लाह

की ज़ात और सिफ़ात में किसी को शरीक ठहराना ऐसा जुर्म है कि ख़ालिके कायनात (अल्लाह) के फैसले के अनुसार मरने के बाद इन गुनाहों की माफ़ी नहीं है।

पहली आयत में मज़कूर बात को समझने से पहले चंद बातों का समझना ज़रूरी है।

काफ़िर कौन: वह व्यक्ति है जो अल्लाह और उसके रसूल और आखिरत पर ईमान ना लाये। यानि जिस तरह अल्लाह की ज़ात का इन्कार करने वाला काफ़िर है, उसी तरह मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी और रसूल तसलीम ना करने वाला भी काफ़िर है।

मुशरिक कौन: अल्लाह तआला को मानकर अल्लाह की ज़ात या सिफ़ात में किसी दूसरे को शरीक ठहराने वाला मुशरिक है।

मुनाफ़िक़ कौन: अल्लाह और उसके रसूल पर दिल से ईमान ना लाकर कुछ मसलहतों के लिए अपने ईमान को ज़ाहिर करने और सिर्फ़ दिखावे की नमाज़ें अदा करने वाला मुनाफ़िक़ है, गर्ज़ कि अगर बात और काम में तज़ाद (खुला फ़र्क़) हो तो यह निफ़ाक़ की अलामत है।

मोमिन कौन: अल्लाह को माबूदे हकीकी तसलीम करके मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना नबी और रहबर मानकर उनकी तालीमात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाला मोमिन है।

फ़ासिक़ कौन: अल्लाह और उसके रसूल पर दिल से ईमान लाने के बावजूद बड़े गुनाहों का को करने वाला फ़ासिक़ कहलाता है। कुरआन और हदीस की रोशनी में पूरी उम्मत मुस्लिमा का इत्तेफ़ाक़ है कि कुफ़र या शिर्क या निफ़ाक़ जैसे बड़े बड़े गुनाह भी मौत से पहले ईमान लाने और सच्ची तौबा करने से माफ़ हो जाते हैं। लेकिन अगर

कोई व्यक्ति कुफ़र या शिर्क या निफ़ाक की हालत में मर जाये तो उसके मुतअल्लिक अल्लाह तआला ने अपना उसूल और ज़ाब्ता अपनी किताब “कुरआने करीम” में ज़िक्र कर दिया कि फिर उसकी माफ़ी नहीं है, उसे हमेशा हमेशा जहन्नम में रहना होगा। कुछ मुलहिदीन (जिनका कोई मज़हब ना हो) इस विषय के मुतअल्लिक इसलाम पर एतराज़ करते हैं, हालांकि इस दुनियावी ज़िन्दगी की बेशुमार चीज़ें समझ में ना आने के बावजूद सारी दुनिया उनको मानती है। मसलन ग़रीब घराने में पैदा होने वाला व्यक्ति आम तौर पर ग़ुरबत में ही ज़िन्दगी गुज़ारकर दुनिया से चला जाता है, तो फिर यहां एतराज क्यों नहीं किया जाता कि ग़रीब घर में पैदा होने वाले मासूम बच्चे ने क्या जुल्म किया कि वह पूरी ज़िन्दगी तकलीफ़ों में गुज़ारता है, जबकि मालदार घराने में पैदा होने वाला बच्चा आम तौर पर ऐश और आराम में ज़िन्दगी गुज़ारता है। इसी तरह इन्सान दुनिया में क्यों आता है और दुनिया से ना जाने की हर मुमकिन कोशिश के बावजूद हर व्यक्ति क्यों मौत का मज़ा चखता है? कुछ समय एक सेहतमंद नौजवान जिसकी खिदमात पूरी क़ौम को दरकार है सिर्फ़ ठोकर खाकर ही मर जाता है, जबकि कुछ बीमार बूढ़े लोग दूसरों के सहारे पर सालों ज़िन्दा रह जाते हैं। इस तरह के हज़ारों सवालों का जवाब हमारी अक़लें देने से नाकाम हैं। जब हज़ारों दुनियावी मामले समझ में ना आने के बावजूद सारे इन्सान अपने घुटने टेक देते हैं तो फिर हम अल्लाह के हुक्म के सामने सर क्यूँ ना झुकाएं?

आखिरत में जज़ा (बदला), सज़ा और जन्नत या जहन्नम में प्रवेश:

कुरआन और हदीस की रोशनी में हमारा यह ईमान और अक़ीदा है कि एक दिन यह दुनिया खत्म हो जायेगी और दुनिया के वुजूद से लेकर क़यामत तक आने वाले तमाम इन्सानों और जिनों को क़यामत के मैदान में जमा किया जायेगा और दुनियावी ज़िन्दगी में अच्छे और बुरे आमाल के एतबार से अल्लाह तआला जन्नत या जहन्नम का फैसला फ़रमायेगा। जन्नत में अल्लाह तआला ने ऐसी ऐसी आराम की चीज़ें उपलब्ध कर रखी हैं कि हमारी अक़लें उनके बारे में सोच भी नहीं सकतीं। जन्नत के तअल्लुक से बुखारी, मुस्लिम और हदीस की दूसरी किताबों में ज़िक्र एक हदीस पेश है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने परवरदिगार से पुछा किया कि सबसे कम मर्तबे वाला जन्नती कौन है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया वह व्यक्ति है जो सब जन्नतियों के जन्नत में जाने के बाद आयेगा, उससे कहा जायेगा, जाओ जन्नत में जाओ, वह कहेगा ऐ रब कैसे जाऊँ, वहां तो सब लोगों ने अपने अपने ठिकाने मुतअय्यन (निर्धारित) कर लिये और अपनी अपनी जगहें बना लीं। उससे कहा जायेगा क्या तू इस बात पर राज़ी है कि तुझे इतना मुल्क मिले जितना दुनिया के एक बादशाह के पास था? वह कहेगा परवरदिगार में राज़ी हूँ। हुक्म होगा जा इतना मुल्क हमने तुझे दिया और उतना ही और, और उतना ही और, और उतना ही और, और उतना ही और, और उतना ही और। पांचवीं बार में वह कहेगा परवरदिगार (बस) मैं राज़ी हो गया। परवरदिगार फ़रमायेगा तू यह भी ले और इसका दस गुना और ले, और जो तेरी तबीयत चाहे और तेरी आखों

को प्यारा मालूम हो वह भी ले। वह कहेगा परवरदिगार मैं राज़ी हो गया। उसके बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दरयाफ़्त किया तो सबसे बड़े मर्तबे वाला जन्नती कौन है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया वह तो वह हज़रात हैं जिनको मैंने खुद मुन्तख़ब किया और उनकी बुर्ज़ुगी और इज़ज़त को अपनी कुदरत से बंद कर दिया और (फिर) इस पर मोहर लगा दी। यह चीज़ तो किसी आंख ने नहीं देखी और ना किसी कान ने सुनी और ना किसी इन्सान के दिल पर इन (नेमतों और मर्तबों) का ख़याल गुज़रा और इस चीज़ की तस्दीक (अल्लाह तआला का फ़रमान जो) उसकी किताब में वह करता है। “किसी को मालूम नहीं कि उनके लिए उनकी आंखों की ठंडक का जो सामान छुपाकर रखा गया है।” (सहीह मुस्लिम)

जहन्नम की भड़कती हुई आग दुनियावी आग की तपिश (गर्मी) से ७० गुना ज़्यादा है, जहां खून और पीप बहता है। अल्लाह तआला जहन्नम से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाकर हमारे लिए जन्नतुल फ़िरदौस का फैसला फ़रमाये। दुनिया में इस समय ७ करोड़ इन्सान बसते हैं जिनकी अक्सरियत (अधिकांश) इस बात का यक़ीन ज़रूर रखती है कि इस दुनियावी ज़िन्दगी के बाद एक दूसरी ज़िन्दगी भी है जिसमें इस दुनियावी ज़िन्दगी के आमाल की जज़ा या सज़ा मिलेगी, जो आख़रत की ज़िन्दगी के बरहक़ (सत्य) होने की खुद एक दलील (तर्क) है।

यतीमों (अनाथों) का ख़याल सबसे ज़्यादा इस्लाम में रखा गया है:
यतीम वह है जिसके बालिग़ होने से पहले उसके पिता का इन्तक़ाल हो गया हो। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी यतीम

थे, आप के वालिद माजिद (अब्दुल्लाह) उस समय इन्तक़ाल फ़रमा गये जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी माँ (आमना) के पेट में थे और वालिदा माजिदा का इन्तक़ाल उस समय हुआ जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ६ साल के थे। यतीमों के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल में बड़ी हमदर्दी थी, इसलिए आप सहाबाए किराम को यतीमों की किफ़ालत करने पर उकसाया करते थे। एक बार हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मैं और यतीम की किफ़ालत करने वाला दोनो जन्नत में इस तरह होंगे, आपने निकटता बयान करने के लिए बीच और शहादत की उंगली से इशारा फ़रमाया, यानि यतीम की किफ़ालत करने वाला हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जन्नत में होगा। (बुख़ारी)

ज़रूरतमंदों की ज़रूरत पूरी करने की तरगीब और तालीम इस्लाम मज़हब में सब से ज़ियादह दी गई है: शरीअते इस्लामिया में मसाकीन और ग़रीबों को खाना खिलाने और उनकी दुनियावी ज़रूरतों को पूरा करने की बार-बार तरगीब और तालीम दी गयी है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया गया कि इस्लाम में कौन सा कार्य ज़्यादा अफ़जल (उत्तम) है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया लोगों को खाना खिलाना और हर व्यक्ति को सलाम करना चाहे उसको पहचानो या ना पहचानो।

(बुख़ारी और मुस्लिम)

मोहसिने इन्सानियत नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ लोगों! आपस में ज़्यादा से ज़्यादा सलाम करो, दूसरों को खाना खिलाओ, रिश्तेदारी को जोड़ो और रात को ऐसे समय में

नमाज़ पढ़ो जब कि लोग सो रहे हों, (इंशाअल्लाह) जन्नत में सलामती के साथ दाखिल हो जाओगे। (तिर्मिज़ी)

इसी तरह फ़रमाने रसूल हैं: जो व्यक्ति मोमिन की कोई दुनियावी मुश्किल दूर करेगा, अल्लाह तआला क़यामत की सख़्तियों में से उस पर से एक सख़्ती दूर करेगा। और जो व्यक्ति किसी तंगदस्त पर आसानी करेगा, अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत में उस पर आसानी करेगा..... जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है, अल्लाह तआला भी उसकी मदद में रहता है। (सहीह मुस्लिम)

नमाज़ पढ़ने में सुस्ती करने वालों को जहन्नम (नरक) में डाला जायेगा: कुरआन और हदीस की रोशनी में पूरी उम्मत मुस्लिमा का इत्तेफ़ाक़ है कि फ़र्ज़ नमाज़ जानबूझ का छोड़ना बहुत बड़ा गुनाह है। शरीअते इस्लामिया में ज़िना करने (बलात्कार), चोरी करने और शराब पीने से भी बड़ा गुनाह नमाज़ का छोड़ना है। नमाज़ में कोताही करने वालों की सज़ा के मुतअल्लिक सिर्फ़ तीन आयात पेश हैं: (१) उन नमाजियों के लिए ख़राबी (और वैल नामी जहन्नम की जगह) है जो नमाज़ से गाफ़िल हैं। (सूरतुल माऊन, ४, ५) इससे वह लोग मुराद हैं जो नमाज़ या तो पढ़ते ही नहीं, या पहले पढ़ते रहे हैं फिर सुस्त हो गये या जब जी चाहता है पढ़ लेते हैं या देर से पढ़ने को मामूल बना लेते हैं। यह सारे अर्थ इसमें आ जाते हैं। इसलिए नमाज़ की बताई गयी सारी कोताहियों से बचना चाहिए। (२) फिर उनके बाद ऐसे ना ख़लफ़ पैदा हुए कि उन्होंने नमाज़ ज़ाये कर दी और नफ़सानी ख़्वाहिशों के पीछे पड़ गये, वह जहन्नम में डाले जायेंगे। (सूरह मरियम आयत ५९) नमाज़ ना पढ़ने वालों को जहन्नम की

इन्तहाई गहरी और शदीद गर्म वादी गई में डाला जायेगा, जहां खून और पीप बहता है। (३) तुम्हें दोज़ख में किस चीज़ ने डाला। वह जवाब देंगे कि हम ना नमाज़ी थे, ना मिसकीनों को खाना खिलाते थे। (सूरतुल मुद्स्सिर ४२, ४४) जन्नती, जन्नत के बाला खानों में बैठे जहन्नमियों से सवाल करेंगे कि किस वजह से तुम्हें जहन्नम में डाला गया? तो वह जवाब देंगे कि हम दुनिया में ना नमाज़ पढ़ते थे और ना ही गरीबों को खाना खिलाते थे। ग़ौर फ़रमायें कि जहन्नमी लोगों ने जहन्नम में डाले जाने की सबसे पहली वजह नमाज़ ना पढ़ना बताया क्योंकि नमाज़ ईमान के बाद इस्लाम का अहम और बुनियादी रुक्न (स्तंभ) है जो हर मुसलमान के ज़िम्मे है। इन तीनों आयात की तफ़सीर के हवालों के लिए मशहूर तफ़सीरों को पढ़ें।

रियाकारी (दिखावा) अच्छे कार्यों की बर्बादी का कारण है: आमाल की क़बूलियत के लिए अहम और बुनियादी शर्त इखलास है। बुखारी की पहली हदीस में है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: कार्यों की निर्भरता नीयत पर है, हर व्यक्ति को वही मिलेगा जिसकी उसने नीयत की.... इसलिए नमाज़ की अदायगी से चाहे फ़र्ज़ हो या नफ़िल सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ामंदी ही मतलूब होनी चाहिए। दूसरों को दिखाने के लिए नमाज़ ना पढ़ें, क्योंकि दूसरों को दिखाने के लिए नमाज़ पढ़ने को हमारे नबी ने फितनए दज्जाल से भी बड़ा फितना और शिर्क करार दिया है। हज़रत अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहुअन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग मसीहे दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे, इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ ले आये और फ़रमाया कि मैं तुम्हें दज्जाल

के फितने से ज़्यादा खतरनाक बात से आगाह ना कर दूं? हमने अज़ किया कि ज़रूर या रसूलुल्लाह! आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: शिर्क ख़फ़ी (छुपा हुआ) दज्जाल से भी ज़्यादा खतरनाक है और वह यह है कि एक आदमी नमाज़ के लिए खड़ा हो और नमाज़ को इसलिए लम्बा करे कि कोई आदमी उसे देख रहा है। (इब्ने माजा) इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जिसने दिखावे की नमाज़ पढ़ी उसने शिर्क किया। (मुसन्द अहमद)

ज़कात की अदायगी ना करने वालों को जहन्नम में डाला जायेगा: कुरआन और सुन्नत की रोशनी में उम्मत मुस्लिमा की सहमति है कि जो व्यक्ति ज़कात के फ़र्ज होने का इन्कार करे वह काफ़िर है, और ज़कात की अदायगी ना करने वाला गुनाहे कबीरा करने वाला है जिसको आख़िरत में सख़्त सज़ायें दी जायेंगी अगर मरने से पहले उसने सच्ची तौबा नहीं की।

सूरह अत्तैबा आयत नम्बर ३४-३५ में अल्लाह तआला ने उन लोगों के लिए बड़ी सख़्त वईद (चेतावनी) बयान फ़रमायी है जो अपने माल की उचित ज़कात नहीं निकालते।

इस सूरह के आख़िरी शब्द **“माऊन”** के मायने मामूली चीज़ से किये गये हैं। इसी शब्द के नाम पर सूरह का नाम **“माऊन”** रखा गया है। असल में **“माऊन”** उन बरतने की मामूली चीज़ों को कहते हैं जो आम तौर से एक दूसरे से मांग लिया करते हैं, जैसे बर्तन वगैरह। फिर हर किस्म की मामूली चीज़ को भी **“माऊन”** कह देते हैं। कुछ सहाबाए किराम ने इसकी तफ़सीर ज़कात से की है, क्योंकि वह भी इन्सान की दौलत का मामूली (चालीसवां) भाग होता है।

इस सूरह में हमारे लिए सबकः अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान के साथ आखिरत की जज़ा और सज़ा पर ईमान लाना। यतीमों की किफ़ालत करने में बढ़ चढ़ कर भाग लेना। मिस्कीन और मोहताज लोगों की दुनियावी ज़रूरतों को पूरा करने में पहल करना। अगर खुद ग़रीब लोगों की मदद नहीं कर सकते तो कम से कम ऐसे कामों में शरीक होना जिनके ज़रिए ग़रीब लोगों की मदद की जा रही हो। खुशूअ और खुज़ूअ (अल्लाह के धियान) के साथ फ़र्ज़ नमाज़ों का एहतमाम करना। फ़र्ज़ नमाज़ के साथ सुन्नन और नवाफ़िल की भी पाबंदी करना। हर नेक अमल सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए करना। दिखावे और शोहरत आमा़ल की बर्बादी का कारण हैं। माल पर ज़कात के फ़र्ज़ होने पर उसका हिसाब लगाकर हर साल ज़कात की अदायगी करना। अगर कोई पड़ोसी या रिश्तेदार दैनिक इस्तेमाल में आने वाली चीज़ें मांगें तो हत्तल इमकान उसे मना ना करना। हुकूकुल्लाह के साथ हुकूकुल इबाद की अदायगी में कोई कोताही ना करना। हुकूकुल्लाह में ईमान के बाद सबसे अहम इबादत नमाज़ और ज़कात है।

सूरह अलकौसर

سورة الكوثر

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ (۴) فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ (۲)
إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ (۳)

सूरह 'अलकौसर' की संक्षिप्त तफ़सीर

कौसर जन्नत की एक नहर है जिससे क़यामत के दिन उम्मतों मुहम्मदियह खूब पानी पियेगी

सूरह अलकौसर का अनुवाद: (ऐ पैग़म्बर!) यकीन जानो हम ने तुम्हें कौसर अता कर दी है। इसलिए तुम अपने परवरदिगार (की रज़ा) के लिए नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो। यकीन जाने तुम्हारा दुश्मन ही वह है जिसकी जड़ कटी हुई है, यानि तुम्हारे दुश्मन का नाम लेने वाला कोई नहीं होगा।

शाने नुज़ूल: जिस समय हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेटे (हज़रत कासिम रज़िअल्लाहु अन्हु) का बचपन में इन्तेक़ाल हुआ तो कुफ़्रारे मक्का ख़ासकर आस बिन वाइल आपको **“अबतर”** कहकर ताना देने लगा। अबतर का मतलब जिसकी नस्ल आगे न चले, यानि जिसको कोई लड़का ना हो। उस पर अल्लाह तआला ने अपने हबीब के इत्मिनान के लिए यह सूरह नाज़िल फ़रमाई कि आपको तो अल्लाह तआला ने एक ऐसी बड़ी नेमत से नवाज़ा है जो किसी नबी या रसूल को भी नहीं अता की गयी, यानि हौज़े कौसर। आपका नाम लेने वाले और आप के दीन पर अमल करने वाले बेशुमार लोग होंगे। **“अबतर”** तो तुम्हारा दुश्मन है जिसका नाम लेने वाला भी कोई नहीं होगा। चुनांचे ऐसा ही हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कीमती ज़िन्दगी का एक एक लम्हा किताबों में महफूज़ है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक एक सुन्नत आज तक ज़िन्दा है। आपका नाम लेने वाले और आपकी सुन्नतों पर

मर मिटने वाले बेशुमार लोग दुनिया में मौजूद हैं और इंशाअल्लाह रहेंगे। ताना देने वाले को कोई जानता भी नहीं और अगर कोई ज़िक्र भी करता है तो बुराई के साथ।

हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्रे मुबारक:

अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िक्रे मुबारक को कैसा उच्च स्थान अता फ़रमाया कि चौदह सौ साल गुज़रने के बाद भी दुनिया के चप्पे चप्पे पर हर समय अल्लाह तआला की बड़ाई के साथ नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक मस्जिदों के मिनारों से पुकारा जाता है। अल्लाह के एक होने की शहादत के साथ नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रसूल होने की शहादत दी जाती है। कोई व्यक्ति उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता है जब तक वह अल्लाह की वहदानियत (अल्लाह एक है) के इक़्रार के साथ मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना नबी और रसूल तसलीम ना कर ले। कोई एक सिकंड भी ऐसा नहीं गुज़रता जिसमें नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद और सलाम ना भेजा जाता हो। क़यामत तक आने वाले इन्सानों और जिनों के नबी को यह उच्च मक़ाम सिर्फ दुनिया में नहीं बल्कि आखिरत में भी प्राप्त होगा, चुनांचे आखिरत में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शफ़ाअते कुबरा का मक़ाम महमूद प्राप्त होगा। जिसके ज़रिये कल क़यामत के दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों की शफ़ाअत फरमायेंगे। **सूरह अलइसरा आयत ७९** से मालूम होता है कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत हासिल करने के लिए हमें तहज्जुद की नमाज़ का एहतमाम करना चाहिए।

हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नस्ल:

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सारी औलाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली पत्नी हज़रत ख़दीजा रज़िअल्लाहु अन्हा से मक्का मुकर्रमा में हुई, सिवाय आपके बेटे हज़रत इब्राहिम रज़िअल्लाहुअन्हु के, वह हज़रत मारिया किबतियह रज़िअल्लाहु अन्हा से मदीना मुनव्वरा में पैदा हुए। हज़रत ख़दीजा रज़िअल्लाहुअन्हा की उम्र निकाह के समय ४० साल थी, यानि हज़रत ख़दीजा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उमर में १५ साल बड़ी थीं। नीज़ वह नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ निकाह करने से पहले दो शादियाँ कर चुकी थीं और उनके पहले पति से बच्चे भी थे। जब नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उमर ५० साल की हुई तो हज़रत ख़दीजा रज़िअल्लाहुअन्हा का इन्तेकाल हो गया। इसी तरह नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी पूरी जवानी (२५ से ५० साल की उमर) सिर्फ़ एक बेवा औरत हज़रत ख़दीजा रज़िअल्लाहुअन्हा के साथ गुज़ार दी।

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तीन बेटे:

१. हज़रत कासिम रज़िअल्लाहुअन्हु
२. हज़रत अब्दुल्लाह रज़िअल्लाहु अन्हु
३. हज़रत इब्राहिम रज़िअल्लाहुअन्हु।

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चार बेटियाँ:

१. हज़रत ज़ैनब रज़िअल्लाहु अन्हा
२. हज़रत रुक़य्या रज़िअल्लाहु अन्हा

३. हज़रत उम्मे कुलसूम रज़िअल्लाहु अन्हा

४. हज़रत फ़ातिमा रज़िअल्लाहु अन्हा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नस्ल आप की साहबज़ादियों से चली और इंशाअल्लाह कल क़यामत तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नस्ल बाक़ी रहेगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानने वाले जो आप की औलाद के दर्जे में हैं, वह तो इतनी बड़ी तादाद में होंगे कि पिछले तमाम नबियों की उम्मतों से भी बढ़ जायेंगे और उनका एज़ाज़ और इकराम भी दूसरी उम्मतों के मुक़ाबले में ज़्यादा होगा।

कौसर के लफ़्ज़ी मायने “बहुत ज़्यादा भलाई” के हैं और कौसर जन्नत की उस हौज़ का नाम भी है जो हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इख़्तियार में दी जायेगी और आप की उम्मत के लोग इससे पानी पियेंगे। एक दिन जबकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में हमारे बीच थे, अचानक आप पर एक किस्म की नींद या बेहोशी की कैफ़ियत तारी हुई, फिर हंसते हुए आप ने सरे मुबारक उठाया। हमने पूछा या रसूलुल्लाह! आप के हंसने की वजह क्या है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझ पर इसी समय एक सूरह नाज़िल हुई है, फिर आप ने बिस्मिल्लाह के साथ सूरह अलकौसर पढ़ी। फिर फ़रमाया: तुम जानते हो कौसर क्या चीज़ है? हमने अर्ज़ किया: अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह जन्नत की एक नहर है, जिसका मेरे रब ने मुझसे वादा फ़रमाया है, जिसमें बहुत ख़ैर है और वह हौज़ है जिस पर मेरी उम्मत क़यामत के दिन पानी के लिए आयेगी, उसके पानी पीने के

बर्तन सितारों की तादाद की तरह बहुत ज़्यादा होंगे। उस समय कुछ लोगों को फरिश्ते हौज़ से हटा देंगे तो मैं कहूंगा कि मेरे परवरदिगार यह तो मेरे उम्मतों हैं। अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि आप नहीं जानते कि उन्होंने आपके बाद क्या नया दीन अपनाया था। (बुखारी और मुस्लिम)

हौज़ कौसर क्या है?

हदीसों में ज़िक्र है कि नहरे कौसर असल में जन्नत में है जिसकी दो नालियों से हौज़े कौसर में पानी आता रहेगा। हौज़े कौसर क़यामत के मैदान में होगा। हौज़े कौसर पर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत जन्नत में दाखिल होने से पहले पानी पियेगी। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस हौज़ के बीच में तशरीफ़ फ़रमा होंगे। उसकी लम्बाई ऐल (उर्दुन और फलस्तीन के बीच एक जगह) से सनआ (यमन) तक होगी और उसकी चौड़ाई इतनी होगी जितना ऐला से जोहफ़ा (जद्दा और राबिग के बीच एक जगह) तक फ़ासला है। हौज़े कौसर का पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद, बर्फ़ से ज़्यादा ठण्डा, शहद से ज़्यादा मीठा होगा। उसकी तह की मिट्टी मुश्क से ज़्यादा खुशबूदार होगी। जो इसका पानी पीलेगा उसे फिर कभी प्यास ना लगेगी।

नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो:

फ़सल्लिलि रब्बिका वनहर: तुम अपने परवरदिगार (की रज़ा) के लिए नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो। सूरह की पहली आयत में बताया गया कि आप को एक बड़ी नेमत यानि हौज़े कौसर से नवाजा गया है

और उसके शुक्रिया के लिए आप को दो चीज़ों का हुक्म दिया गया। एक: नमाज़ की अदायगी और दूसरे कुर्बानी करना। कुरआन और हदीस की रोशनी में पूरी उम्मत मुस्लिमा का इत्तेफाक है कि ईमान के बाद सबसे अहम इबादत नमाज़ की अदायगी है। चुनांचे अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम (कुरआन मजीद) में सबसे ज़्यादा नमाज़ का ही ज़िक्र फ़रमाया है। मोहसिने इन्सानियत के फ़रमान के अनुसार क़यामत के दिन सबसे पहले नमाज़ ही का हिसाब लिया जायेगा। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आखिरी वसीयत भी नमाज़ की पाबंदी के मुताअल्लिक है। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की २३ साला नबूवत वाली कीमती जिन्दगी का अधिक भाग नमाज़ की अदायगी में ही लगा। इसलिए हमें पांचों नमाज़ों की पाबंदी के साथ सुन्न और नवाफ़िल का भी एहतमाम करना चाहिए।

कुर्बानी भी एक बड़ी इबादत है, चुनांचे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदाअ के मौके पर सौ ऊंटों की कुर्बानी पेश फ़रमायी थी जिसमें से ६३ ऊंटों की कुर्बानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मुबारक हाथों से की थी और बाकी ३७ ऊंट हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु ने नहर (यानि ज़िबह) फ़रमाये। इसी तरह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जुल हिज्जा की १० तारीख को कोई नेक अमल अल्लाह तआला के नज़दीक कुर्बानी का खून बहाने से बढ़कर महबूब और पसंदीदा नहीं। कुरआने करीम की दूसरी आयत में नमाज़ के साथ कुर्बानी का ज़िक्र किया गया है। मसलन: (इन्ना सलाती व नुसुकी व महयाया व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन)

इन्ना शानिअका हुवलअब्तर: तुम्हारा दुश्मन ही मक़तूउन्नस्ल होगा, यानि उसका कोई नाम लेने वाला नहीं होगा। आपकी औलाद इंशाअल्लाह क़यामत तक चलेगी चाहे लड़की की औलाद से हो। आपके मानने वाले कल क़यामत तक बेशुमार होंगे। और क़यामत के दिन आप की उम्मत सारे नबियों की उम्मतों से ज़्यादा तादाद में होगी।

इस सूरह में हमारे लिए सबक़:

- १) हौज़े कौसर पर ईमान लाना कि वह बरहक़ (सत्य) है और नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मती इससे पानी पियेंगे। तक्ररीबन पचास साहबाए किराम से हौज़े कौसर की हदीसें मरवी हैं।
- २) पांचो समय की नमाज़ की पाबंदी।
- ३) हस्बे इस्तताअत कुरबानी के दिनों में ज़्यादा से ज़्यादा कुरबानी करना।
- ४) अल्लाह रब्बुल इज़ज़त ने नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुनिया और आख़िरत में उच्च मक़ाम अता किया है। हमारे नबी के दुश्मनों को दोनों जहां में घाटा और नुक़सान है और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।
- ५) दीने इस्लाम में नयी बातें पैदा करने वालों को हौज़े कौसर से दूर कर दिया जायेगा, इसलिए हम अपनी तरफ से कोई नया अमल दीने इस्लाम में शुरू ना करें।

सूरह अलकाफ़िरून

سورة الكافرون

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ (१) لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ (२) وَلَا
أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ (३) وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ (४) وَلَا
أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ (५) لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ (६)

सूरह 'अलकाफ़िरून' की संक्षिप्त तफ़सीर

सूरह अलकाफ़िरून का अनुवाद: तुम कह दो कि: “ऐ हक़ का इन्कार करने वालों! मैं उन चीज़ों की इबादत नहीं करता जिनकी तुम इबादत करते हो। और तुम उसकी इबादत नहीं करते जिसकी मैं इबादत करता हूँ। और ना मैं (आईन्दा) उसकी इबादत करने वाला हूँ जिसकी इबादत तुम करते हो। और ना तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी मैं इबादत करता हूँ। तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन।

शाने नुजूल: यह सूरह उस समय नाज़िल हुई थी जब मक्का मुकर्रमा के कुछ सरदारों ने जिन में वलीद बिन मुगीरह और आस बिन वाइल आदि शामिल थे, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने सुलह की यह तजवीज़ पेश की कि एक साल आप हमारे माबूदों की इबादत कर लिया करें तो दूसरे साल हम आपके माबूदों की इबादत कर लेंगे। कुछ और लोगों ने इसी किस्म के कुछ और उपाय भी पेश किये, जिनका खुलासा यही था कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी ना किसी तरह उन काफ़िरों के तरीक़े पर इबादत के लिए तैयार हो जायें तो आपस में सुलह हो सकती है। अल्लाह तआला ने इस सूरह में दो टूक शब्दों में स्पष्ट कर दिया कि कुफ़र और ईमान के बीच इस किस्म की कोई सुलह क़बूल नहीं है जिससे सही और ग़लत का अंतर समाप्त हो जाये और दीने बरहक़ में कुफ़र या शिर्क की मिलावट कर दी जाये। हाँ अगर तुम हक़ को क़बूल नहीं करते तो तुम अपने दीन पर अमल करो जिसके परिणाम खुद भुगतोगे और मैं अपने दीन पर अमल करूंगा। इससे मालूम हुआ कि ग़ैर मुस्लिमों से कोई ऐसी सुलह जायज़ नहीं है जिसमें उनके दीन

को इख्तियार करना पड़े। अलबत्ता अपने दीन पर कायम रहते हुए अमन का समझौता हो सकता है।

हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि फ़ज्र की सुन्नतों में पढ़ने के लिए दो सूरतें बेहतर हैं: सूरह अलकाफ़िरून और सूरह अलइख़लास। सहाबा-ए-किराम से मरवी है कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मगरिब की सुन्नतों में यह दो सूरतें (सूरह अलकाफ़िरून और सूरह अलइख़लास) आम तौर पर पढ़ा करते थे। हदीसों में ज़िक्र है कि तवाफ़ के बाद दो रकआत में यह दो सूरतें (सूरह अलकाफ़िरून और सूरह अलइख़लास) पढ़ना बेहतर है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा-ए-किराम को सूरह अलकाफ़िरून भी सोने से पहले पढ़ने की तालीम दिया करते थे। गर्ज़ कि दूसरे अज़कार के साथ सोने से पहले हमें चारों कुल पढ़ने का एहतमाम करना चाहिए।

इस सूरह में चंद कलमात (बातें) दो बार आये हैं, दो कलमें (बातें) एक बार वर्तमान के और दूसरी बार भविष्य के मुतअल्लिक आये हैं। यानि ना तो वर्तमान में ऐसा हो रहा है कि मैं तुम्हारे माबूदों (भगवान) की इबादत करूँ और तुम मेरे माबूदों की इबादत करो। और न भविष्य में ऐसा हो सकता है कि मैं अपनी तौहीद पर और तुम अपने शिर्क पर कायम रहते हुए एक दूसरे के माबूदों की इबादत करें। इस्लाम से ज़्यादा कोई धर्म रवादारी (सहनशीलता) और दूसरों के साथ अच्छा सुलूक करने की दावत नहीं देता है। इस्लाम ने हमेशा ग़ैर मुस्लिमों के हुक्क का ख़याल रखा है। शरीयते इस्लामिया ने किसी भी ग़ैर मुस्लिम को इस्लाम क़बूल करने पर कोई

ज़बरदस्ती नहीं की, बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ तरगीब और तालीम पर इन्हिसार (निर्भरता) किया। अल्लाह का फ़रमान है: दीन में किसी पर ज़बरदस्ती नहीं। (सूरह अलबक्रा: २५६) इसी तरह अल्लाह का फ़रमान है: आप कह दीजिए कि यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है अब जिसका जी चाहे मान ले और जिसका जी चाहे इन्कार कर दे। (सूरह अलकहफ़: २९) मदीना मुनव्वरा हिजरत के बाद यहूदियों के साथ सुलह की संधि प्रसिद्ध है। इस्लाम ने रवादारी की अच्छी मिसाल पेश करके कुफ़ारे मक्का के साथ सुलह-ए-हुदैबियह भी की। मगर अल्लाह का इन्कार करने वालों के साथ सुलह में इस्लाम के बुनियादी अरकान पर कोई सुलह नहीं हो सकती, यानि अगर कोई व्यक्ति यह कहे कि हम बुतों की इबादत शुरू कर दें या अल्लाह के साथ किसी को इबादत में शरीक ठहरायें या मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना आखिरी नबी तसलीम ना करें या मसाजिद में नमाज़ की अदायगी ना करें या अज़ान देना बंद कर दें तो इन कामों में कोई समझौता नहीं किया जा सकता।

इस सूरह में हमारे लिए सबक़: अल्लाह ही सिर्फ़ इबादत के लायक़ है। अल्लाह के साथ किसी दूसरी ज़ात को इबादत में शरीक करना बड़ा पाप है, जिसकी क़यामत के दिन माफ़ी नहीं है। दूसरे मज़हब को मानने वालों के साथ कुरआन और हदीस के फैसले के खिलाफ़ कोई समझौता नहीं हो सकता है। सिर्फ़ इस तरह की सुलह हो सकती है कि ग़ैर इस्लामी देशों में दूसरी क़ौमों अपने धर्मों के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारें और हम कुरआन और हदीस की रोशनी में ज़िन्दगी गुज़ारें। अलबत्ता हिकमत के साथ अपने क़ौल (शब्दों) और अमल (कार्यों) से उनको दीन इस्लाम की दावत देते रहें।

सूरह अन्नस

سورة النصر

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ (١) وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا (٢) فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا (٣)

सूरह 'अन्नस' की संक्षिप्त तफ़सीर

सूरह अन्नस में नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह के ज़िक्र और इस्तिग़फ़ार करने की तालीम

सूरह अन्नस का अनुवाद: जब अल्लाह की मदद और जीत आ जाये और तुम लोगों को देख लो कि वह फ़ौज दर फ़ौज अल्लाह के दीन में दाखिल हो रहे हैं, तो अपने परवरदिगार की हम्द के साथ उसकी तस्बीह करो और उससे मग़फ़िरत (क्षमा) मांगो। यकीन जानो वह बहुत माफ़ करने वाला है।

यह मुख्तसर सी सूरह मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई। ज़्यादा मुफ़स्सरीन के मुताबिक़ यह सूरह मक्का फतह होने से कुछ पहले नाज़िल हुई थी। इसमें यह खुशख़बरी दी गयी है कि मक्का मुकर्रमा फ़तेह (जीत) हो जायेगा और उसके बाद लोग झुण्ड के झुण्ड दीन इस्लाम में दाखिल होंगे। कुछ मुफ़स्सरीन ने कहा है कि यह सूरह हज्जतुल विदाअ (आखिरी हज्ज) के मौक़े पर नाज़िल हुई, जिसके तीन माह बाद (रबीउल अव्वल ११ हिजरी) में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वफ़ात पा गये। यह कुरआने करीम की आखिरी सूरह है, यानि उसके बाद कोई पूर्ण सूरह नाज़िल नहीं हुई, अलबत्ता कुछ आयात इसके बाद भी नाज़िल हुई हैं।

विभिन्न हदीसों से मालूम होता है कि इस सूरह में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात करीब आ जाने की तरफ़ इशारा है, जैसा कि हदीस में है कि जब यह सूरह नाज़िल हुई तो

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबाए किराम के सामने इसकी तिलावत फरमाई जिसमें हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर और हज़रत सअद बिन अबी वक्कास रज़िअल्लाहुअन्हुम वगैरह मौजूद थे। सब इसको सुनकर खुश हुए कि इसमें फत्हे मक्का की खुशखबरी है मगर हज़रत अब्बास रज़िअल्लाहुअन्हु रोने लगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि रोने का क्या सबब है तो हज़रत अब्बास रज़िअल्लाहुअन्हु ने अर्ज किया कि इसमें तो आपकी वफ़ात की ख़बर छुपी है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी तस्दीक (पुष्टि) फरमायी।

कुरआने करीम की इस सूरह में मज़कूरा उसूल और ज़ाबते से मालूम हुआ कि इन्सान को अपनी ज़िन्दगी के आखिरी दिनों में तसबीह और इस्तिग़फ़ार का एहतमाम करना चाहिए। यानि वैसे तो हमें पूरी ज़िन्दगी ही अल्लाह के ज़िक्र और इस्तिग़फ़ार (अल्लाह से माफ़ी) के साथ गुज़ारनी चाहिए। लेकिन अगर कुछ निशानियों से महसूस हो कि मौत का समय करीब आ गया है तो ख़ास तौर पर ज्यादा से ज्यादा इस्तिग़फ़ार करना चाहिए।

फत्हे मक्का से पहले अरबों की बहुत बड़ी तादाद को हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत और इस्लाम की सत्यता पर यक़ीन तो हो गया था मगर कुरैश मक्का की मुखालफ़त का डर उनके इस्लाम क़बूल करने से रोक रहा था। फत्हे मक्का के बाद वह रुकावट दूर हो गयी और लोग बड़ी तादाद में इस्लाम में दाखिल होने लगे। इसी की भविष्यवाणी इस सूरह में दी गयी थी। चुनांचे ९

हिजरी में अरब के कोने-कोने से बेशुमार प्रतिनिधिमंडल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर होकर इस्लाम कबूल करने लगे। इसीलिए इस साल को साले वुफूद कहा जाता है।

कयामत तक आने वाले तमाम इन्सानों और जिनों के नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नबूवत के बाद सिर्फ़ २३ साला ज़िन्दगी में ऐसा इन्क़लाब (क्रांति) बरपा किया कि कुफ़्र, शिर्क और जिहालत में डूबी हुई क्रौम के अक्काएद, आमाल और अख़लाक को ऐसी बुलन्दी पर पहुंचा दिया कि वह पूरी दुनिया के लिए उदाहारण बन गये। जिन हज़रात से बकरियाँ चरानी नहीं आती थीं उन्होंने दुनिया के एक बड़े भाग पर ऐसी हुक्मत पेश की कि रहती दुनिया तक उनकी मिसाल पेश की जाती रहेगी। २३ साला नबूवत वाली ज़िन्दगी में बड़ी कामयाबी प्राप्त करने वाले सारे नबियों के सरदार को जश्न मनाने का नहीं बल्कि अल्लाह तआला का ज़िक्र करने और उससे मग़फ़िरत तलब करने का हुक्म दिया जाता है और वह बड़ी हस्ती अल्लाह के हुक्म (आदेश) पर अमल करने में लग जाती है।

फसब्विह बिहम्दि रब्विका वस्तग़फ़िर्हः हज़रत आयशा रज़िअल्लाहुअन्हा फ़रमाती हैं कि इस सूरह के नाज़िल होने के बाद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब कोई नमाज़ पढ़ते तो यह दुआ करते थे: **सुब्हानका रब्वना व बिहम्दिका, अल्लाहुम्मग़्फ़िरली।** (सहीह बुखारी)

हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहुअन्हा फ़रमाती हैं कि इस सूरह के नुज़ूल के बाद आप उठते बैठते और आते जाते हर समय यह दुआ पढ़ते थे। सुब्हानल्लाहि वबिहमदिका अस्तग़फ़िरुल्लाहा व अतुबू इलैइह और फ़रमाते थे कि मुझे इसका हुक्म दिया गया है और दलील में इज़ा जाआ नसरुल्लाहि की तिलावत फ़रमाते।

हज़रत अबु हु़रैरा रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इस सूरह के नुज़ूल के बाद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इबादत में बड़ी मेहनत की यहां तक कि आपके पांव मुबारक में वरम आ जाता।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम! मैं अल्लाह तआला से रोज़ाना सत्तर से ज़्यादा बार गुनाहों की माफ़ी तलब करता हूँ। (सहीह बुखारी)

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गुनाहों से पाक और साफ और मासूम होने के बावजूद रोज़ाना सत्तर से ज़्यादा बार इस्तिग़फ़ार किया करते थे, इस में उम्मत मुस्लिमा को तालीम है कि हम रोज़ाना एहतमाम के साथ अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगते रहें, इसमें हमारा ही फ़ायदा है, जैसा कि हमारे नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जो व्यक्ति पाबंदी से इस्तिग़फ़ार करता रहे (यानि अपने गुनाहों से माफ़ी तलब करता रहे) अल्लाह तआला उसके लिए हर तंगी से निकलने का रास्ता बना देते हैं। हर ग़म से उसे मुक्ति अता फ़रमाते हैं। और ऐसी जगह से

रोज़ी अता फ़रमाते हैं कि जहां से उसको गुमान (अनुमान) भी नहीं होता। (अब् दाउद)

कुरआन और हदीस में अल्लाह तआला के ज़िक्र की विभिन्न फज़ीलतें वारिद हुई हैं। सिर्फ़ एक हदीस पेश कर रहा हूं: मोहसिन इन्सानियत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अल्लाह तआला के ज़िक्र से बढ़कर किसी आदमी का कोई अमल अज़ाब से छुटकारा दिलाने वाला नहीं है। अर्ज़ किया गया: अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद भी नहीं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जिहाद भी अल्लाह तआला के अज़ाब से बचाने में अल्लाह तआला के ज़िक्र से बढ़कर नहीं। मगर यह कि कोई ऐसी बहादुरी से जिहाद करे कि तलवार चलाते चलाते टूट जाये, फिर तो यह अमल भी ज़िक्र की तरह अज़ाब से बचाने वाला हो सकता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद) कुरआन की तिलावत और नमाज़ भी अल्लाह का एक ज़िक्र है, लेकिन कुरआन और हदीस की रोशनी में उलमाए उम्मत ने लिखा है कि कुछ समय खासकर सुबह और शाम में हमारा कुछ समय ज़रूर सिर्फ़ अल्लाह की तसबीह पढ़ने के साथ दरूद शरीफ और इस्तिग़फ़ार पढ़ने में लगना चाहिए।

सूरहतुल्लहब (अलमसद)

سورة المسد

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ (१) مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا
كَسَبَ (२) سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ (३) وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ
الْحَطَبِ (४) فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ (५)

सूरह 'अलमसद' की संक्षिप्त तफ़सीर

मोहसिने इंसानियत को तकालीफ़ देने वाले अबू लहब और उसकी पत्नी का बुरा अंजाम

अल्लाह तआला ने अपनी किताब में एक पूर्ण सूरह (सूरहतुल्लहब) नाज़िल फ़रमाकर क़यामत तक आने वाले इन्सानों और जिनों को यह बतला दिया कि सारे नबियों के सरदार हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकालीफ़ पहुंचाने वालों के लिए दुनिया में बर्बादी के साथ आख़िरत में भी उनके लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार किया गया है।

सूरहतुल्लहब (अलमसद) का अनुवाद: अबू लहब के हाथ बर्बाद हों और वह खुद बर्बाद हो चुका है। उसकी दौलत और उसने जो कमाई की थी वह उसके कुछ काम नहीं आयी। वह भड़कते शोलों वाली आग में दाख़िल होगा। और उसकी पत्नी भी लकड़िया ढोती हुई अपनी गर्दन में मूंझ की रस्सी लिए हुए।

जब कुरआन करीम की आयत *'वअनज़िर अशीरतकल अकरबीन'* नाज़िल हुई तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सफ़ा पहाड़ी पर चढ़कर अपने क़बीले के लोगों को आवाज़ दी। जब क़बीला कु़रैश के लोग जमा हो गये तो नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर मैं तुम्हें यह ख़बर दूँ कि दुश्मन तुम्हारे ऊपर हमला करने वाला है। क्या आप लोग मेरी बात मानोगे? सबने कहा कि हाँ ज़रूर मानेंगे। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी क़ौम के लोगों को अल्लाह तआला की

तरफ़ दावत देते हुए फ़रमाया कि मैं तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से डराता हूँ, इसलिए कुफ़र और शिर्क वाली ज़िन्दगी छोड़कर सिर्फ़ अल्लाह तआला की इबादत करो। यह सुनकर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चचा अबू लहब जो आपकी दावते इस्लाम के बाद आपका सबसे बड़ा दुश्मन बन गया था और तरह तरह से आपको तकलीफ़ पहुंचाता था, उसने ने कहा: हलाक़त हो तेरे लिए, क्या तूने हमें इसके लिए जमा किया था। और आप को मारने के लिए पत्थर उठा लिया। इस पर ये सूरह नाज़िल हुई।

‘यद’ के अस्ल मायने हाथ के हैं, लेकिन यहाँ उस की ज़ात मुराद है, यानि अबू लहब के लिए बर्बादी लिख दी गयी, अब उसकी बर्बादी में कोई शक नहीं, चुनांचे बदर के सात दिन के बाद उसको ताउन की गिलटी निकली। मर्ज़ दूसरों को लग जाने के डर से सब घर वालों ने उसको अलग डाल दिया यहां तक कि उसी बेकसी की हालत में मर गया और तीन दिन तक उसकी लाश यूंही पड़ी रही। जब उसकी लाश सड़ने लगी तो मज़दूरों से उठवाकर दबवा दिया। उन्होंने एक गड़्ढा खोदकर एक लकड़ी से उसकी लाश को गड़्ढे में डाल दिया और ऊपर से पत्थर भर दिये।

माअग्ना अन्हु मालुहु वमाकसब: अबू लहब का माल और असबाब कुछ भी उसके काम नहीं आया। जब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी क़ौम को अल्लाह के अज़ाब से डराया तो अबू लहब ने यह भी कहा था कि जो कुछ मेरा भतीजा कहता है अगर वह सच भी हो तो मेरे पास माल और औलाद बहुत है, मैं उसको

देकर अपनी जान बचा लूंगा। इस पर यह आयत नाज़िल हुई कि जब उसको अल्लाह तआला के अज़ाब ने पकड़ा तो ना उसका माल काम आया ना औलाद। यह तो उसका दुनिया में हाल हुआ, आखिरत में उसके साथ क्या मामला होगा तो फ़रमान इलाही है: वह भड़कते शोलों वाली आग में दाखिल होगा।

वम्रअतुहु हम्मालतल हतब: अबू लहब की तरह उसकी पत्नी भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत तकलीफ़ पहुंचाती थी। यह हज़रत अबू सुफ़ियान की बहन थी और उम्मे जमील के नाम से पहचानी जाती थी। कुछ रिवायतों में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रास्ते में कांटेदार लकड़िया बिछा दिया करती थी। ऐसी कुछ रिवायात में आता है कि यह बहुत ज़्यादा चुगलखोरी करने वाली थी। कुरआने करीम में अबू लहब की पत्नी का नाम लिए बग़ैर उसके अमल को ज़िक्र किया: “लकड़िया ढोती हुई” ताकि उसके अमल के मुताबिक जहन्नम में उसके लिए निर्धारित दंड की तरफ़ भी इशारा हो जाये। कुरआने करीम में अबू लहब के अस्ल नाम का ज़िक्र किये बग़ैर उसकी कुन्नियत अबू लहब का ज़िक्र किया, इस बात की तरफ़ इशारा करने के लिए कि वह आग के अंगारों में डाला जायेगा। लहब के मायने शोले के हैं।

फी जीदिहा हबलुम मिम मसद: अबू लहब की पत्नी के जहन्नम की हालत को बयान किया जा रहा है कि आहनी तारों से मज़बूत बटा हुआ तौक उसके गले में होगा। यानि जिस तरह वह नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रास्ते में कांटे बिछाने के लिए कांटे

और लकड़िया अपने ऊपर लादकर लाती थी, इसी तरह जहन्नम में लोहे के तारों का तौक (फन्दा) उसके गले में डाल दिया जायेगा।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो साहबज़ादियाँ (हज़रत रुक़य्या रज़िअल्लाहुअन्हा और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़िअल्लाहु अन्हा) अबू लहब के दो बेटों (उतबा और उतैबा) के निकाह में थीं। लेकिन दीने इस्लाम की दावत देने और इस सूरह के नुज़ूल पर अबू लहब ने दोनों बेटों से तलाक़ दिलवा दी थी। बाद में यह दोनों साहबज़ादियाँ एक के बाद एक हज़रत उस्माने गनी रज़िअल्लाहु अन्हु के निकाह में आयीं। आपकी चार साहबज़ादियों में से तीन साहबज़ादियाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिंदगी में ही इन्तेक़ाल फ़रमा गयी थीं, जबकि हज़रत फ़ातमा रज़िअल्लाहुअन्हा की वफ़ात नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन्तेक़ाल के छः माह बाद हुई। गर्ज़ कि आप की चारों बेटियाँ ३० साल की उम्र से पहले ही इन्तेक़ाल फ़रमा गयीं।

सूरतुल इखलास

سورة الاخلاص

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ (١) اللَّهُ الصَّمَدُ (٢) لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ (٣)
وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ (٤)

सूरह 'अलइखलास' की संक्षिप्त तफ़सीर

सूरह इखलास में पूर्ण तौहीद और हर तरह के शिर्क से नफ़ी है

सूरतुल इखलास का अनुवाद:

ऐ मोहम्मद! कह दो अल्लाह तआला एक है। अल्लाह तआला बेनियाज़ है, यानि सब उसके मोहताज हैं, वह किसी का मोहताज नहीं। ना उसकी कोई औलाद है और ना वह किसी की औलाद है और उसके जोड़ का कोई भी नहीं, यानि उस जैसा कोई भी नहीं है, क्योंकि वही खालिके हक़ीकी और माबूदे हक़ीकी है, बाक़ी कायनात का ज़र्रा ज़र्रा उसकी मखलूक है।

शाने नुज़ूल: इस सूरत के मक्की या मदनी होने में इख़्तिलाफ़ है। कुछ हदीसों में ज़िक्र है कि मुशरिकीने मक्का ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा अपने रब का नसब हमें बयान कीजिए। इस पर यह सूरत नाज़िल हुई। कुछ रिवायात में है कि यहूदियों के एक ग़िरोह ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि अपने रब के मुतअल्लिक बतायें कि वह रब कैसा है जिसने आपको भेजा है। इस पर यह सूरत नाज़िल हुई। गर्ज़ कि मुख़्तलफ़ मौक़ो पर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उस माबूद के मुताल्लिक सवाल किया जिसकी इबादत की तरफ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगो को दावत दे रहे थे। हर मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से उनके जवाब में यही सूरत सुनाई। अलबत्ता सबसे पहले यह सवाल मुशरिकीने मक्का ने

किया था और उनके जवाब में ही यह सूरत (सूरतुल इखलास) नाज़िल हुई थी।

शब्दों की तहकीक़ (अनुसंधान):

(कुल) इसके सबसे पहले मुखातब (संबोधित) तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं क्योंकि आप ही से सवाल किया गया था कि आप का रब कौन है और कैसा है? लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद हर मुसलमान इसका मुखातब है, यानि हर मुसलमान की यह ज़िम्मेदारी है कि वह अल्लाह तआला के एक होने को बयान करे। (हु अल्लाहु अहद) अल्लाह उस ज़ाते अक्दस का नाम है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा, जो एक है, उसका कोई शरीक नहीं, जिसने अपनी कुदरत से यह पूरी कायनात बनाई है और वही तन्हा इस पूरी कायनात के निज़ाम (प्रणाली) को चला रहा है।

(अल्लाहुस्समद) अल्लाह तआला की पहली सिफ़त बयान की गयी कि वह समद है। 'समद' शब्द का मफ़हूम उर्दू के किसी एक शब्द से अदा नहीं हो सकता। उसके मफ़हूम में दो बातें हैं कि सब उसके मोहताज हैं और वह किसी का मोहताज नहीं है। (लम यलिद वलम यूल्द) ना उसकी कोई औलाद है और ना वह किसी की औलाद है। यह उन लोगों का जवाब है जिन्होंने अल्लाह तआला के नसबनामे (वंशावली) का सवाल किया था कि अल्लाह रब्बुल इज़ज़त को मखलूक पर क़यास नहीं किया जा सकता है जो नस्ल (बच्चा होना) के जरिए वुजूद में आती है। कुछ इसमें उन लोगों का जवाब है जो फरिश्तों को अल्लाह तआला की बेटियाँ कहते थे या हज़रत ईसा या हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला का बेटा करार देते थे। (वलम युकुल्लहु कुफुवन अहद) कुफू के लफ़्ज़ी मायने मिस्ल

और मुमासिल (उसके जैसा) के हैं। यानि ना कोई उसका मिस्ल है और ना कोई उस जैसा है। बात दरअसल यह है कि हम मौत को आजतक अपनी अक्लों से नहीं समझ सके तो इस ज्ञाते अक्दस को अपनी अक्लों से कैसे समझ सकते हैं जो ज़िन्दगी और मौत का खालिक हो। उसके देखने, सुनने और हर तरह की खबर रखने को मखलूक के सुनने और देखने पर क़यास (अंदाज़ा) नहीं किया जा सकता। हमें अल्लाह की ज्ञात को समझने के लिए अल्लाह की मखलूक़ात में ग़ौर करना चाहिए, मसलन सूरज, चांद, सितारे, आसमान, ज़मीन, पानी, हवा, आग, धूप, दरख्त, पहाड़, जानवर, फल, सब्ज़ियां आदि कैसे वजूद में आ गये। खुद हमें अपने जिस्म पर भी ग़ौर करना चाहिए कि हमारे जिस्म का सारा निज़ाम कैसे चल रहा है। सिर्फ अंगूठे के निशान पर ग़ौर करें कि आज तक दो इन्सानों के अंगूठे का निशान एक जैसा नहीं हुआ।

तफ़सीर का सारांश: इस सूरत की इन चार मुख्तसर आयात में अल्लाह तआला की तौहीद को इन्तहाई जामे अन्दाज़ में बयान फ़रमाया गया है। पहली आयत (कुल हु अल्लाहु अहद) में उन लोगों का इंकार है जो एक से ज़्यादा बुतों (प्रतिमा) की पूजा करते हैं। दूसरी आयत (अल्लाहुस्समद) में उन लोगों का इंकार है जो अल्लाह तआला को मानने के बावजूद किसी और को अपना मुश्किल कुशा और हाजत रवा तसलीम करते हैं। तीसरी आयत (लम यलिद वलम यूल्द) में उन लोगों का इंकार है जो फरिश्तों को अल्लाह तआला की बेटियाँ कहते थे, या हज़रत ईसा या हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला का बेटा क़रार देते थे। और चौथी (वलम यकुल्लहु कुफ़ुवन अहद) में उन लोगों की तरदीद है जो अल्लाह तआला की

किसी भी सिफ़त में किसी और की बराबरी के कहने वाले हैं। इस तरह मुख्तसर सी सूरत ने शिर्क की तमाम सूरतों को बातिल करार देकर खालिस तौहीद साबित की है। इसीलिए इस सूरत को सूरतुल इखलास कहा जाता है।

सूरतुल इखलास में पूर्ण तौहीद और हर तरह के शिर्क से नफ़ी है:

इस सूरत में हर तरह के मुशरिकाना ख्यालात की नफ़ी करके पूर्ण तौहीद का सबक दिया गया है कि अल्लाह ही सारी कायनात का खालिक, मालिक और रज़्ज़ाक है। वही हकीक़ी बादशाह है, वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा। इसे ऊँघ भी नहीं आती है। वह ना कभी सोता है, ना खाता है और ना वह पीता है। उसका कोई शरीक नहीं है। अगर कायनात में दो रब होते तो दोनो का आपस में इख़्तिलाफ़ होने की वजह से दुनिया का निज़ाम कब का दरहम बरहम हो गया होता। वह इन्सान की शहरग (महाधमनी) से ज़्यादा करीब है। वह हर व्यक्ति के हर अमल से पूरी तरह वाकिफ़ है। वह कायनात के ज़र्रे ज़र्रे (कण-कण) का इल्म (ज्ञान) रखता है। ना वह किसी की औलाद है और ना कोई उसकी औलाद है, बल्कि सब उसकी मखलूक हैं। इन्सान, जिन, चरिंद, परिंद, दरिंद सब उसके मोहताज हैं, वह किसी का मोहताज नहीं है। वह सब के बग़ैर सब कुछ करने वाला है और पूरी कायनात मिलकर भी उसकी मर्ज़ी के बग़ैर कुछ नहीं कर सकती। ज़रूरत पूरी करने वाला, मुश्किल कुशा और मसाइल हल करने वाली जात सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की है। वही मर्ज़ और शिफा देने वाला है। वही इज्ज़त (मान) और ज़िल्लत (अपमान) देने वाला है। वही ज़िन्दगी और मौत देने वाला है। उसी ने ज़िन्दगी और

मौत को बनाया है ताकि वह आजमाये कि हम में से कौन अच्छे आमाल करने वाले हैं।

सूरतुल इखलास के कुछ फज़ाईल

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी

सूरतुल इखलास एक तिहाई कुरान के बराबर:

एक बार हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों से फ़रमाया कि सब जमा हो जाओ, मैं तुम्हें एक तिहाई कुरान सुनाऊंगा। जो जमा हो सकते थे जमा हो गये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये और कुल हु अल्लाहु अहद यानि सूरतुल इखलास की तिलावत फ़रमायी और इरशाद फ़रमाया कि यह सूरत एक तिहाई कुरान के बराबर है। (सही मुस्लिम)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रजि. ने एक दूसरे सहाबी (हज़रत कतादा रजि.) को देखा कि वह सूरह कुल हु अल्लाहु अहद बार बार दोहरा रहे हैं। सुबह हुई तो हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रजि. रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने उसका ज़िक्र किया क्योंकि वह उसे मामूली अमल समझते थे (कि एक छोटी सी सूरत को बार बार दोहराया जाये)। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्जे में मेरी जान है। यह सूरत कुरान करीम के एक तिहाई के बराबर है। (सही बुखारी)

हदीसों में सूरतुल इखलास को एक तिहाई कुरान के बराबर क़रार दिया है, जिसकी मुफ़स्सरीन ने विभिन्न तफ़सीरें बयान फ़रमायी हैं

१) कुरान करीम ने बुनियादी तौर पर तीन अक़ीदों पर ज़ोर दिया है: तौहीद, रिसालत और आख़िरत। इस सूरत में इन तीन अक़ीदों में से

तौहीद के अक़ीदे की पूर्ण वज़ाहत फ़रमायी गयी है। इसलिए इस सू़रत को एक तिहाई क़ुरान कहा गया है।

२) क़ुरान करीम में तीन उमूर ख़ासतौर पर ज़िक्र किये गये हैं। अल्लाह की सिफ़ात, अहक़ामे शरिया और अंबियाए किराम और पहली उम्मतों के किस्से। इस सू़रत में अल्लाह की विशेषताओं को इजमाली तौर पर ज़िक्र किया गया है, यानि इस सू़रत में तीन चीज़ों में से एक चीज़ का मुकम्मल तौर पर इजमाली ज़िक्र आ गया है, इसलिए इस सू़रत को एक तिहाई क़ुरान कहा गया है।

३) क़ुरान करीम के मायने और मफ़हूम तीन उलूम पर मुश्तमिल हैं। इल्मुत्तौहीद, इल्मुशशराए, इल्मुलअखलाक़ और तज़किया-ए-नफ़्स, इस सू़रत में इल्मुत्तौहीद से मुतअल्लिक बयान किया गया है, इस वजह से सू़रतुल इखलास को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक तिहाई क़ुरान के बराबर क़रार दिया है।

सू़रतुल इखलास की बहुत ज़ियादा तिलावत करने वाला अल्लाह का अज़ीज:

हज़रत आइशा रजिअल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक साहब को एक महत्वपूर्ण काम पर रवाना किया। वह साहब अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाते थे। और नमाज़ में ख़त्म कुल हु अल्लाहु अहद पर करते थे। जब लोग वापस आये तो उसका ज़िक्र हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किया। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनसे पूछो कि वह यह अमल क्यों इख़्तियार किये हुए थे। चुनांचा लोगों ने पूछा तो उन्होंने कहा कि वह ऐसा इसलिए करते थे कि यह

सिफ़त अल्लाह की ही और मैं उसे पढ़ना अज़ीज रखता हूँ। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि उन्हें बता दो कि अल्लाह भी उन्हें अज़ीज रखता है। (सही बुखारी)

सूरतुल इख़लास से सच्ची मोहब्बत करने वाला जन्नत में जायेगा:

हज़रत अनस बिन मालिक रजि. फ़रमाते हैं कि एक अन्सारी सहाबी मस्जिदे कुबा में हम लोगों की इमामत करते थे। उनकी आदत थी कि जब भी नमाज़ में सूरह फ़ातिहा के बाद कोई सूरत पढ़ने लगते तो पहले सूरतुल इख़लास पढ़ते फिर कोई दूसरी सूरत पढ़ते और हर रकअत में इसी तरह करते थे। उनके साथियों ने उनसे कहा कि क्या आप सूरतुल इख़लास पढ़ने के बाद यह सोचते हैं कि यह काफी नहीं जो दूसरी सूरत भी पढ़ते हैं। या तो आप यह सूरत पढ़ लिया करें या फिर कोई और सूरत। उन्होंने फ़रमाया मैं उसे (सूरतुल इख़लास की तिलावत) हरगिज़ नहीं छोड़ूंगा। अगर तुम लोग चाहते हो कि मैं तुम्हारी इमामत करूँ तो ठीक है वरना मैं (इमामत) छोड़ देता हूँ। वह लोग उन्हें अपने में सबसे अफ़जल समझते थे, इसलिए किसी और की इमामत पसंद नहीं करते थे। चुनांचा जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये तो उन्होंने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह किस्सा बयान किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा तुम्हें अपने साथियों की प्रस्ताव पर अमल करने से कौनसी चीज़ रोकती है? और क्या वजह है कि तुम हर रकअत में यह सूरत पढ़ते हो? उन्होंने ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैं इस सूरत से मोहब्बत करता हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने फ़रमाया: तुम्हें इस सूरात की मोहब्बत यकीनन (अवश्य) जन्नत में दाखिल करेगी। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी को सूरातुल इख़लास पढ़ते हुए सुना। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: वाजिब हो गयी। मैंने पूछा क्या वाजिब हो गयी? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जन्नत। (तिर्मिज़ी) यानि जिसने इस सूरात में ज़िक्र की गयीं बातों पर अमल कर लिया तो वह इन्शाअल्लाह जन्नत में दाखिल हो गया।

मुअव्वज़तैन (कुरान की अंतिम दो सूरात) की तरह सूरातुल इख़लास की तिलावत दुनियावी आफ़ात से हिफ़ाजत का ज़रिया:

हज़रत आइशा रज़िअल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर रात जब बिस्तर पर आराम के लिये लेटते तो अपनी दोनो हथेलियों को एक साथ करके “कुल हु अल्लाहु अहद”, “कुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़” और “कुल अऊज़ु बिरबिलन्नास” पढ़ कर उन पर फूंकते थे और फिर दोनो हथेलियों को जहां तक मुमकिन होता अपने जिस्म पर फेरते थे। सर, चेहरा और जिस्म के आगे के हिस्से से शुरू करते। यह अमल आप तीन बार करते थे। (बुखारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन खुबैब रज़ि. से रिवायत है कि एक रात मैं बारिश और सख़्त अंधेरा था। हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम को तलाश करने के लिए निकले, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पा लिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कहो। मैंने अर्ज किया कि क्या कहूं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कुल हु अल्लाहु अहद और मुअव्वज़तैन तीन बार पढ़ो, जब सुबह और शाम हो तीन बार, यह पढ़ना तुम्हारे लिए हर कष्ट का समाधान होगा। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसई)

सारांश:

जैसा कि कुरान और हदीस की रोशनी में ज़िक्र किया गया कि सूरतुल इख़लास कुरान करीम की एक महान सूरत है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस सूरत को एक तिहाई कुरान के बराबर करार दिया है जिसकी मुख़्तलफ़ तौजीह बयान की गयी हैं। इस मुख़्तसर सी सूरत से मोहब्बत करने वालों और इसको एहतमाम से पढ़ने वालों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जन्नत की बशारत सुनाई है। मुअव्वज़तैन (सूरतुल फ़लक और सुरतुन्नास) के साथ सूरतुल इख़लास पढ़कर अपने ऊपर दम करने से कई आफ़ात से हिफ़ाजत (सुरक्षा) मुमकिन है। इस सूरत में अल्लाह तआला की कई सिफ़ात बयान की गयी हैं, उन पर ग़ौर करें। अल्लाह की वैहदानियत का इक़रार करते हुए अल्लाह की सिफ़ात पर ईमान लायें और उसकी ज़ात और सिफ़ात में किसी को शरीक ना ठहरायें। नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज आदि तमाम बदनी और माली इबादात में सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात की रज़ा मतलूब हो।

सूरह अल फ़लक़

سورة الفلق

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ (۱) مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ (۲) وَمِنْ شَرِّ
غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ (۳) وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ (۴)
وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ (۵)

सूरह अन्नास

سورة الناس

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ (۱) مَلِكِ النَّاسِ (۲) إِلَهِ النَّاسِ (۳)
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ (۴) الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ
النَّاسِ (۵) مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ (۶)

सूरह 'अलफलक़' और सूरह 'अन्नास' की संक्षिप्त तफ़सीर सूरह अल फ़लक़ और सूरह अन्नास के ज़रिए जादू और दूसरी आफ़ात (मुसीबतों) से हिफाज़त (सुरक्षा)

सूरह अलफलक़ का अनुवाद: (ऐ नबी!) कहो कि मैं सुबह के मालिक (अल्लाह) की पनाह माँगता हूँ हर उस चीज़ के शर (बुराई) से जो उसने पैदा की है और अँधेरी रात के शर (बुराई) से जब वह फैल जाए और उन जानों के शर (बुराई) से जो (गंडे की) गिरहों पर फूँक मारती हैं और हसद (इर्ष्या) करने वाले के शर (बुराई) से जब वह हसद करे।

सूरह अन्नास का अनुवाद: (ऐ नबी!) कहो कि मैं पनाह माँगता हूँ सब लोगों के परवरदिगार की, सब लोगों के बादशाह की, सब लोगों के माबूद की, उस वसवसे डालने वाले के शर (बुराई) से जो बार बार पलट कर आता है। जो लोगों के दिलों में वसवसे डालता है, चाहे वह जिन्नात में से हों या इंसानों में से।

कुरआन करीम की ये आखिरी दो सूरतें मुअव्वज़तैन कहलाती हैं। इन दोनों सूरतों के मक्की या मदनी होने में मुफ़स्सरीन का इख़्तिलाफ़ है, लेकिन अधिकतर मुफ़स्सरीन की राय है कि ये दोनों सूरतें मदनी हैं और ये दोनों सूरतें उस समय नाज़िल हुईं जब एक यहूदी “लबीद बिन आसम” ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू करने की कोशिश की थी और उसके कुछ असरात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ज़ाहिर भी हुए थे। हदीसों से साबित है कि इन

सूरतों की तिलावत और उनसे दम करना जादू के असरात (प्रभाव) दूर करने और दूसरी दुनियावी आफ़ात से बचने के लिए बेहतरीन अमल है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन दोनों सूरतों की तिलावत करके अपने मुबारक हाथों पर दम करते और फिर उन हाथों को पूरे जिस्म पर फेर लेते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबाए किराम को भी इन सूरतों को मुखतलिफ़ समय में पढ़ने की तालीम देते थे। गरज़ कि इन दोनों सूरतों को जादू, नज़रे बद और जिस्मानी और रूहानी आफ़तों के दूर करने में बड़ी तासीर (प्रभाव) है और हर व्यक्ति इनके फ़ायदे और बरकात को प्राप्त करने का मोहताज है।

शब्दों की तहकीक़ (अनुसंधान):

(कुल) “कहो” – इस इरशाद के सब से पहले मुखातब तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, मगर क़यामत तक आने वाले तमाम इन्सान और जिन्न भी इसके मुखातब हैं।

(अऊज़ु) “मैं पनाह मांगता हूँ” – पनाह मांगने से मुराद किसी चीज़ से डर महसूस करके अपने आपको उससे बचाने के लिए किसी दूसरे की हिफ़ाज़त में जाना। मोमिन ऐसी तमाम आफ़तों जिनको दूर करने पर वह खुद अपने आपको क़ादिर नहीं समझता सिर्फ़ अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करता है और उसी की पनाह मांगता है।

(फलक़) के लफ़्ज़ी माना फटने के हैं, यहाँ सुबह का निकलना मुराद है। (रब्बिलफलक़) से अल्लाह मुराद हैं।

(मिन शरि मा खलक़) में सारी मखलूक़ दाख़िल है, यानी मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ सारी मखलूक़ के शर से। यहाँ तीन चीज़ों के शर

से खास तौर से पनाह मांगी गई है। (मिन शरि ग़ासिकिन इज़ा वक़ब, वमिन शरिन नफ़्फ़ासाति फ़िल उक़द) और (वमिन शरि हासिदिन इज़ा हसद) और अँधेरी रात के शर से जब वह फैल जाए और उन जानों के शर से जो (गंडे की) गिरहों में फूँक मारती हैं और हसद (इर्ष्या) करने वाले के शर से जब वह हसद करे। अँधेरी रात के शर से खास तौर से इसलिए पनाह मांगी गई है कि आम तौर पर जादूगरों की कार्रवाइयाँ रात के अँधेरो में हुआ करती हैं।

(नफ़्फ़ासात) में मर्द और औरत दोनों दाखिल हैं, जादूगर मर्द हो या औरत धागे के गंडे बना कर उसमें गाँठ लगाते जाते हैं और उन पर कुछ पढ़ पढ़ कर फूँकते रहते हैं, उनके शर से पनाह मांगी गई है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू रात में किया गया था, गिरहें बांध कर किया गया था और आपसे हसद की बुनियाद पर किया गया था, इसलिए इन तीन चीज़ों से खासतौर पर पनाह मांगी गई। (हसद) के मायने हैं किसी की नेमत और राहत को देख कर जलना और ये चाहना कि उससे ये नेमत ख़त्म हो जाए चाहे उसको भी प्राप्त न हो। हसद हराम और गुनाहे कबीरा है। सूरह अल फलक में अल्लाह की एक सिफ़त रब्बुल फलक ज़िक्र करके तीन चीज़ों से पनाह मांगी गई थी। सूरह अन्नास में अल्लाह तआला की तीन सिफ़ात (रब्बिन्नास, मलिकिन्नास) और (इलाहिन्नास) ज़िक्र करके एक चीज़ से पनाह मांगी गई है और वह है शैतान के वसवसे डालने से। (वस्वासिल खन्नास) वसवास के मायने बार बार वसवसा डालने के हैं और खन्नास के मायने ज़ाहिर होने के बाद छुपने या आने के बाद पीछे हट जाने के हैं। यानी वह बार बार वसवसा डालने की

कोशिश करता है, एक बार नाकामी पर दोबारा, तिबारा और बार बार आता रहता है।

क्या शैतान कोई अलग मखलूक है?

इंसान, जिन्नात और फरिश्तों की तरह शैतान कोई अलग मखलूक नहीं है बल्कि शैतान इंसानों और जिन्नात में से अल्लाह के नाफरमान बन्दे होते हैं जो गुमराह होने के साथ दूसरों को भी गुमराह करते हैं। शैतानों का सरदार “इबलीस” जिन्न में से है जैसा कि फ़रमाने इलाही है: “इल्ला इबलीसा काना मिनल जिन्न” (सूरह अलकहफ: ५०) अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: “और (जिस तरह ये लोग हमारे नबी से दुश्मनी कर रहे हैं) इसी तरह हमने हर (पिछले) नबी के लिए कोई न कोई दुश्मन पैदा किया था, यानी इंसानों और जिन्नात में से शैतान किस्म के लोग, जो धोखा देने की खातिर एक दूसरे को बड़ी चिकनी चुपड़ी बातें सिखाते रहते थे और अगर अल्लाह तआला चाहता तो वह ऐसा न कर सकते। इसलिए उन्हें छोड़ दें (उस के साथ) जो वह झूट घडते हैं ।” (सूरह अल अनआम: ११२) शैतान जो जिन्नात में से होते हैं वह नज़र नहीं आते और दिलों में वसवसे डालते हैं, लेकिन इंसानों में से जो शैतान होते हैं वह नज़र आते हैं और उनकी बातें ऐसी होती हैं कि इन्हें सुन कर इंसान के दिल में तरह तरह के ख़्यालात और वसवसे आ जाते हैं, इसलिए इस सूरत में दोनों किस्म के वसवसा डालने वालों से पनाह मांगी गई है।

इन आयात में अगरचे शैतान के वसवसा डालने का ज़िक्र आया है, लेकिन अल्लाह तआला की पनाह की तालीम देकर ये स्पष्ट बता

दिया गया है कि अल्लाह तआला की पनाह मांगने और उसका ज़िक्र करने से पीछे हट जाता है। तथा **सूरह अन्निसा ७६** में फ़रमाया गया है कि उसकी चालें कमज़ोर हैं और उसमें इतनी शक्ति नहीं है कि वह इंसान को गुनाह पर मजबूर कर सके। **सूरह इब्राहीम २२** में खुद इसका ये एतराफ़ अल्लाह तआला ने नक़ल फ़रमाया है कि मझे इंसानों पर कोई इक्वितदार (सत्ता) प्राप्त नहीं। ये तो इंसान की एक आज़माइश है कि वह इंसान को बहकाने की कोशिश करता है, लेकिन जो बन्दा उसके बहकाने में आने से इंकार करे, अल्लाह तआला की पनाह मांग ले तो शैतान उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

क्या जादू बरहक (सत्य) है?

कुरआन और हदीस की रौशनी में पूरी उम्मत मुस्लिमा मुत्तफ़िक़ है कि जादू सत्य है। तक़रीबन २५ बार कुरआन करीम में जादू का ज़िक्र आया है। **सूरह अलबक़रह आयत १०२** की रौशनी में उलमाए किराम ने फ़रमाया है कि जादू करना या करवाना हराम है, बल्कि कुछ उल्मा ने कहा है कि जादू करने वाला और करवाने वाला इस्लाम से ही निकल जाता है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जो व्यक्ति जादू करे या जादू करवाए और जो व्यक्ति किसी आमिल के पास जाए और उसकी बातों की तस्दीक़ (पुष्टि) करे तो गोया उसने उस चीज़ के साथ कुफ़र किया जो मुझ पर नाज़िल की गई है। (**मुसनद बज़ज़ार, मुअजम कबीर मज्मउज़्ज़वाइद**) इसी तरह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: सात हलाक करने वाली चीज़ों से बचो। अल्लाह

के साथ शिर्क करना, जादू करना, किसी को नाहक क़त्ल करना, सूद खाना, यतीम का माल नाहक हड़प करना, मैदाने जंग से भागना, मासूम नेक औरतों पर बुराई की तोहमत लगाना। (सही बुखारी, सही मुस्लिम) किसी भी सहाबी या ताबई ने जादू से इंकार नहीं किया और ये जादू उनके दौर में बल्कि उसे भी बहुत पहले से मौजूद है। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दौर में जादू का ज़िक्र तो वज़ाहत के साथ कुरआन मजीद में आया है। गरज़ कि जादू बरहक़ है लेकिन जादू करना या करवाना हराम और इंसान को हलाक करने वाला गुनाहे कबीरा है। कुछ उल्मा की राय में जादू करना या जादू करवाना कुफ़र है। इस ज़माने में कुछ लोगो ने अपनी अपनी दुकाने खोल रखी है, इसमें से ९९ प्रतिशत लोग ढोंगी होते हैं, न वह जादू करना जानते हैं और न ही उनको जादू का तोड़ मालूम होता है, ये लोग अवाम ख़ास कर महिलाओं को बेवकूफ़ बना कर पैसे ठगते हैं।

क्या नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू हुआ था?

कई सही हदीसों यहाँ तक कि हदीस की सबसे मशहूर किताब (सही बुखारी) में आयी हदीस की बुनियाद पर मुफ़स्सरीन, मुहद्दिसीन और उल्माए किराम ने लिखा है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू करवाया गया था और उसके कुछ असरात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ज़ाहिर भी हुए थे। लबीद बिन आसम एक यहूदी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कंधी प्राप्त करके उसमें ग्यारह गिरहें लगा कर उसको एक (सूखे) कुँए में पत्थर के नीचे दबा दिया था। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पूरे वाक्ये की खबर दी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस कंधी को प्राप्त किया। अल्लाह तआला ने ये दोनों सूरतें नाज़िल फ़रमाईं जिनमें ग्यारह आयत हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर गाँठ पर एक आयत पढ़ कर एक एक गाँठ खोलते रहे, यहाँ तक कि सब गिरहें खुल गईं और आपसे अचानक एक बोझ सा उतर गया।

कुछ हज़रात ने ये कह कर कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू का असर होना नुबुव्वत के पद के विरुद्ध है, तमाम सही हदीसों का इंकार करके कह दिया कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कोई जादू नहीं हुआ था। लेकिन उनके इस मौक़िफ़ की वजह से सही हदीसों का इंकार करना लाज़िम आएगा जो किसी भी हाल में काबिले कुबूल नहीं है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हुए जादू के असरात सिर्फ़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात तक सीमित रहे यहाँ तक कि सहाबाए किराम को ये मालूम तक न हो सका कि आप पर क्या गुज़र रही है। रही आपके नबी होने की हैसियत से तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फराइज़ के अन्दर कोई खलल वाके न होने पाया। किसी एक रिवायत में ये भी नहीं मिलता कि उस ज़माने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुरआन की कोई आयत भूल गए हों या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नमाज़ छूट गई हो या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से कोई गलत बात निकली हो। गरज़ कि जादू का असर भी प्राकृतिक कारणों का असर होता है, कुछ प्राकृतिक कारणों से बुखार आ जाना या मुखतलिफ़ किस्म के दर्द और बिमारियों का पैदा हो जाना एक तबई

(प्राकृतिक) चीज़ है जिससे पैगम्बर और अम्बिया अलग नहीं होते, इसी तरह जादू का असर भी इसी किस्म से है।

क्या दोनों सूरतों से दुनियावी और उखरवी आफ़ात (परेशानियों) से हिफ़ाज़त (सुरक्षा) मुमकिन है?

हमारा ये ईमान है कि अल्लाह तआला की मरज़ी के बग़ैर कोई भी चीज़ हमें नफ़ा नक़सान नहीं पहुँचा सकती है। हदीसों में इन दोनों सूरतों के बहुत से फ़ज़ाएल और बरकात ज़िक्र हैं, यानी अल्लाह के हुक्म से इन सूरतों की तिलावत से बहुत सी दुनियावी और उखरवी आफ़ातों से हिफ़ाज़त हो सकती है, यहाँ तक कि जादू से भी हमारी हिफ़ाज़त मुमकिन है।

हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: तुम्हें कुछ ख़बर भी है कि आज की रात अल्लाह तआला ने मुझ पर ऐसी आयात नाज़िल फ़रमाई है कि उनकी मिसाल नहीं देखी यानी “कुल अऊज़ु बिरब्बिल फलक” और “कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास” (सही मुस्लिम)

हज़रत आएशा रज़ि० अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब कोई बीमारी पेश आती तो ये दोनों सूरतें पढ़कर अपने ऊपर दम करते। फिर जब मरज़ुल वफ़ात (आखिरी बीमारी) में आपकी तकलीफ़ बढ़ गई तो मैं ये सूरतें पढ़कर आपके हाथों से आपके जिस्म मुबारक पर फेरती थी, बरकत की उम्मीद से। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)

हज़रत आएशा रज़ि० अल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर रात जब बिस्तर पर आराम के लिए लेटते तो अपनी दोनों हथेलियों को एक साथ करके “कुल हुवल्लाहु अहद”, “कुल अऊजु बिरब्बिल फलक़” और “कुल अऊजु बिरब्बिन्नास” पढ़कर इन पर फूँकते थे और फिर दोनों हथेलियों को जहाँ तक मुमकिन होता अपने जिस्म पर फेरते थे। सर, चेहरा और जिस्म के आगे के हिस्से से शुरू करते। ये अमल आप तीन बार करते थे।
(बाबु फ़ज़लिल मुअव्वज़ात)

हज़रत अब्दुल्लह बिन ख़ुबैब रज़ि० से रिवायत है कि एक रात में बारिश और सख्त अँधेरा था, हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तलाश करने के लिए निकले, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पा लिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कहो, मैंने अर्ज़ किया क्या कहूँ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया “कुल हुवल्लाहु अहद” और मुअव्वज़तैन पढ़ो जब सुबह और शाम हो, तीन बार ये पढ़ना तुम्हारे लिए हर तकलीफ़ से अमान होगा। (अबू दाउद, तिर्मिज़ी, नसई)

हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें हुक़म किया कि हर नमाज़ के बाद मुअव्वज़ात पढ़ा करो, यानी “कुल अऊजु बिरब्बिल फलक़” और “कुल अऊजु बिरब्बिन्नास”। (सही मुस्लिम) कुछ हदीसों से मालूम होता है कि सूरह इख़लास भी मुअव्वज़ात में शामिल है।

खुलासाए कलाम ये है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबए किराम का इन दोनों सूरतों को सोते समय, सुबह और शाम और हर नमाज़ के बाद पढ़ने का मामूल था। हमें भी इसका एहतमाम करना चाहिए, अल्लाह तआला के हुक्म से जादू और बहुत सी आफ़ात से हिफ़ाज़त होगी। तथा हमें हमेशा शैतानी ताक़तों से मुकाबला करके अल्लाह की इबादत में आगे बढ़ना चाहिए। अल्लाह तआला की जानिब से जो फ़राएज़ हम पर लाज़िम किए गए हैं उन पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ अमल करना चाहिए। अगर शैतानी ताक़तें हमारे दिला और दिमाग में इस्लामी तालीमात के ख़िलाफ़ वसवसे डालें तो उल्माए किराम से कुरआन और हदीस की रौशनी में रुजू फ़रमाएँ। बेशुमार दुनियावी उमूर में भी बात समझ में आए या न आए हम हथियार डाल देते हैं। मसलन एक ख़ूबसूरत सेहतमंद नौजवान जिसने पूरी ज़िन्दगी किसी को तकलीफ़ भी नहीं दी और बेशुमार ख़ूबियों का मालिक भी है, मगर चलते चलते ठोकर खाकर मर जाए तो पूरी दुनिया बावजूद कि उसके साथ हमदर्दी रखती है अल्लाह तआला के फ़ैसले के सामने सर झुका देती है। इस्लाम की तो बुनियाद ही ख़ालिके कायनात के सामने अपने आपको झुकाने पर है, इसलिए अगर शैतानी ताक़तें अल्लाह की इबादत से हटाने की कोशिश करें तो अल्लाह की पनाह (शरण) लें, उसका ज़िक़्र करें और उसके अहकाम पर अमल करें। इसी में मेरी, आपकी और पूरी इंसानियत की कामयाबी है।

तीन ज़बानों में हज व उमरह से मुतअल्लिक दुनिया का पहला मोबाइल ऐप
Word's First Hajj & Umrah Mobile Application in 3 Languages



www.najeebqasmi.com

तीन ज़बानों में दुनिया का पहला इस्लामी मोबाइल ऐप
Word's First Islamic Mobile Application in 3 Languages



ISBN: 9780995788506